अर्थशास्त्र के मूलतत्व भाग एक
जीईईसी – 01

(Fundamentals of Economics Part One)
GEEC – 01

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
तीनपानी बाई पास रोड, ट्रान्सपोर्ट नगर के पास, हल्द्वानी - 263139
फोन नं. 05946 - 261122, 261123 (अर्थशास्त्र विभाग 05946-286041)
फैक्स नम्बर - 05946-264232,
ई-मेल info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

अध्ययन मण्डल

अध्यक्ष
कुलपति
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल

संयोजक
निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल

अध्ययन मण्डल के सदस्यों के नाम

प्रोफेसर बिक्रम केशरी पटनायक, (सदस्य), निदेशक, विस्तार एवं विकास अध्ययन विद्याशाखा, इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रोफेसर एम. सी. सती, (सदस्य), प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर, गढ़वाल

प्रोफेसर आर. पी. ममगाई, (सदस्य), प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, दून विश्वविद्यालय, देहरादून

डॉ. शालिनी चौधरी, (सदस्य), सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

डॉ. नमिता वर्मा, (मनोनीत सदस्य), सहायक प्राध्यापक (ए.सी.), अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. शालिनी चौधरी
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई लेखन

इकाई लेखक	इकाई संख्या
डॉ. शालिनी चौधरी (schaudhary@ uou.ac.in) सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वणविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	**1,2,3,4,5,6**
अमित जोशी (amitj@uou.ac.in) सहायक प्राध्यापक (ए.सी.), अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्तव विश्व विद्यालय, हल्द्वानी	**7**
सुश्री दीक्षा कुमारी (dkumari@uou.ac.in) सहायक प्राध्यापक (ए.सी.), अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्तव विश्व विद्यालय, हल्द्वानी	**8**

सम्पादन

डॉ. शालिनी चौधरी
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

आई.एस.बी.एन. :

प्रतिलिप्याधिकार (कॉपीराइट) : **उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय**

प्रकाशन वर्ष : **2023**

Published By : **उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल – 263139**

Printed at : **प्रतियाँ:**

सर्वाधिकार सुरक्षित। □स प्रकाशन का कोई भी अंश उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन स□पुनः प्रस्तुत करन□की अनुमति नहीं है।

अर्थशास्त्र के मूलतत्व भाग एक — जीईईसी – 01

Fundamentals of Economics Part One — GEEC – 01

विषय-सूची

इकाई का नाम Name of the Unit	पृष्ठ संख्या 1-99
इकाई- 1 अर्थशास्त्र की धन, कल्याण एवं दुर्लभता संबंधित परिभाषाएँ (Wealth, Welfare and Scarcity related definitions of Economics)	1-10
इकाई- 2 अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ: आवश्यकता-विहीनता, विकास केन्द्रित एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र (Definitions of Economics: Wantlessness, Growth Centered and Kautilya Arthshastra)	11-21
इकाई- 3 अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Economics)	22-36
इकाई- 4 अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंध (Relation of Economics with other Disciplines)	37-48
इकाई- 5 अर्थशास्त्र के अध्ययन की विधियाँ (Methods of the Study of Economics)	49-60
इकाई- 6 अर्थशास्त्र की मूल समस्या (Basic Problem of Economics)	61-74
इकाई- 7 अर्थशास्त्र की संकल्पना: उपभोग, उपभोक्ता की सार्वभौमिकता एवं जीवन-स्तर (Concepts of Economics: Consumption, Consumer's Sovereignty and Standard of Living)	75-85
इकाई- 8 अर्थशास्त्र की संकल्पना: आवश्यकता एवं बाज़ार (Concepts of Economics: Wants and Market)	86-99

इकाई- 1 अर्थशास्त्र की धन, कल्याण एवं दुर्लभता संबंधित परिभाषाएँ
(Wealth, Welfare and Scarcity related definitions of Economics)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)
1.2 उद्देश्य (Objectives)
1.3 अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषाएं (Wealth related definitions of Economics)
1.4 अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषाएं (Welfare related definitions of Economics)
1.5 अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषाएं (Scarcity related definitions of Economics)
1.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)
1.7 सारांश (Summary)
1.8 शब्दावली (Glossary)
1.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)
1.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)
1.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)
1.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

अंग्रेजी भाषा के शब्द इकोनोमिक्स (Economics) की उत्पत्ति लैटिन शब्द Economica या ग्रीक शब्द oikonomia से हुई है जिसका अर्थ होता है- गृह प्रबंधन। हिंदी भाषा का शब्द 'अर्थशास्त्र' दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थ + शास्त्र, जिसका शाब्दिक अर्थ धन का शास्त्र है। सर्वप्रथम एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र का क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक विधि से अध्ययन कर इसको एक अलग विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया और इसी कारण एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक कहा जाता है। उसके उपरांत बहुत से अर्थशास्त्री जैसे मार्शल, प्रो.रॉबिन्स आदि ने इसे और विस्तार देने का कार्य किया।

अर्थशास्त्र को समझने से पूर्व हमें उसकी परिभाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। विभिन्न विद्वानों द्वारा अर्थशास्त्र की अलग अलग परिभाषाएँ दी गई है जिनको हम विस्तारपूर्वक इस अध्याय में जानेंगे। इस इकाई में अंतर्गत आप अर्थशास्त्र की धन, कल्याण तथा दुर्लभता केन्द्रित परिभाषाओं से अवगत होंगे साथ ही इन परिभाषाओं की विशेषताओं तथा आलोचनाओं को भी समझ सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप अर्थशास्त्र की धन, कल्याण तथा दुर्लभता केन्द्रित परिभाषाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे। इसके दूसरे अध्याय में आप अर्थशास्त्र की आवश्यकता विहीनता एवं विकास केन्द्रित परिभाषा तथा कौटिल्य अर्थशास्त्र की अवधारणा से अवगत होंगे।

1.2. उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप सब-

- ✓ अर्थशास्त्र की धन केन्द्रित परिभाषा से अवगत होंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की धन केन्द्रित परिभाषा की विशेषताएँ को समझ सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की धन केन्द्रित परिभाषाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषा से अवगत होंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषा की विशेषताएं को समझ सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे ।
- ✓ अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा से अवगत होंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा की विशेषताएँ समझ सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे ।
- ✓ अर्थशास्त्र की धन केन्द्रित, कल्याण संबंधी एवं दुर्लभता संबंधी परिभाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

1.3 अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषाएं (Wealth related definitions of Economics)

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को धन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। **एडम स्मिथ** (Adam Smith) ने सबसे पहले अर्थशास्त्र को एक अलग विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया और इसी कारण **एडम स्मिथ** को अर्थशास्त्र का जनक/पिता/जन्मदाता कहा जाता है।

एडम स्मिथ (Adam Smith) ने सन् 1776 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ***'An enquiry into the nature and causes of wealth of nations'*** में अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा। यहाँ धन के अंतर्गत केवल मूल्यवान भौतिक पदार्थों (सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात, रुपया एवं पैसा) को ही शामिल किया गया हैं।

एडम स्मिथ (Adam Smith) ने अपनी पुस्तक में अर्थशास्त्र को वह अध्ययन बतलाया जो ***"राज्य-अर्थशास्त्र राष्ट्रों के धन के स्वरुप तथा उसके कारणों की जाँच करने वाला शास्त्र है। (Political Economy is a study of the nature and causes of wealth of nations.)"*** इस पुस्तक के प्रकाशन के साथ

अर्थशास्त्र का एक विज्ञान के रूप में जन्म हुआ था। लगभग एक शताब्दी तक इस नए विज्ञान को राजनैतिक अर्थव्यवस्था के नाम से संबोधित किया गया। इसके उपरान्त से अर्थशास्त्र का नाम दिया गया।

एडम स्मिथ के अनुयायी फ्रांसीसी लेखक **जे. बी. से (J.B. Say)** के अनुसार, ***"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो धन सम्बन्धी नियमों का अध्ययन करता है। (Economics is the science which treats of wealth.)"***

नासो विलियम सीनियर (Nassau William Senior) ने अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा है ***"राजनीतिक अर्थशास्त्री का अध्ययन विषय सुख नहीं वरन् धन है। (The subject treated by the Political Economist is not happiness but wealth.)"***

अमेरिकी अर्थशास्त्री **एफ. ए. वाकर (F. A. Walker) के** अनुसार, ***"राजनीतिक अर्थशास्त्र अथवा अर्थशास्त्र ज्ञान के उस भाग का नाम है जिसका सम्बन्ध धन से है। (Political Economy is that name of the knowledge which relates to wealth.)"***

जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill) के अनुसार, ***"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो उन सामाजिक घटनाओं के नियमों का अध्ययन करता है जो मनुष्य जाति द्वारा धन उत्पादन तथा वितरण करने से सम्बन्धित होती हैं, तथा जो किसी अन्य उद्देश्य से प्रभावित नहीं होती हैं।"***

महान भारतीय विद्वान कौटिल्य (Kautilya) का भी कहना था कि ***"धर्म, सदाचार और आनन्द केवल धन से ही प्राप्त होता हैं।"***

अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषा की विशेषताएं (Characteristics of Wealth related definitions of Economics)

1. अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु धन है, जिसमें इसके उत्पादन एवं उपभोग का अध्ययन किया जाता है।
2. धन के अन्तर्गत केवल उन्हीं भौतिक वस्तुओं को शामिल किया जाता है जो सीमित एवं उपयोगी हैं।
3. धन में वृद्धि लाने के लिए भौतिक वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि लाना आवश्यक है।
4. मनुष्य हर काम के लिए धन को कसौटी मानता है।

अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषा की आलोचनाएं (Criticisms of Wealth related definitions of Economics)

अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषा की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की जाती हैं

1. इसमें धन पर अत्यधिक बल दिया गया है तथा मनुष्य (जो अर्थशास्त्र का मुख्य विषय है) एवं उसके कल्याण को गौण स्थान दिया गया है।
2. इस परिभाषा का अन्य दोष यह है कि इसमें धन की परिभाषा में केवल भौतिक पदार्थों को शामिल किया गया है। सेवाओं (अर्थात् अभौतिक वस्तुओं) को अर्थशास्त्र के अध्ययन से बाहर रखा गया है।
3. इस परिभाषा में एक ऐसे आर्थिक व्यक्ति की कल्पना की गई है जो व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर ही कार्य करता है और सामाजिक कल्याण में इसकी कोई रुचि नहीं हैं। ऐसी कल्पना करना उचित नहीं।
4. यह परिभाषा धन के संचय (अथवा धन-वृद्धि) को महत्त्व देती है और उसके वितरण की उपेक्षा करती हैं।
5. इस परिभाषा के अनुसार धन को साध्य (End) माना गया है। यह धन कमाने के साधनों की औचित्यता के बारे में कुछ नहीं बतलाती।
6. यह परिभाषा अवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें धन का अर्थ पूर्णत: स्पष्ट नहीं है। अत: धन संबंधी परिभाषा अवैज्ञानिक है।

उपर्युक्त दोषों के कारण 19वीं शताब्दी के अन्त में इन परिभाषाओं को त्याग दिया गया।

1.4 अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषाएं (Welfare related definitions of Economics)

अर्थशास्त्र को उपरोक्त आलोचना से बचाने हेतु 19वीं सदी के अंत में नव प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री **प्रो. अल्फ्रेड मार्शल (Prof. Alfred Marshall)** ने सन 1890 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'Principles of Economics'** में अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषा इस प्रकार दी- ***"अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जाँच करता हैं जिसका कल्याण के लिए आवश्यक भौतिक साधनों की प्राप्ति और उनके उपयोग से निकटतम सम्बन्ध है।(Economics is the study of mankind in the ordinary business of life; it examines that part of individual and social action which is most closely connected with the attainment and with the use of material requisites of well-being.)"***

पीगू (Pigou) के अनुसार, ***"अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु आर्थिक कल्याण है। आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा में मापा जा सकता है। (Economic welfare is the subject-matter of economic science. Economic welfare being that part of social welfare that can be brought directly or indirectly into relation with the measuring rod of money.)"***

बेवरिज़ (Beveridge) के अनुसार, ***"अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उन सामान्य विधियों का अध्ययन किया जाता है, जिनके माध्यम से लोग अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। (Economics is the study of the general methods by which men co-operate to meet their material needs.)"***

प्रो. केनन (Prof. Cannan) के शब्दों में ***"अर्थशास्त्र का उद्देश्य उन कारणों की व्याख्या करना है, जिन पर मानव का भौतिक कल्याण निर्भर करता है। (The aim of political economy is the explanation of the general rules on which the material welfare of human being depends.)"***

अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषा की विशेषताएं (Characteristics of Welfare related definitions of Economics)

1. अर्थशास्त्र सामाजिक मनुष्यों के आर्थिक कार्यों का अध्ययन करता है।
2. अर्थशास्त्र मनुष्य के भौतिक कल्याण का अध्ययन करता है।
3. अर्थशास्त्र केवल सामान्य व्यक्तियों का ही अध्ययन करता है बल्कि कंजूस, पागल, शराबी आदि का नहीं।
4. अर्थशास्त्र मनुष्य के उन्हीं कार्यों का अध्ययन करता है जो उसके भौतिक कल्याण में वृद्धि करते हैं।

अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषा की आलोचनाएं (Criticisms of Welfare related definitions of Economics)

1. अर्थशास्त्र में केवल सामाजिक मनुष्यों का ही अध्ययन नहीं बल्कि उन सबका भी अध्ययन किया जाता है जो समाज से बाहर रहते हैं क्योंकि आर्थिक समस्या तो गैर-सामाजिक लोगों (साधु-संत आदि) के सामने भी हो सकती है।
2. इस परिभाषा ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को केवल भौतिक वस्तुओं तक ही सीमित कर दिया और अभौतिक वस्तुओं की उपेक्षा की गई है। अत: यह परिभाषा अत्यन्त असंतोषजनक है। हमारे दैनिक जीवन में ऐसी बहुत सी वस्तुएँ हैं जो हमारी आवश्यकताएँ संतुष्ट करती हैं और मात्रा में सीमित भी हैं लेकिन भौतिक वस्तुएँ नहीं हैं। उदाहरणार्थ डॉक्टरों, वकीलों व अध्यापकों इत्यादि की सेवाएँ। इसलिए अर्थशास्त्र में सभी सीमित संसाधनों का अध्ययन किया जाता है चाहे वे भौतिक हों या गैर-भौतिक।
3. रॉबिन्स के अनुसार कल्याण संबंधी विचार अस्पष्ट, अनिश्चित तथा अस्थिर हैं। इन्हें मापा नहीं जा सकता।

4. अर्थशास्त्र में सभी प्रकार के आर्थिक कार्यों का अध्ययन किया जाता है चाहे उनसे कल्याण में वृद्धि होती है अथवा नहीं। उदाहरण के लिए- युद्ध सामग्री बनाने के कारखाने कल्याण प्रदान नहीं कर सकते फिर भी अर्थशास्त्र में उनका अध्ययन किया जाता है।
5. रॉबिन्स ने मार्शल की कल्याणवादी परिभाषा की आलोचना एक अन्य आधार पर भी की है। उनका कहना है कि भौतिक कल्याण का परिमाणात्मक माप सम्भव नहीं है। यद्यपि प्रो. पीगू भौतिक कल्याण को मुद्रा के रूप में मापते हैं लेकिन मुद्रा भौतिक कल्याण का संतोषजनक माप नहीं है। यदि दो व्यक्ति किसी वस्तु के लिए समान कीमत चुकाते हैं तो इसका यह अभिप्राय नहीं है कि उन दोनों व्यक्तियों को समान उपयोगिता एवं समान कल्याण प्राप्त होता है।

उपर्युक्त त्रुटियों के कारण प्रो. रॉबिन्स ने 'कल्याणवादी' परिभाषा को अस्वीकार कर दिया है। इसके स्थान पर उन्होंने अर्थशास्त्र की नई परिभाषा का निर्माण किया जिसे हम दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषा कहते हैं।

मार्शल एवं एडम स्मिथ का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study of Marshall and Adam Smith)

सामान्यतः मार्शल की परिभाषा को एडम स्मिथ की परिभाषा से श्रेष्ठ माना जाता है परन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं कि एडम स्मिथ के अनुसार 'अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है' जबकि मार्शल ने इसे 'धन के स्थान पर मनुष्य और उसके भौतिक कल्याण का शास्त्र माना है।' अब प्रश्न यह उठता है कि धन के बिना क्या भौतिक कल्याण की वस्तुओं को खरीदा जा सकता है? क्या बिना धन प्राप्त किए सुख-सुविधाओं की कल्पना की जा सकती है? कभी भी नहीं। सच तो यह है एडम स्मिथ धन को महत्त्व देकर मनुष्य के भौतिक कल्याण को बढ़ावा देना चाहते थे। सरल स्वभाव के इस महान अर्थशास्त्री ने इसे इतने सीधे ढंग से प्रस्तुत किया कि वह आने वाले आर्थिक जगत में तिरस्कार एवं आलोचना का केन्द्र बिन्दु बन गया। इसके विपरीत निःसंदेह मार्शल एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे लेकिन उससे भी अधिक उन्हें एक दूरदर्शी व्यक्ति कहा जा सकता है। मार्शल इस बात से भली-भांति परिचित थे कि एडम स्मिथ की परिभाषा अर्थशास्त्र की प्रकृति का सटीक चित्रण करती है लेकिन समय की तात्कालिकता को देखते हुए उन्होंने आलोचकों को चुप कराने के लिए उसी परिभाषा को नये रूप में प्रस्तुत किया। मार्शल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे उत्कृष्ट भाषा एवं शैली के धनी थे तथा अपनी कलात्मक प्रतिभा के कारण उनकी परिभाषा का संपूर्ण मूल आधार एडम स्मिथ की कल्पना के आधार के समान था। मार्शल की परिभाषा के निष्कर्ष में यह माना जाता है कि मार्शल की परिभाषा सरल होते हुए भी तार्किक रूप से त्रुटिपूर्ण है तथा यह अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक आधार को भी कमजोर करती है।

एडम स्मिथ और मार्शल के अर्थशास्त्र सम्बन्धी दृष्टिकोण जानने के पश्चात अब हम सीमितता या दुर्लभता सम्बन्धी दृष्टिकोण पर चर्चा करेगें जिसके प्रतिपादक रॉबिन्स है।

1.5 अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषाएं (Scarcity related definitions of Economics)

अर्थशास्त्र को उपरोक्त आलोचना से बचाने हेतु 19वीं सदी के अंत में नव प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री **लॉर्ड रॉबिन्स (Lord Robbins)** ने सन 1932 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'An essay on the Nature and significance of Economic Science'** में अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा इस प्रकार दी-

"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यों और वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधनों के परस्पर संबंधों के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। (Economics is the science which studies human behaviour as a relationship between ends and scare means which have alternative uses.)"

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि रॉबिन्स ने ना तो धन पर बल दिया और ना ही कल्याण पर। उन्होंने तो मनुष्य की असीमित आवश्यकताओं तथा सीमित साधनों के बीच संबंध स्थापित करने पर जोर दिया है। उपर्युक्त परिभाषा में लक्ष्यों से अभिप्राय मानवीय आवश्यकताओं से है जोकि असीमित हैं किन्तु इन आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए साधन दुर्लभ हैं। साधनों से अभिप्राय रुपये, समय, वस्तुओं तथा उत्पादन

के साधनों से है। जब मनुष्य के साधन सीमित होते हैं और उनसे उसकी समस्त आवश्यकताएँ संतुष्ट नहीं की जा सकतीं तो उसके लिए यह समस्या उत्पन्न हो जाती है कि वह किन आवश्यकताओं की पूर्ति करे और किनको असंतुष्ट रहने दे। अतएव मनुष्य को विभिन्न आवश्यकताओं में चुनाव करना पड़ता है। रॉबिन्स के अनुसार मनुष्य की यही मूल आर्थिक समस्या है और इसी का अर्थशास्त्र में अध्ययन किया जाता है।

अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा की विशेषताएं (Characteristics of Scarcity related definitions of Economics)

1. अर्थशास्त्र एक मानवीय विज्ञान है।
2. अर्थशास्त्र मनुष्य की उन क्रियाओं का अध्ययन करता है जिन्हें वे सीमित साधनों को प्राप्त करने के लिए करते हैं।
3. अर्थशास्त्र असीमित साधनों (अथवा आवश्यकताओं) एवं दुर्लभ साधनों के बीच पाये जाने वाले मानव-व्यवहारों का अध्ययन करता है।

अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा की आलोचनाएं (Criticisms of Scarcity related definitions of Economics)

उपर्युक्त परिभाषा सैद्धान्तिक दृष्टि से उचित दिखाई देते हुए भी दोषमुक्त नहीं है। अर्थशास्त्रियों ने इस परिभाषा की आलोचना विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित आधारों पर की है

1. **अव्यावहारिक एवं जटिल (Impractical and Complex) -** यह परिभाषा अव्यावहारिक एवं जटिल है जोकि साधारण लोगों की समझ से बाहर है। इस परिभाषा में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि विभिन्न कार्यों में सीमित संसाधनों का किस प्रकार उपयोग किया जाए ताकि उनसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त की जा सके।
2. **कल्याण की उपेक्षा (Negligence of welfare) -** रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र का मानव-कल्याण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र किसी उद्देश्य की अच्छाई या बुराई के बारे में तटस्थ (Netural) है। यदि इसे स्वीकार कर लिया जाए तो अर्थशास्त्र का व्यावहारिक महत्व एवं उपयोगिता समाप्त हो जाती है तथा यह विषय आकर्षक नहीं रह जाता है। एक सामाजिक विज्ञान होने के कारण अर्थशास्त्र को कल्याण से अलग नहीं किया जा सकता।
3. **कल्याण का निहित प्रचार (Implied idea of welfare) -** आलोचकों के अनुसार रॉबिन्स की परिभाषा में कल्याण का विचार भी निहित है। जब कोई अर्थशास्त्री इस बात का अध्ययन करता है कि 'अधिकतम सत्तुष्टि प्राप्त करने के लिए सीमित साधनों का कैसे प्रयोग किया जाए' तो यह अध्ययन कल्याण के अध्ययन से भिन्न नहीं है। वास्तव में अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति का भाव भी कल्याण ही है।
4. **सभी आर्थिक समस्याओं का कारण दुर्लभता नहीं है। (Scarcity is not the cause of all economic problems) -** रॉबिन्स ने सभी आर्थिक समस्याओं का एकमात्र कारण 'दुर्लभता' बतलाया है जबकि अनेक आर्थिक समस्याएँ (बेरोजगारी और मन्दी) ऐसी हैं जिनका मुख्य कारण साधनों की दुर्लभता नहीं बल्कि वस्तुओं की प्रचुरता या उनका अति उत्पादन होता है।
5. **धनी समाज पर लागू नहीं होती (Does not applicable to rich society) -** रॉबिन्स की परिभाषा धनी देशों पर लागू नहीं होती क्योंकि वहाँ पर समस्याएँ दुर्लभता के कारण नहीं बल्कि प्रचुरता के कारण उत्पन्न होती हैं। दुर्लभता का अर्थशास्त्र वहाँ लागू नहीं हो सकता।
6. **अल्पविकसित देशों पर लागू नहीं होती (Does not applicable to Underdeveloped Countries) -** रॉबिन्स की परिभाषा सीमित साधनों पर आधारित है किन्तु अल्पविकसित देशों की समस्या अप्रयुक्त तथा अल्प-प्रयुक्त साधनों की है। वहाँ साधन तो होते हैं लेकिन उनका प्रयोग नहीं हो रहा होता। अत: उनकी समस्या विकास की समस्या होती है।
7. **अर्थशास्त्र केवल मूल्य का सिद्धान्त नहीं है।** (Economics is not just a theory of value) - रॉबिन्स ने सभी आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु सीमित साधनों का मितव्ययी उपयोग करके

अर्थशास्त्र को केवल मूल्य सिद्धान्त बना दिया है और इसके क्षेत्र को संकुचित कर दिया है जबकि अर्थशास्त्र का क्षेत्र साधनों के बँटवारे और मूल्य निर्धारण तक ही सीमित नहीं है। वर्तमान में 'आर्थिक विकास के सिद्धान्त' का महत्त्व बहुत बढ़ गया है जिसमें यह अध्ययन किया जाता है कि राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि किन-किन तत्त्वों पर निर्भर करती है। रॉबिन्स की परिभाषा में आर्थिक विकास जैसे विषयों को शामिल न करना एक बड़ी गलती है।

संक्षेप में, रॉबिन्स की परिभाषा वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण है और इससे अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान का दर्जा मिला है किन्तु यह उद्देश्यों के प्रति तटस्थ और कल्याण के प्रति उदासीन होने के कारण अव्यावहारिक है।

प्रो. रॉबिन्स एवं मार्शल का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study of Prof. Robbins and Marshall)

अब तक हम लोगो ने एडम स्मिथ के धन सम्बन्धी परिभाषा के पश्चात मार्शल व पीगू की कल्याण सम्बन्धी तथा रॉबिन्स के दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषाओं के बारे में जाना। मार्शल पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने अर्थशास्त्र के धन संबंधी दृष्टिकोण को व्यापक रूप दिया और अर्थशास्त्र को मानव कल्याण से जोड़ा। मार्शल और रॉबिन्स की परिभाषाओं में हम कुछ समानताओं या असमानताओं को वगीकृत कर सकते है। आइए संक्षेप में यह जाना जाए कि इन परिभाषाओं में से कौन-कौन सी समानताएँ और भिन्नताएँ व्याप्त हैं-

रॉबिन्स और मार्शल की परिभाषाओं में समानताएँ (Similarities in the definitions of Robbins and Marshall)

1. मार्शल तथा रॉबिन्स दोनों ही अपनी परिभाषाओं में अर्थशास्त्र को एक विज्ञान मानते हैं।
2. मार्शल ने धन शब्द का प्रयोग किया है जबकि रॉबिन्स ने सीमित साधनों का। सीमितता धन का प्रमुख गुण है इस दृष्टि से दोनों का अर्थ लगभग एक ही है। यद्यपि रॉबिन्स सीमित साधन में समय को भी शामिल करते है।
3. रॉबिन्स ने सीमित साधनों के मितव्ययिता या किफायत से प्रयोग करने की बात कही जिससे अधिकतम उत्पादन व अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो और इसे ही मार्शल ने अधिकतम कल्याण कहा है।

रॉबिन्स और मार्शल की परिभाषाओं में असमानताएँ (Dissimilarities in the definitions of Robbins and Marshall)

मार्शल तथा रॉबिन्स की परिभाषाओ में कुछ समानता के साथ ही कई मुख्य अन्तर भी है। इन दोनों अर्थशास्त्रियों की परिभाषाओं में प्रमुख असमानताएँ निम्नलिखित है।

मार्शल का दृष्टिकोण	रॉबिन्स का दृष्टिकोण
मार्शल की परिभाषा सरल और स्पष्ट है।	रॉबिन्स की परिभाषा अस्पष्ट एवं जटिल है।
मार्शल की परिभाषा वर्गकारिणी है।	रॉबिन्स की परिभाषा विश्लेषणात्मक है।
मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक शास्त्र है अर्थात् यह केवल सामाजिक मनुष्यों का अध्ययन करता है।	रॉबिन्स के मतानुसार अर्थशास्त्र मानवीय-विज्ञान है अर्थात् यह प्रत्येक मानव की क्रियाओं का अध्ययन करता है।
अर्थशास्त्र में धन से सम्बन्धित अर्थात् भौतिक कल्याण को बढ़ावा देने वाली आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।	अर्थशास्त्र में धन से सम्बन्धित अथवा असम्बन्धित दोनों प्रकार की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र का लक्ष्य मानव-कल्याण में वृद्धि करना है।	रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र का मानव-कल्याण से कोई सरोकार नहीं है।
मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों है।	रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान है कला नहीं।
मार्शल की दृष्टि में अर्थशास्त्र भौतिक क्रियाओं का अध्ययन है।	रॉबिन्स की दृष्टि में अर्थशास्त्र दुलर्भता का शास्त्र है।

मार्शल ने आर्थिक विश्लेषण हेतु निगमन तथा आगमन दोनों रीतियों का समर्थन किया है।	रॉबिन्स ने आर्थिक निष्कर्षों पर पहुँचने के लिये केवल निगमन प्रणाली का ही प्रयोग किया है।

रॉबिन्स और मार्शल के बीच कौन सी परिभाषा बेहतर है? (Which definition is better between Robbins and Marshall)

रॉबिन्स और मार्शल द्वारा प्रस्तुत परिभाषाओं में से कौन सी परिभाषा सर्वोत्तम है यह बताना बहुत कठिन है। इसका कारण यह है कि दोनों परिभाषाएँ अलग-अलग दृष्टिकोण पर आधारित हैं और इनमें जहाँ कुछ गुण हैं वहीं कुछ दोष भी विद्यमान हैं। दोनों परिभाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता हैं-

1. रॉबिन्स की परिभाषा अधिक वैज्ञानिक है क्योंकि यह 'आर्थिक समस्या' अर्थात् 'चुनाव पहलू' की बात कहकर अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है। इस दृष्टि से रॉबिन्स की परिभाषा मार्शल की परिभाषा से कहीं अधिक श्रेष्ठ है ।
2. रॉबिन्स की परिभाषा तर्कपूर्ण है जबकि मार्शल की परिभाषा सरल होते हुए भी तार्किक दृष्टि से कमजोर बनी हुई है।
3. मार्शल की श्रेष्ठता का एक कारण यह है कि उन्होंने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को जहाँ निश्चितता प्रदान की है वही रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को दुर्लभता सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्र कहकर उसके क्षेत्र को अनावश्यक रूप से विस्तृत कर दिया है।
4. मार्शल की रॉबिन्स से श्रेष्ठता का एक अन्य आधार अर्थशास्त्र का मानव कल्याण से सम्बन्ध जोड़ना है। मार्शल मानवीय कल्याण का प्रवर्तक ही नहीं मसीहा जान पड़ता है जबकि रॉबिन्स का अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति तटस्थ बना रहता है। चूँकि अर्थशास्त्र को मानव-कल्याण से अलग नहीं किया जा सकता इसलिये मार्शल इस दृष्टि से रॉबिन्स को मीलों पीछे छोड़ देते हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि रॉबिन्स की परिभाषा जहाँ तर्कपूर्ण तथा वैज्ञानिक है वही उन्होंने मानव कल्याण से नाता तोड़ करके अपनी परिभाषा का व्यवहारिक महत्व काफी कम कर दिया है। इसके विपरीत यदि मार्शल अर्थशास्त्र को मानव कल्याण का साधन मानते हैं तो उनकी परिभाषा अधिक व्यावहारिक प्रतीत होती है परन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से इसे श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। हमारी दृष्टि में चूंकि सिद्धान्त की तुलना में व्यवहार का औचित्य अधिक है इसलिये 'मार्शल' का दृष्टिकोण 'रॉबिन्स' की तुलना में अधिक उचित कहा जा सकता है।

1.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए –

1. प्रो. अल्फ्रेड मार्शल ने सन 1890 में 'Principles of Economics' नामक पुस्तक की रचना की।

(सत्य/ असत्य)

2. लॉड रॉबिन्स (Lord Robbins) ने सन 1930 में 'An essay on the Nature and significance of Economic Science' नामक पुस्तक की रचना की ।

(सत्य/ असत्य)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. मार्शल की परिभाषा .....(वर्गकारिणी/विश्लेषणात्मक) है।
2. रॉबिन्स की परिभाषा .....(वर्गकारिणी/विश्लेषणात्मक) है।
3. ..... (रॉबिन्स /एडम स्मिथ)को अर्थशास्त्र का जनक/पिता/जन्मदाता कहा जाता है।।
4. धन के अंतर्गत केवल ..... (मूल्यवान/ निकृष्ट) भौतिक पदार्थों को ही शामिल किया गया हैं।

1.7 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के बाद जान चुके है कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री जैसे एडम स्मिथ, जे. बी. से और जे. एस. मिल आदि ने अर्थशास्त्र को धन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है। एडम स्मिथ के अनुसार, राजनैतिक अर्थशास्त्र राष्ट्रों के धन के स्वरुप तथा उसके कारणों की जाँच करने वाला शास्त्र है। जे. बी. से अर्थशास्त्र को धन संबंधी नियमों का अध्ययन करने वाला शास्त्र बताते है। जे.एस.मिल के अनुसार, अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो उन सामाजिक घटनाओं के नियमों का अध्ययन करता है जो मनुष्य जाति द्वारा धन उत्पादन तथा वितरण करने से सम्बंधित होती है तथा जो अन्य किसी उद्देश्य से प्रभावित नहीं होती है। नव प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री प्रो.अल्फ्रेड मार्शल, पीगू, बेवरिज, केनन आदि ने अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषा दी है। मार्शल के अनुसार, अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जाँच करता है जिसका कल्याण के लिए आवश्यक भौतिक साधनों की प्राप्ति और उनके उपयोग से निकटतम संबंध है। प्रो. केनन के शब्दों में, अर्थशास्त्र का उद्देश्य उन कारणों की व्याख्या करना है, जिन पर मानव का भौतिक कल्याण निर्भर करता है। लार्ड रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा दी है। उनके अनुसार, अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यों और वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधनों के परस्पर सम्बन्धों के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। मार्शल और रॉबिन्स की परिभाषाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है की मार्शल की परिभाषा सरल व स्पष्ट है जबकि रॉबिन्स की परिभाषा अस्पष्ट व जटिल है। मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र विज्ञान और कला दोनों है जबकि रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान है। मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र का लक्ष्य मानव कल्याण में वृद्धि करना है जबकि रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र का मानव कल्याण से कोई सरोकार नहीं है।

1.8 शब्दावली (Glossary)

- **धन का विज्ञान (Science of Wealth) :** अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु धन है, जिसमें इसके उत्पादन एवं अपभोग का अध्ययन किया जाता हैं। धन के अंतर्गत केवल उन्ही भौतिक वस्तुओं को शामिल किया जाता हैं जोकि सीमित एवं उपयोगी हैं।
- **कल्याण का विज्ञान (Science of Welfare) :** अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु आर्थिक कल्याण है। आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन में मापा जा सकता है।
- **दुर्लभता का विज्ञान (Science of Scarcity) :** अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु सीमित संसाधनों के साथ मानवीय व्यवहार का अध्ययन है। इस विज्ञान के अंतर्गत लक्ष्यों और वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित साधनों के बीच अंतर्संबंधों के संदर्भ में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

1.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. सत्य 2. असत्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. वर्गकारिणी 2. विश्लेषणात्मक 3. एडम स्मिथ 4. मूल्यवान

1.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।

- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण,*** शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

1.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics,*** Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

1.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. 'अर्थशास्त्र धन का विज्ञान था अब वह कल्याण का शास्त्र हैं।' विवेचना कीजिए।
2. अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषाओं को विस्तार से समझाए।
3. अर्थशास्त्र की कल्याण संबंधी परिभाषाओं को विस्तार से समझाए।
4. अर्थशास्त्र की परिभाषा के सम्बन्ध में मार्शल और रॉबिन्स की विचारों की समानता तथा विभिन्नता को स्पष्ट कीजिए।

इकाई- 2 अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ: आवश्यकता-विहीनता, विकास केन्द्रित एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र

(Definitions of Economics: Wantlessness, Growth Centered and Kautilya Arthshastra)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)
2 .2 उद्देश्य (Objectives)
2.3 आवश्यकता विहीनता सम्बंधित परिभाषा (Definition related to Wantlessness)
2.4 विकास केन्द्रित परिभाषा (Growth Centered Definition)
2.5 कौटिल्य अर्थशास्त्र की आर्थिक अवधारणाएँ (Economic Concept of Kautilya Arthshastra)
2.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)
2.7 सारांश (Summary)
2.8 शब्दावली (Glossary)
2.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)
2.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)
2.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)
2.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

इससे पूर्व की इकाई के अध्ययन से आपने जाना की अर्थशास्त्र की धन, कल्याण एवं दुर्लभता सम्बन्धित परिभाषाएँ क्या है? परिभाषा के इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए इस इकाई के अंतर्गत आप अर्थशास्त्र की आवश्यकता-विहीनता तथा विकास केन्द्रित परिभाषा को जानेंगे। साथ ही आप यह जान सकेंगे की इन दोनों परिभाषाओं की मुख्य विशेषताएँ क्या है? आप आवश्यकता-विहीनता, विकास केन्द्रित तथा दुर्लभता संबंधी परिभाषाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे। इसके साथ ही भारतीय दर्शन में कौटिल्य अर्थशास्त्र की अवधारणाओं को भी समझ सकेंगे।

2 .2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

- ✓ अर्थशास्त्र की आवश्यकता विहीनता सम्बंधित परिभाषा को समझ सकेंगे।
- ✓ आवश्यकता-विहीनता परिभाषा एवं दुर्लभता परिभाषा में तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की विकास केन्द्रित परिभाषा व इसकी विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- ✓ कौटिल्य अर्थशास्त्र की अवधारणों से अवगत होंगे।

2.3 आवश्यकता विहीनता सम्बंधित परिभाषा (Definition related to Wantlessness)

प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) ने अर्थशास्त्र को एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया है। प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) एक भारतीय अर्थशास्त्री थे जिनके विचार पाश्चात्य विचारों से भिन्न हैं तथा भारतीय संस्कृति एवं विचारों से परिपूर्ण हैं। प्रो. जे. के. मेहता ने अर्थशास्त्र की परिभाषा आर्थिक तथा भौतिक दृष्टिकोण पर नहीं बल्कि नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित दी है। अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य 'संतुष्टि को अधिकतम करना नहीं' बल्कि 'वास्तविक सुख को अधिकतम करना' हैं। प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) का कहना है ***'इस वास्तविक सुख के लक्ष्य की पूर्ति इच्छाओं को अधिकतम रखने से नहीं बल्कि कम से कम करने में निहित हैं।'***

प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) ने अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा है- ***"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानवीय आचरण का आवश्यकता-विहीनता की अवस्था में पहुँचने के लिए, साधन के रूप में अध्ययन करता है। (Economics must, therefor, be defined as the science of human activities considered as an endeavour toreach the state of wantlessness.)"***

आवश्यकता विहीनता परिभाषा की व्याख्या (Explanation of Wantlessness Definition)

प्रो. रॉबिन्स (Prof. Robbins) का विचार था कि मानव व्यवहार का उद्देश्य अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करना है और अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति से ही अधिकतम सन्तुष्टि सम्भव है। इसके विपरीत **प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta)** के अनुसार मानव व्यवहार का उद्देश्य आवश्यकताओं की 'सन्तुष्टि' के स्थान पर 'सुख' में वृद्धि करना है।

प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) ने 'सन्तुष्टि (Satisfaction)' तथा 'सुख (Happiness)' शब्द में अन्तर किया हैं। किसी व्यक्ति की वह अनुभूति जो किसी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति के बाद मिलती है उसे सन्तुष्टि कहा जाता है। सन्तुष्टि का सम्बन्ध इच्छा से होता है। यदि इच्छा तीव्र होती है तो सन्तुष्टि भी अधिक प्राप्त होती है। प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) ने सन्तुष्टि के अनुभव को आनन्द (pleasure) कहा है और यह एक अस्थायी, दिखावटी एवं नकारात्मक भावना हैं। किसी भी आवश्यकता की असंतुष्टि व्यक्ति के मानसिक संतुलन को बिगाड़ देती है जिसके कारण उसके पास सुख का अभाव हो जाता है और वह उस इच्छा को पूरा करने का प्रयास करने लगता है। इच्छा पूरी होने पर उसके मन का

संतुलन पुन: स्थापित हो जाता है और इससे उसे 'संतुष्टि' प्राप्त होता है। एक इच्छा पूरी होने के बाद व्यक्ति के मन में दूसरी इच्छा उत्पन्न हो जाती है जिससे संतुलन बिगड़ जाता है। अत: 'इच्छाओं की पूर्ति' के बाद जो 'सुख' की स्थिति उत्पन्न होती है वह स्थायी नहीं होती और मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ता जाता है जिसका एक निश्चित परिणाम होता है-'दु:ख'।

इसके विपरीत सुख वह अनुभूति जो किसी व्यक्ति को उस स्थिति में मिलती है जब उसे किसी चीज की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) का कहना है कि वास्तविक सुख की प्राप्ति आवश्यकताओं की वृद्धि में नहीं है बल्कि उनको कम करने में है। आवश्यकताओं में वृद्धि का अर्थ होगा दु:ख में वृद्धि। आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु साधनों की आवश्यकता होती है। जैसा कि आप सभी जानते हैं हमारे संसाधन सीमित हैं इसलिए सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती हैं और जिन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होतीं है वही दु:ख का कारण बनती हैं। वास्तविक सुख की प्राप्ति के लिए आवश्यकताओं को कम करना चाहिए। आवश्यकताओं को कम करके आवश्यकता-विहीनता की स्थिति प्राप्त की जानी चाहिए। आवश्यकता-विहीनता की अवस्था 'सुख' अथवा 'सन्तुलन' की अवस्था होती है।

'सुख' अथवा 'सन्तुलन' की अवस्था को प्राप्त करने के लिए प्रो. जे. के मेहता ने दो उपाय सुझाये हैं:

1. बाहरी शक्तियों को मन के साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए ताकि वे मस्तिष्क के अनुकूल बन सकें। परन्तु सन्तुलन प्राप्त करने का यह उपाय दो कारणों से अपूर्ण अथवा सीमित है। पहला कारण यह है कि किसी वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति के लिए किया गया कोई भी प्रयास एक नई आवश्यकता को जन्म दे देता है। दूसरा कारण यह है कि आवश्यकताएँ असीमित हैं। इसलिए सभी आवश्यकताएँ एक ही समय में पूरी नहीं की जा सकतीं। प्रो. जे. के. मेहता (Prof. J. K. Mehta) का कहना है कि केवल बाहरी परिस्थितियों को बदलने या साधनों का उपयोग करने से पूर्ण सुख या संतुलन प्राप्त नहीं किया जा सकता।
2. संतुलन या पूर्ण सुख को प्राप्त करने का दूसरा तरीका यह है कि मन को ऐसी स्थिति में रखा जाए कि वह बाहरी शक्तियों से अप्रभावित रहे। इसके लिए मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

इस परिभाषा की व्याख्या करने पर ज्ञात होता है कि मानव को वास्तविक सुख आवश्यकताओं की अधिकता में नहीं बल्कि न्यूनता में प्राप्त होता है। अत: सुखी रहने के लिए मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं को कम करते हुए आवश्यकता-विहीनता की अवस्था प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रो. मेहता के ही शब्दों में ***"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव व्यवहार का दीर्घकाल में दु:ख को न्यूनतम करने अथवा दूसरे शब्दों में आवश्यकताओं से पूर्ण मुक्ति तथा सुख की अवस्था को प्राप्त करने के प्रयास के रूप में अध्ययन करता है। ("Economics is, therefore, the science that studies human behavior as the effort to minimise pain in the long run or, in other words, as an endeavor to gain freedom from wants and reach the state of happiness.)"***

आवश्यकता विहीनता परिभाषा की विशेषताएं (Characteristics of Wantlessness Definition)

1. प्रो. मेहता की आवश्यकता विहीनता की परिभाषा मनोविज्ञान व नैतिकता पर आधारित है जबकि एडम स्मिथ से लेकर रॉबिन्स तक सभी अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएँ 'भौतिकता' के आवरण में सिमट कर रह जाती है।
2. प्रो. मेहता, 'सन्तुष्टि' के स्थान पर 'सुख' को मानव जीवन का लक्ष्य मानते हैं और इस दृष्टि से उन्होंने भारतीय संस्कृति के उच्च मूल्यों का अनुकरण किया हैं।
3. प्रो. मेहता के विश्लेषण के अनुसार अर्थशास्त्र एक आदर्शवादी विज्ञान है और इसे केवल वास्तविक विज्ञान नहीं कहा जा सकता। इस दृष्टिकोण से प्रो. मेहता, मार्शल के समान विचारधारा वाले विचारक हैं लेकिन रॉबिन्स के विरोधी विचारक हैं।
4. प्रो. मेहता के अनुसार मानवीय व्यवहार का लक्ष्य संतुलन की स्थिति को प्राप्त करना है। यह एक तर्कपूर्ण परंतु सार्वभौमिक सत्य है।

5. प्रो. मेहता 'स्थैतिक अर्थशास्त्र' के समर्थक हैं और उन्होंने अपनी परिभाषा इसी पर आधारित की है।

आवश्यकताओं के चुनाव का पहलू : आर्थिक समस्या (Aspect of Choice of Wants: Economic Problem)

चूँकि कोई भी मनुष्य अपनी सभी इच्छाओं को एक साथ कम नहीं कर सकता, इसलिए उसके सामने 'चुनाव' की समस्या उत्पन्न हो जाती है कि इनमें से कौन सी इच्छाएँ ख़त्म कर देनी चाहिए और कौन सी इच्छाओं की पूर्ति की जानी चाहिए? वास्तव में प्रो. मेहता ने इच्छाओं को कम करने के लिये किए जाने वाले चुनाव को ही 'आर्थिक समस्या (economic problem)' का रूप दिया है और इसे अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्या माना है। इस प्रकार अर्थशास्त्र उस मानवीय व्यवहार का अध्ययन है जो इच्छारहित अवस्था में पहुंचने के लिये प्रयास करता रहता है। इस सम्बन्ध में प्रो. जे. के. मेहता का एक सुझाव यह है कि मनुष्य को अपनी इच्छाओं को उनकी तीव्रता के अनुसार तथा धीरे-धीरे कम करनी चाहिए। सर्वप्रथम उन इच्छाओं या आवश्यकताओं को कम करना चाहिए जिनकी तीव्रता कम है या फिर जिन इच्छाओं या आवश्यकताओं की पूर्ति करने में हम असमर्थ हैं। इस प्रकार प्रो. जे. के. मेहता के अनुसार आवश्यकताओं को 'अनुकूलतम सीमा' यानी हमारे संसाधनों की सीमा तक कम किया जाना चाहिए और हमारा यह प्रयास हमारे अन्तिम लक्ष्य 'आवश्यकत्ता रहित अवस्था' में पहुंचने का एक कारगर कदम माना जाएगा।

प्रो. जे. के. मेहता और प्रो. रॉबिन्स का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study of Prof. J. K. Mehta and Prof. Robbins)

कभी-कभी हमें यह भ्रम होने लगता है कि प्रो. मेहता की विचारधारा प्रो. रॉबिन्स के ही समरूप है क्योंकि दोनों विचारक असीमित आवश्यकताओं तथा सीमित साधनों की मान्यता को स्वीकार करते हैं। इतना ही नहीं प्रो. मेहता तथा रॉबिन्स दोनों ने ही 'आर्थिक समस्या' या 'चुनाव पहलू' को अर्थशास्त्र की विषय सामग्री भी माना है, लेकिन भाषा व शैली में थोड़ी सी समानता के बावजूद इन दोनों के नजरिए में बहुत बड़ा अंतर है। अन्तर के प्रमुख आधार इस प्रकार है

अन्तर का आधार	प्रो. रॉबिन्स	प्रो. जे. के. मेहता
1. मानवीय लक्ष्य (Humanitaarian goals)	मानव जीवन का लक्ष्य 'अधिकतम सन्तुष्टि' माना।	जबकि प्रो. जे. के. मेहता ने 'वास्तविक सुख' की कल्पना की है ।
2. आवश्यकताओं का दर्शन (Philosophy of Wants)	प्रो. रॉबिन्स ने अधिक-से-अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर बल दिया है।	जबकि प्रो. जे. के. मेहता ने आवश्यकताओं को धीरे-धीरे कम करके अन्तत: समाप्त करने पर बल दिया है।
3.आर्थिक समस्या या चुनाव का रूप (Economic Problem or form of Choice)	प्रो. रॉबिन्स के अनुसार आर्थिक समस्याएँ आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए ही उत्पन्न होती है।	जबकि प्रो. जे. के. मेहता ने आवश्यकता-विहीनता-अवस्था में पहुँचने के लिये चयन सम्बन्धी व्यवहार को जन्म दिया है।
4. दृष्टिकोण (Approach)	प्रो. रॉबिन्स का दृष्टिकोण भौतिकवाद पर आधारित है।	जबकि प्रो. जे. के. मेहता का दृष्टिकोण अध्यात्मवाद पर आधारित है।
5. आदर्शात्मक पहलू (Normative Aspect)	प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को 'वास्तविक विज्ञान' माना है और इसे नीतिशास्त्र से दूर रखा है।	जबकि प्रो. जे. के. मेहता ने अर्थशास्त्र को एक 'आदर्श विज्ञान' के रूप में स्वीकार किया है।
6. तर्कपूर्णता (pseudological)	प्रो. रॉबिन्स का दृष्टिकोण 'अदूरदर्शी (Short sighted)' और तर्कपूर्ण है।	जबकि प्रो. जे. के. मेहता का दृष्टिकोण 'दूरदर्शी (Far sighted)' है परन्तु एक उलझी हुई कहानी के समान है।

आवश्यकता विहीनता परिभाषा की आलोचनाएँ (Criticism of Wantlessness Definition)

प्रो. मेहता की परिभाषा की अनेक आलोचनाएँ की गयी हैं और कहा गया है कि यदि इस परिभाषा को स्वीकार कर लिया जाए तो अर्थशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता ही समाप्त हो जाएगी। प्रो. मेहता की परिभाषा की प्रमुख आलोचनाएँ निम्नलिखित है :

1. **भौतिक तथा विकास के विपरीत (Against materialism and development) -** प्रो. मेहता की परिभाषा आधुनिक भौतिकवाद तथा विकासवाद के अनुकूल नहीं है। इस परिभाषा को स्वीकार करने से आर्थिक प्रगति रुक जाएगी। प्रो. मेहता की परिभाषा को कोई भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।
2. **अर्थशास्त्र स्वयं के नाश का कारण (Economics is the cause of self-destruction) -** प्रो. मेहता की परिभाषा को स्वीकार करने से अर्थशास्त्र स्वयं अपने विनाश का कारण बन जाता है क्योंकि जब हम आवश्यकता-विहीनता की स्थिति में पहुंच जाएंगे तो अर्थशास्त्र पढ़ने की भी जरूरत नहीं रह जाएगी।। अतः यह परिभाषा अर्थशास्त्र के विकास में बाधक है।
3. **अव्यावहारिक (Impractical) -** प्रो. मेहता की परिभाषा भारतीय दर्शन के अनुरूप हो सकती है लेकिन आज की स्थिति में यह व्यावहारिक नहीं है क्योकि इस भौतिकवादी युग में कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को कम करके उन्हें पूरा करने के आनंद से स्वयं को वंचित नहीं रखना चाहता।
4. **अर्थशास्त्र केवल आदर्श विज्ञान नहीं (Economics is not only Normative Science) -** प्रो. मेहता की परिभाषा यह स्पष्ट करती है कि अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान है जबकि रॉबिन्स इसे केवल वास्तविक विज्ञान मानते हैं।

आवश्यकता-विहीनता की स्थिति का दूसरा दृष्टिकोण भी हैं। प्रो. मेहता ने आवश्यकताओं को मारकर और उन पर विजय प्राप्त करके आवश्यकता- विहीनता की स्थिति प्राप्त करने का एक तरीका सुझाया है जोकि आज के भौतिक युग में अव्यवहारिक और बिल्कुल असंभव है। हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें मारना उचित नहीं समझते बल्कि हम अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करके उन पर विजय प्राप्त करना उचित समझते हैं। आवश्यकताओं की संतुष्टि पर अंकुश लगाने से ही आज तक आर्थिक प्रगति संभव हुई है और भविष्य में भी संभव होगी। अतः हम ***"अर्थशास्त्र को एक ऐसा विषय मानते हैं जिसमें मानव प्रयासों के उस पहलू का अध्ययन किया जाता है जिसके अन्तर्गत आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करके उन पर विजय प्राप्त की जाती है और आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया जाता है।"***

2.4 विकास केन्द्रित परिभाषा (Growth Centred Definition)

रॉबिन्स की परिभाषा के बाद अधिकांश अर्थशास्त्री यह विचार व्यक्त करने लगे थे कि अब परिभाषा संबंधी वाद-विवाद समाप्त हो गया है और अर्थशास्त्र की एक स्थाई एवं सर्वमान्य परिभाषा प्राप्त हो गई है परन्तु आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण आज हमारे उद्देश्य भी परिवर्तित हो गए हैं। अर्थशास्त्र को एक ऐसी परिभाषा की आवश्यकता है जोकि 'सीमित साधनों के वितरण' तथा 'आर्थिक विकास' दोनों की समस्याओं को शामिल कर सके। साथ ही उसकी स्थिति की पूर्ण एवं उचित व्याख्या भी कर सके। साधनों की सीमितता होने पर मुख्य आर्थिक समस्या केवल दिए हुए साधनों का दी हुई आवश्यकताओं के साथ समायोजन करना ही नहीं बल्कि भविष्य के साधनों का विकास करना भी है। जिसके द्वारा बदलती और बढती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है।

अर्थशास्त्र की आधुनिक परिभाषा आर्थिक विकास के दृष्टिकोण पर आधारित है। प्राचीन अर्थशास्त्रियों (विशेष रूप से रॉबिन्स) का दृष्टिकोण स्थैतिक (static) रहा है। इसके विपरीत आधुनिक अर्थशास्त्री आर्थिक समस्या को प्रावैगिक (dynamic) मानते हैं।

विकास केन्द्रित प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित है।

बेनहम (Benham)के अनुसार ***"अर्थशास्त्र उन तत्वों का अध्ययन है जो रोजगार और जीवनस्तर को प्रभावित करते है। (Economics is the study of factors affecting employment and standard of living.)"***

हेनरी स्मिथ के अनुसार- ***"अर्थशास्त्र यह अध्ययन करता है कि एक सभ्य समाज में कोई व्यक्ति अन्य व्यक्तियों द्वारा उत्पादित पदार्थों से किस प्रकार अपना भाग प्राप्त करता है और कैसे समाज के कुल उत्पादन में परिवर्तन होता है और कुल उत्पादन कैसे निर्धारित होता है। (Economics is the study of how, in a civilised society, one obtains a share in what other people have produced and of how the total product of society changes and is determined)"***

प्रो. जार्ज लिलेण्ड के अनुसार - ***"अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि अर्थव्यवस्था किस प्रकार हमारी आवश्यकता की वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करती है और किस प्रकार उनका वितरण होता है। वह इस बात से भी सम्बन्धित है कि अर्थव्यवस्था को किस प्रकार अधिक अच्छे ढंग से चलाया जा सकता है।"***

नोबेल पुरस्कार विजेता **पॉल ए. सैम्युलसन** (Paul A. Samuelson) की परिभाषा अर्थशास्त्र की सबसे अच्छी परिभाषा समझी जाती है। जिसका कारण यह है कि उन्होंने अपनी परिभाषा द्वारा अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का स्पष्टीकरण अधिक अच्छे ढंग से किया है। उनके शब्दों में- ***"अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि मानव एवं समाज,मुद्रा के प्रयोग द्वारा अथवा उसके बगैर, वैकल्पिक उपयोगों वाले उत्पादक संसाधनों का प्रयोग विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए तथा उपभोग हेतु उनका वितरण करने के लिए चाहे यह उपभोग वर्तमान में हो अथवा भविष्य में) समाज के विभिन्न व्यक्तियों तथा वर्गों के बीच किस प्रकार करता है। अर्थशास्त्र में संसाधनों के आवंटन में सुधार की लागतों तथा उपयोगिताओं का विश्लेषण किया जाता है। (Economics is the study of how people and society end up choosing, with or without the use of money, to employ productive resources that could have alternative uses, to produce various commodities and distribute them for consumption, now or in the future, among various persons and groups in society. It analyzes the costs and benefits of improving pattern of resource allocation.)"***

परिभाषा की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. प्रो. सैम्युलसन भी 'साधनों की सीमितता' अर्थात् 'मानव व्यवहार के चुनाव करने के पहलू' को अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्या मानते हैं।
2. रोबिन्स के स्थैतिक दृष्टिकोण के विपरीत सैम्युलसन ने आर्थिक समस्यायों के विश्लेषण हेतु 'प्रावैगिक दृष्टिकोण' को अपनाया है। सरल शब्दों में, उन्होंने अपनी परिभाषा में 'आर्थिक विकास' की समस्या को विशेष महत्त्व दिया है।
3. प्रो. सैम्युलसन की परिभाषा की एक अन्य विशेषता यह है कि उन्होंने 'चुनाव की समस्या' या 'साधनों के वितरण' की समस्या को वस्तु-विनिमय प्रणाली और मुद्रा विनिमय प्रणाली दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में लागू किया है जिससे अर्थशास्त्र का क्षेत्र और भी व्यापक हो गया है।

विकास केन्द्रित परिभाषा, रॉबिन्स की परिभाषा की भाँति स्थैतिक (Static) नहीं है। इसमें समय तत्त्व को शामिल करके प्रावैगिक (Dynamic) बना दिया गया है। यद्यपि सैम्युलसन ने विकास केन्द्रित परिभाषा का निर्माण रॉबिन्स द्वारा दी गई परिभाषा के आधार पर ही किया था। सैम्युलसन की परिभाषा की मुख्य बात यह है कि यह चुनाव की समस्या को वर्तमान से ही नहीं, अपितु भविष्य से भी संबंधित करती है। जैसा कि हम सभी जानते है, मानवीय आवश्यकताएँ कभी भी स्थिर नहीं रहतीं। भविष्य में उनके स्वरूप में परिवर्तन होने के साथ-साथ, उनकी संख्या में भी वृद्धि होती रहती है। मानवीय आवश्यकताओं में होने वाली वृद्धि को संतुष्ट करने के लिये आवश्यक साधनों में आनुपातिक वृद्धि करनी पड़ती है। यही कारण है कि समाज की परिवर्तित एवं बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थशास्त्रियों को साधनों, आय, उत्पादन एवं

रोजगार की वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। अतः अर्थशास्त्र असीमित साध्यों के सन्दर्भ में सीमित साधनों के आबंटन तथा आय, उत्पादन, रोजगार एवं आर्थिक विकास के निर्धारकों का अध्ययन है। वास्तव में, यही अर्थशास्त्र की सही परिभाषा है।

विकास केन्द्रित परिभाषा की मुख्य विशेषताएँ (Main features of the Growth Centred Definition)

विकास केन्द्रित परिभाषा की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

1. साधनों की सीमितता एवं आवश्यकताओं की असीमितता के परिणामस्वरूप चुनाव की समस्या उत्पन्न होती है।
2. असीमित आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए उपलब्ध साधनों का कुशलतम ढंग से उपयोग अनिवार्य हो जाता है। यही नहीं, निरन्तर बढ़ती आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए संसाधनों में वृद्धि लाने हेतु प्रयास किए जाने चाहिए।
3. यह परिभाषा चुनाव की समस्या को गतिशील रूप में व्यक्त करती है।
4. यह परिभाषा आय, उत्पादन, रोजगार एवं आर्थिक विकास आदि समस्याओं को सम्मिलित कर अर्थशास्त्र के क्षेत्र को विस्तृत कर देती है।
5. क्योंकि अपने गतिशील रूप में चुनाव की समस्या सभी प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में उत्पन्न होती है, अतः यह परिभाषा सार्वभौमिक महत्व रखती है।

2.5 कौटिल्य अर्थशास्त्र की आर्थिक अवधारणाएँ (Economic Concept of Kautilya Arthshastra)

कौटिल्य का अर्थशास्त्र भारतीय आर्थिक विचारों का एक आलौकिक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ विष्णुगुप्त कौटिल्य द्वारा रचा गया था। कौटिल्य एक उच्च कोटि का विद्वान ब्राह्मण था। वह चन्द्रगुप्त मौर्य का मुख्यमंत्री तथा बड़ा ही कुशल राजनीतिज्ञ था। उनकी यह पुस्तक बड़ी विस्तृत है तथा अर्थशास्त्र के प्रत्येक पक्ष का विश्लेषण करती है। पुस्तक में गाँवों व शहरों की सरकारों, न्यायालयों, स्त्री अधिकारों, वृद्ध तथा आश्रितों के पालन पोषण, विवाह, तलाक, राजवित्त, थल सेना, नौ सेना, कूटनीति, कृषि, उद्योग आदि सभी विषयों के बारे में लिखा गया है। विष्णुगुप्त इस पुस्तक को विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित सभी प्राचीन ग्रन्थों का संग्रह मानते हैं।

कौटिल्य अर्थशास्त्र की प्रमुख आर्थिक अवधारणायें तथा उनका सार संक्षेप निम्न प्रकार है

1. **भौतिक धन की प्रकृति तथा उसके उद्देश्य (Nature of Material Wealth and Its Objectives)** - कौटिल्य ने धन को बहुत विस्तृत अर्थ में प्रयुक्त किया है तथा इसमें मुद्रा, सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत सम्पत्ति, बहुमूल्य धातुएँ, संचित निधि, विनिमय साध्य तथा हस्तांतरणीय वस्तुएँ शामिल करते हैं। उनके अनुसार इसमें चार गुण होने चाहिए जो हैं वास्तविकता, उपयोगिता, हस्तान्तरण तथा वितरण की शक्ति। धन को कण-कण करके प्राप्त किया जाना चाहिए। धन प्राप्ति के उन्होंने उद्देश्य भी बताये हैं तथा धन प्राप्ति के साधन भी बताये हैं। उन्होंने एक अच्छी स्त्री, अच्छे पुत्र अथवा अच्छे मित्र के पालन-पोषण अथवा धर्मार्थ दान के लिए धन प्राप्त किया जाता है तो इसे लाभदायक व उचित कहा है। धन प्राप्ति जीवन का लक्ष्य नहीं होता है बल्कि वह केवल जीवन के उद्देश्यों (पुरुषार्थों) की प्राप्ति का साधन है। धन लोगों की अकाल से भी रक्षा करता है।
2. **कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य (Agriculture, Animal Husbandary and Commerce)** - कौटिल्य ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि को सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। इससे हमें अनाज, पशुधन, वनों की उपज, सोना तथा स्वतन्त्र श्रम प्राप्त होता है। अन्य सब प्रकार के व्यवसाय कृषि के बाद आते हैं।
3. **सार्वजनिक वित्त सम्बन्धी विचार (Thought about Public Finance) -** कौटिल्य ने राज्य के कार्यों के सरल एवं निरन्तर संचालन में सार्वजनिक वित्त का विशेष महत्त्व माना है। अत: एक राजा

को कोषागार पर सदैव ध्यान देना चाहिए। कोषागार में पर्याप्त धन की प्राप्ति के लिए एक तरफ उन्होंने उद्योग, कृषि, मछलीपालन, खनिज तथा व्यापार में राज्य के द्वारा प्रत्यक्ष भाग लेने का समर्थन किया है वहीं उन्होंने करारोपण से पर्याप्त धन एकत्र करने की बात कही है। उन्होंने राज्य में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं पर कर लगाने, आयात-निर्यात पर कर लगाने तथा मालगुजारी से कर प्राप्त करने को कहा है। कर वर्ष में एक बार लगाया जाना चाहिए तथा यह अमीरों पर उनकी करदान क्षमता के अनुसार होना चाहिए। उन्होंने गृहकर, टोल टैक्स, पेड़ों व फलों पर कर तथा वस्तु करों का भी वर्णन किया है। सरकार को अपनी आय राष्ट्रीय प्रतिरक्षा, प्रशासनिक व्यय, सरकारी भण्डार गृहों पर व्यय तथा कीमती हीरे, जवाहरातों पर व्यय करने को कहा है तथा आवश्यकता होने पर राजा को ऋण लेने के सिद्धान्त को भी स्वीकृति दी है।

4. **श्रम की प्रतिष्ठा व महत्व (Prestige or Importance of Labour) -** कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में श्रम के महत्त्व को स्वीकार किया है तथा उनके अनुसार समाज में दास प्रथा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने न्यूनतम जीवन निर्वाह मजदूरी अवश्य देने की बात कही है। उन्होंने मजदूरों को अनुशासित रखने तथा श्रमिकों व मालिकों के मध्य झगड़ा निवारण के तरीकों का भी विश्लेषण किया है। उत्पादक क्रियाओं में स्त्रियों को काम पर लगाये जाने की कौटिल्य ने स्वीकृति दी है।
5. **व्यापार व कीमतों का नियमन (Regulation of Trade and Prices) -** कौटिल्य ने एक तरफ व्यापार के नियमन एवं विकास की बात कही है। व्यापार के विकास के लिए यातायात व संदेशवाहन के साधनों का विकास, भण्डार गृहों का विकास तथा धर्मशालाओं का निर्माण राज्य का कर्तव्य माना है वहीं राज्य को व्यापार तथा मूल्यों के नियन्त्रण का अधिकार दिया है। वाणिज्य अध्यक्षों की नियुक्ति की जाती थी जो स्थानीय वस्तुओं की कीमतों पर 5 प्रतिशत तथा बाहर से आने वाली वस्तुओं पर 10 प्रतिशत लाभ निर्धारित करते थे। अधिक कीमत पर बेचने वाले व्यापारियों पर जुर्माने की व्यवस्था थी।
6. **सामाजिक सुरक्षा व कल्याणकारी राज्य (Social Security and Welfare State) -** कौटिल्य ने कल्याणकारी राज्य का विचार प्रस्तुत किया है तथा उस काल में राज्य कार्यों को नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित किया था। प्रत्येक व्यक्ति की भुखमरी से सुरक्षा की जाती थी। मजदूरी की दरें न्याय तथा समानता के आधार पर निर्धारित की जाती थीं। वस्तुओं में मिलावट रोकने व सूदखोरी रोकने के नियम बने हुये थे।

राज्य का मार्गदर्शन करने के तीन सिद्धान्त थे :

प्रथम, सरकार द्वारा वे उद्योग चलाये जाने चाहिए जो राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता देते हों, **द्वितीय**, कृषि, सूत कातने, कपड़ा बुनने, पशुपालन आदि कार्य व्यक्तियों के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए और इनमें निजी सम्पत्ति को स्वीकार किया जाना चाहिए, तथा **तृतीय**, सरकार को यह देखना चाहिए कि उत्पादन, वितरण और उपभोग सम्बन्धी क्रियाएँ कुशलतापूर्वक चलें।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं :

i. प्राचीन भारत में अर्थशास्त्र का एक अलग विषय के रूप में अध्ययन नहीं किया जाता था बल्कि यह नीति-शास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र तथा राजनीति के साथ ही पढ़ा जाता था।
ii. कल्याणकारी राज्य का विचार भारतीय प्राचीन आर्थिक विचारों का केन्द्र था। राज्य को जनता की आर्थिक समृद्धि का केन्द्र माना जाता था। राज्य द्वारा माप व तौल का नियमन, मिलावट की रोक, शोषण की रोक व सूदखोरी के रोक के नियम बनाये जाते थे।
iii. प्राचीन भारत में लोगों की आर्थिक क्रियाओं व विचारों को नैतिक एवं धार्मिक आदर्शों द्वारा नियमित किया जाता था। धन जीवन का उद्देश्य नहीं बल्कि अच्छा जीवन जीने का एक साधन माना जाता था। लोगों को कड़ी मेहनत व साधारण जीवन जीने पर बल दिया जाता था।

2.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए –

1. वह अनुभूति जो किसी व्यक्ति को उस स्थिति में मिलती है जब उसे किसी चीज की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती उसे दुःख कहा जाता हैं।

(सत्य/ असत्य)

2. किसी व्यक्ति की वह अनुभूति जो किसी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति के बाद मिलती है उसे सन्तुष्टि कहा जाता है।

(सत्य/ असत्य)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. वास्तविक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध ..... (क्या होना चाहिए/ क्या हैं) से होता है।
2. आदर्श विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध ..... (क्या होना चाहिए/ क्या हैं) से होता है।
3. स्थैतिक अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें कि विभिन्न अंग उपभोग, उत्पादन, जनसंख्या, माँग पूर्ति आदि ..... (स्थिर/ अस्थिर) रहते हैं और उनमें परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नहीं होती।
4. प्रावैगिक अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें आर्थिक तत्व ..... (परिवर्तित/ स्थिर) होते रहते हैं।

2.7 सारांश (Summary)

इस इकाई में हमने जाना कि प्रो. जे. के. मेहता ने भारतीय संस्कृति तथा विचारों पर आधारित अर्थशास्त्र की आवश्यकता-विहीनता संबंधित परिभाषा दी है। प्रो. जे. के.मेहता के अनुसार, अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानवीय आचरण का आवश्यकता-विहीनता की अवस्था में पहुँचने के लिए साधन के रूप में अध्ययन है। मनुष्य को सुख तथा संतोष प्राप्त करने के लिए अपनी आवश्यकताओं को कम करते रहना चाहिए। प्रो रॉबिन्स ने मानव जीवन का लक्ष्य अधिकतम संतुष्टि माना जबकि प्रो मेहता ने वास्तविक सुख की कल्पना की है। जहाँ प्रो. रॉबिन्स अधिक से अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर बल देती है वहीं प्रो. मेहता आवश्यकताओं को धीरे धीरे कम करके अंततः समाप्त करने पर बल देते है। प्रो. रॉबिन्स का दृष्टिकोण भौतिकवाद पर आधारित है तो प्रो. मेहता का दृष्टिकोण अध्यात्मवाद पर आधारित है। विकास केन्द्रित परिभाषा में आधुनिक अर्थशास्त्री आर्थिक समस्या को प्रावैगिक मानते है। बेनहम के अनुसार, अर्थशास्त्र उन तत्वों का अध्ययन है जो रोजगार और जीवन स्तर को प्रभावित करते है। प्रो सैम्युलसन के अनुसार, अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति तथा समाज वैकल्पिक प्रयोग वाले उत्पादन के सीमित साधनों का चुनाव, एक समयावधि में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में लगाने और उनको वर्तमान तथा भविष्य के मध्य एवं समाज के विभिन्न वर्गों में बांटने के लिए किस प्रकार उपयोग करता है; चाहे वह ऐसा मुद्रा के माध्यम से करे अथवा इसके बिना ही करे इस प्रकार यह शास्त्र साधनों के आबंटन के स्वरुप में सुधार करने की लागतों एवं लाभों का विश्लेषण करता है। कौटिल्य अर्थशास्त्र भारतीय आर्थिक विचारों का एक अलौकिक ग्रन्थ है जो अर्थशास्त्र के प्रत्येक पक्ष का विश्लेषण करती है। इसमें गावों व शहरों की सरकारों, न्यायालयों, स्त्री अधिकारों, कृषि, उद्योगों, राजवित्त, सेना, कूटनीति आदि सभी विषयों के बारे में लिखा है। कौटिल्य ने राज्य का मार्गदर्शन करने के लिए तीन सिद्धांत दिए- पहला, सरकार को वे उद्योग चलाए जाने चाहिए जो राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो, दूसरा, कृषि, सूत कातने, कपड़ा बुनने, पशुपालन आदि कार्य व्यक्तियों के लिए छोड़ने तथा इनमे निजी संपत्ति को स्वीकार किया जाना चाहिए, तीसरा, सरकार को उत्पादन, वितरण और उपभोग सम्बन्धी क्रियाओं के सुचारू क्रियान्वयन पर ध्यान देना चाहिए।

2.8 शब्दावली (Glossary)

- **सुख (Happiness) -** वह अनुभूति हैं जो किसी व्यक्ति को उस स्थिति में मिलती है जब उसे किसी चीज की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती।
- **सन्तुष्टि (Satisfaction)** - किसी व्यक्ति की वह अनुभूति जो किसी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति के बाद मिलती है उसे सन्तुष्टि कहा जाता है।

- **स्थैतिक (Static)** - स्थैतिक से तात्पर्य उस स्थिति से है जहां किसी भी गति/परिवर्तन का अभाव होता है।
- **प्रावैगिक (Dynamic) -** प्रावैगिक से तात्पर्य उस स्थिति से है जहां आर्थिक तत्व स्थिर ना रहकर परिवर्तित होते रहते हैं।
- **वास्तविक विज्ञान (Positive Science)** - किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध 'क्या हैं' से होता है। यह किसी घटना के 'कारण' तथा 'परिणामों' का अध्ययन करता है।
- **आदर्श विज्ञान (Normative Science)** - किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध 'क्या होना चाहिए' से होता है।
- **स्थैतिक अर्थव्यवस्था (Static Economy) -** यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें कि विभिन्न अंग उपभोग, उत्पादन, जनसंख्या, माँग पूर्ति आदि स्थिर रहते हैं और उनमें परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नहीं होती।
- **प्रावैगिक अर्थव्यवस्था (Dynamic Economy) -** यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें आर्थिक तत्व स्थिर ना रहकर परिवर्तित होते रहते हैं।

2.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. असत्य 2. सत्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. क्या हैं 2. क्या होना चाहिए 3. स्थिर 4. परिवर्तित

2.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण,*** शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

2.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics,*** Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

2.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. प्रो.जे.के. मेहता द्वारा दी गयी अर्थशास्त्र की परिभाषा की पूर्ण विवेचना कीजिए। रॉबिन्स की परिभाषा से इसकी तुलना कीजिए।
2. विकास केन्द्रित परिभाषाओं को स्पष्ट कीजिए।
3. कौटिल्य के अर्थशास्त्र की अवधाराणाओं को विस्तार से समझाए।

इकाई- 3 अर्थशास्त्र का क्षेत्र
(Scope of Economics)

3.1 प्रस्तावना (Introduction)
3.2 उद्देश्य (Objectives)
3.3 अर्थशास्त्र की विषय सामग्री (Subject Matter of Economics)
3.4 अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)
3.4.1 क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है? (Is Economics a Science?)
3.4.2 क्या अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है या एक आदर्श विज्ञान? (Is Economics a Positive Science or a Normative Science?)
3.4.3 क्या अर्थशास्त्र एक कला है? (Is Economics an Art?)
3.5 अर्थशास्त्र का महत्व (Importance of Economics)
3.6 अर्थशास्त्र की सीमाएं (Limitations of Economics)
3.7 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)
3.8 सारांश (Summary)
3.9 शब्दावली (Glossary)
3.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)
3.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)
3.12 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)
3.13 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

इससे पूर्व की इकाइयों में आपने अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाओं को समझा। इस इकाई के अंतर्गत आप अर्थशास्त्र की विषय सामग्री और प्रकृति को जानेंगे। आप यह भी जान पाएँगे की अर्थशास्त्र एक विज्ञान है या कला? और विज्ञान में भी यह वास्तविक विज्ञान है या आदर्शात्मक विज्ञान? इसके साथ ही आप अर्थशास्त्र के महत्त्व और सीमाओं का अध्ययन करेंगे तथा अगली इकाई में अर्थशास्त्र का अन्य विज्ञानों से संबंध को जानेंगे।

अर्थशास्त्र के क्षेत्र से आशय इस बात की जानकारी करना है कि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किन-किन बातों का अर्थात् किस प्रकार की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। कीन्स के मतानुसार अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत तीन विषयों को शामिल किया जाता है पहला, अर्थशास्त्र को विषय-सामग्री, दूसरा अर्थशास्त्र की प्रकृति या स्वभाव और तीसरा अर्थशास्त्र का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध।

3 .2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- ✓ अर्थशास्त्र की विषय सामग्री से अवगत होंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की प्रकृति को समझ सकेंगे।
- ✓ यह जान पाएँगे की क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है?
- ✓ यह जान पाएँगे कि अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है या आदर्शात्मक विज्ञान?
- ✓ यह जान पाएँगे की अर्थशास्त्र एक कला है?
- ✓ अर्थशास्त्र के महत्त्व को समझ सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की सीमाओं को समझ सकेंगे।

3.3 अर्थशास्त्र की विषय सामग्री (Subject Matter of Economics)

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों की दृष्टि में अर्थशास्त्र धन प्राप्त करने तथा उसे व्यय करने से सम्बंधित क्रियाओं का अध्ययन था। उन्होंने 'धन' को अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु माना। नव-परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को भौतिक कल्याण का शास्त्र माना जबकि आधुनिक विचाओं के अनुसार अर्थशास्त्र 'सीमितता' का विज्ञान है। दृष्टिकोण में व्यापक भिन्नता होते हुए भी सभी अर्थशास्त्री यह स्वीकार करते हैं कि अर्थशास्त्र मानव व्यवहार के आर्थिक पहलुओं का अध्ययन है।

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का अर्थ यह है कि हम अर्थशास्त्र में किन-किन विषयों का अध्ययन करते हैं। अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री संबंधी संकेत इसकी परिभाषाओं में मिलते हैं जिनका अध्ययन आपने प्रथम एवं द्वितीय इकाईयों में किया है। इनकी परिभाषाओं में अंतर के कारण अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु में भी अंतर पाया जाता है। इस सम्बन्ध में मुख्यतः परम्परावादी, कल्याणवादी, रॉबिन्स एवं आधुनिक दृष्टिकोण हैं।

एडम स्मिथ तथा अन्य **परम्परावादी** अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है। अर्थशास्त्र में धन से सम्बन्धित क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री धन के उपभोग, उत्पादन, विनिमय और वितरण सम्बन्धी क्रियाओं तक सीमित है। **मार्शल** तथा अन्य **कल्याणवादी** अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र में सामाजिक व्यक्ति की उन क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनका सम्बन्ध भौतिक कल्याण के लिए धन की प्राप्ति और उसके उचित उपभोग से है। **रॉबिन्स** ने अर्थशास्त्र को 'दुर्लभता का विज्ञान' माना है। इस सम्बन्ध में उनका विचार है कि मानवीय आवश्यकताएँ असीमित होती हैं और उनको सन्तुष्ट करने के साधन दुर्लभ होते हैं और वे वैकल्पिक प्रयोगों वाले हैं। साधनों की दुर्लभता के साथ-साथ चुनाव की समस्या उत्पन्न होती है। दुर्लभ साधनों से सभी आवश्यकताओं को पूरा करना असम्भव होता है, इसलिए चुनाव करना पड़ता है। अधिक तीव्र आवश्यकताओं को पहले पूरा किया जाता है, उसके बाद कम महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को। चुनाव करने के लिए मूल्यांकन करना पड़ता है। मूल्यांकन से

उपभोक्ता को ज्ञान होता है कि साधनों का प्रयोग किस प्रकार सबसे उत्तम रूप में किया जाए। अत: दुर्लभ साधनों का प्रयोग, चुनाव तथा कीमत- निर्धारण ही अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री के प्रमुख अंग हैं। **आधुनिक** अर्थशास्त्रियों के अनुसार मनुष्य अपनी असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयत्न करता है। प्रयत्न करने पर मनुष्य धन कमाता है, जिससे वस्तुएँ प्राप्त करके वह अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है। परन्तु एक आवश्यकता पूरी होते ही तुरन्त दूसरी आवश्यकता महसूस होने लगती है और आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की समस्या निरन्तर बनी रहती है। इस प्रकार आवश्यकता, प्रयत्न, धन और सन्तुष्टि का आर्थिक चक्र निरन्तर चलता रहता है। आर्थिक चक्र के अन्तर्गत मनुष्य जो क्रियाएँ करता है वही अर्थशास्त्र की वास्तविक विषय-सामग्री है।

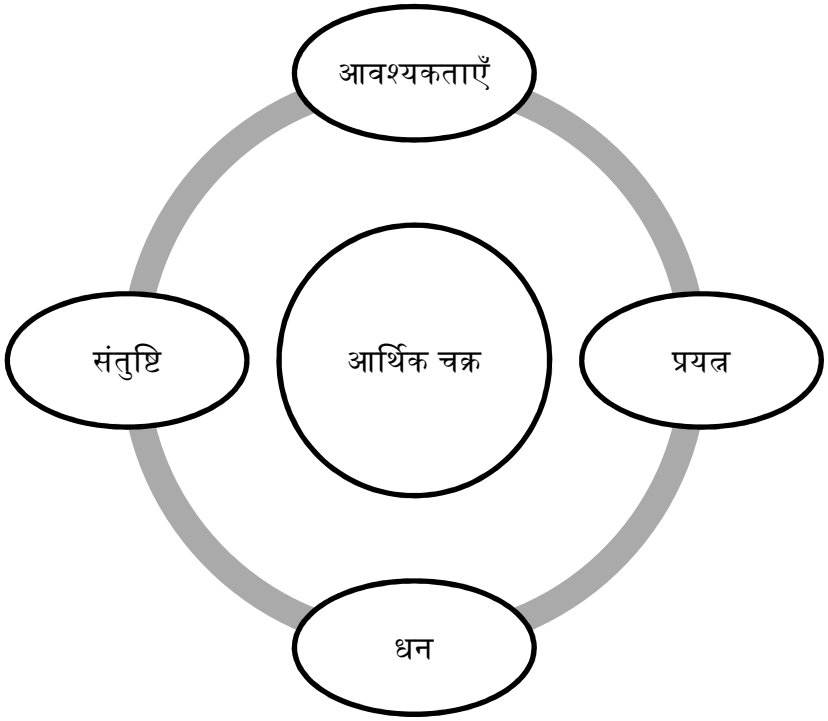

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री की व्याख्या एक अन्य ढंग से भी की जा सकती है जिसको निम्नांकित चार्ट के माध्यम से हम संक्षेप में प्रदर्शित कर सकते है।

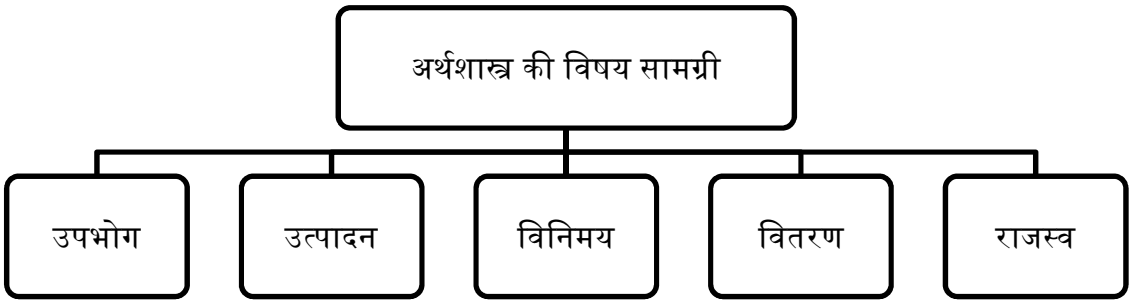

उपभोग अर्थशास्त्र के अध्ययन का प्रमुख विषय है इसे आर्थिक क्रिया का अन्त कहा जाता है। उपभोग का अर्थ मनुष्य की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए वस्तुओं व सेवाओं को उपयोग से होता है। जबकि उत्पादन का अर्थ किसी वस्तु या सेवा में उपयोगिता का सृजन करना होता है। उत्पादन के बिना उपभोग संभव नहीं है। स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र के अर्न्तगत उत्पादन का तात्पर्य किसी वस्तु में उपयोगिता का सृजन करना है और उपभोग उस उपयोगिता का विनाश कहलाता है। उपभोग के अर्न्तगत मानवीय आवश्यकताओं की उत्पत्ति, प्रकृति, संतुष्टि और इससे सम्बन्धित नियमों का अध्ययन किया जाता है जबकि

उत्पादन के अर्न्तगत उत्पादन के विभिन्न साधनों (भूमि, श्रम, पूंजी तथा साहस तथा उत्पति) के नियमों आदि का अध्ययन किया जाता है।

समाज में प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की सभी वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति किसी एक ही वस्तु का उत्पादन कर अतिरिक्त वस्तु को दूसरे से आदान-प्रदान करता है। इस प्रकार की क्रिया **विनिमय** कहलाती है जिसके अर्न्तगत मूल्य निर्धारण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। उत्पादन के साधनों के सहयोग से उत्पादन होता है और उत्पादन को पुनः इन्हीं साधनों के मध्य वितरण करना पड़ता है। **वितरण** के अर्न्तगत हम यह अध्ययन करते है कि उत्पादन के साधनों का प्रतिफल किस प्रकार से निश्चित किया जाता है। अर्थशास्त्र की **राजस्व** शाखा के अर्न्तगत सरकार के आय-व्यय व राज्य के आर्थिक क्रियाओं का वर्णन किया जाता है। इसके अर्न्तगत कृषि, उद्योग, यातायात, अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार, आय व्यय, सार्वजनिक ऋण तथा वित्तीय प्रशासन का अध्ययन किया जाता है।

3.4 अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)

अर्थशास्त्र में इसकी प्रकृति को जानने के लिए इसके अंतर्गत निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों का अध्ययन किया जाता है। पहला प्रश्न यह है कि 'क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है?' दूसरा प्रश्न यह है कि 'अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है या आदर्शात्मक विज्ञान?' और तीसरा प्रश्न यह है कि 'क्या अर्थशास्त्र एक कला है?' आइए इन प्रश्नों का विस्तार से अध्ययन करे और यह जानने का प्रयास करे कि अर्थशास्त्र कला है या विज्ञान और विज्ञान है तो यह वास्तविक विज्ञान है या आदर्शात्मक विज्ञान।

3.4.1 क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है? (Is Economics a Science?)

अर्थशास्त्र विज्ञान है या नहीं, यह जानने के लिए सर्वप्रथम हमें विज्ञान का अर्थ समझ लेना चाहिए।

विज्ञान का अर्थ- ***"विज्ञान किसी भी विषय के क्रमबद्ध अध्ययन को कहते हैं जिसमें किसी भी तथ्य विशेष के सम्बन्ध में कारण एवं परिणाम के सम्बन्ध को व्यक्त किया जाता है। (Science is a systematic study of knowledge concerning the relationship between cause and effect of a particular phenomenon.)"***

विज्ञान की इस परिभाषा के आधार पर हम कह सकते है कि विज्ञान में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं

1. विज्ञान एक क्रमबद्ध अध्ययन होता है।
2. विज्ञान के अपने नियम होते हैं।
3. विज्ञान के नियम, कारण और परिणाम में सम्बन्ध व्यक्त करते हैं।
4. विज्ञान के नियम सार्वभौमिक सत्यता के होते हैं।

अर्थशास्त्र एक विज्ञान है क्योंकि इसमें विज्ञान की उपर्युक्त सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं। जिनका विवरण इस प्रकार है-

1. **क्रमबद्ध अध्ययन (Systematic Study)** - अर्थशास्त्र में सभी आर्थिक क्रियाओं का क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है।
2. **आर्थिक नियम (Economic Laws)-** अन्य विज्ञानों की भाँति अर्थशास्त्र के भी अपने कुछ नियम हैं। जैसे कि माँग व पूर्ति का नियम, उपभोग के नियम, उत्पादन के नियम आदि ।
3. **कारण और परिणाम में सम्बन्ध (Relation between Cause and Effect)-** अर्थशास्त्र के नियम, कारण और परिणाम में आपसी सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। जैसे कि माँग के नियम के अनुसार कीमत के कम होने से माँग बढ़ती है। इसमें कीमत का कम होना **कारण** है और माँग का बढ़ना **परिणाम** है।

4. **सार्वभौमिक सत्यता (Universality)**- कुछ आर्थिक नियम सार्वभौमिक सत्यता के हैं अर्थात् वे प्रत्येक मानव तथा स्थान पर समान रूप से लागू होते हैं। जैसे- ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम (Law of Diminishing Marginal Utility), ह्रासमान प्रतिफल का नियम (Law of Decreasing Returns) आदि।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र विज्ञान है क्योंकि इसमें विज्ञान की सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं।

प्रो. रॉबिन्स (Robbins) व उनके समर्थक अर्थशास्त्र को एक विज्ञान मानते हैं। **प्रो. ब्रिग्ज़ तथा जोर्डन** (Briggs and Jordon) के अनुसार ***"अर्थशास्त्र के नाम की उत्पत्ति ही इस बात से हुई है कि यह विज्ञान है। (Economic derives its name from the fact that it is a Science)"*** **रॉबर्टसन** (Robertson) ने भी अर्थशास्त्र को विज्ञान ठहराते हुए कहा है कि ***"अर्थशास्त्र के अंग्रेज़ी रूपान्तर 'Economics' का अन्तिम शब्द 'ics' होना इस बात का प्रमाण है कि हमारा अध्ययन Physics या Dynamics आदि की तरह एक विज्ञान है अथवा विज्ञान होना चाहता है। (The termination 'ics' indicates that our study is or aspires to be a science like physics, dynamics and so forth.)"***

अर्थशास्त्र विज्ञान नहीं है। इस संबंध में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं :

1. अर्थशास्त्रियों में मतभेद पाया जाता है। विचारों में भिन्नता के कारण अर्थशास्त्र में अनिश्चितता आ जाती है जबकि वैज्ञानिक नियम तो सदैव निश्चित होते हैं।
2. अर्थशास्त्र में भौतिक विज्ञानों की भाँति प्रयोग सम्भव नहीं होते।
3. अर्थशास्त्र में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। इसका कारण यह है कि अर्थशास्त्र मानव-व्यवहार का अध्ययन करता है और मानव-व्यवहार विभिन्न परिस्थितियों में बदलता रहता है।
4. जिन आँकड़ों के आधार पर अर्थशास्त्र के निष्कर्ष निकाले जाते हैं। वे निश्चित एवं स्थिर नहीं होते बल्कि उनमें परिवर्तन होते रहते हैं।
5. अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं का मुद्रा रूपी मापदण्ड कोई विश्वसनीय मापक नहीं है क्योंकि मुद्रा के अपने मूल्य में ही परिवर्तन होता रहता है।

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अर्थशास्त्र को विज्ञान न मानने के सन्दर्भ में जो तर्क प्रस्तुत किए गए हैं वे कोई विशेष नहीं हैं। वास्तव में अर्थशास्त्र एक विज्ञान है। अधिक-से-अधिक हम यह कह सकते हैं कि यह अधिक निश्चित नहीं है। मार्शल के अनुसार, ***"जिस प्रकार रसायन-शास्त्री की सूक्ष्म तुलना ने रसायन-शास्त्र को दूसरे विज्ञानों से अधिक निश्चित बना दिया है, उसी प्रकार अर्थशास्त्री के मुद्रा रूपी मापदण्ड ने अर्थशास्त्र को अन्य सामाजिक विज्ञानों से अधिक निश्चित बना दिया है।"***

अतः अर्थशास्त्र के विज्ञान न होने के विरुद्ध दिए गए तर्क ठीक नहीं हैं। वास्तव में अर्थशास्त्र एक विज्ञान है।

3.4.2 क्या अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है या एक आदर्श विज्ञान? (Is Economics a Positive Science or a Normative Science?)

यह जान लेने के पश्चात् कि अर्थशास्त्र एक विज्ञान है एक अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि अर्थशास्त्र किस प्रकार का विज्ञान है? विज्ञान दो प्रकार का होता है एक वास्तविक विज्ञान दूसरा आदर्शात्मक विज्ञान। अतः अब यह जानना जरूरी है कि अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है या आदर्शात्मक विज्ञान। अर्थशास्त्रियों में इस सम्बन्ध में भी मतभेद हैं। कुछ अर्थशास्त्री इसे केवल एक वास्तविक विज्ञान मानते हैं जबकि कुछ अन्य अर्थशास्त्री इसे वास्तविक तथा आदर्शात्मक दोनों मानते हैं। अतः अब हम इन दोनों तरह की विचारधाराओं का अध्ययन करेंगे।

अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान के रूप में (Economics as a Positive Science)

"वास्तविक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध 'क्या है' से होता है। (A positive science may be defined as a study of systematised knowledge concerning what is?)" इसमें हम क्या है, क्यों है, कैसे है? आदि प्रश्नों का उत्तर देते हैं। वास्तविक विज्ञान का सम्बन्ध 'क्या होना चाहिए' से नहीं होता। इसमें हम वास्तविक स्थिति का अध्ययन करते हैं। वास्तविक विज्ञान किसी घटना के 'कारण' तथा 'परिणामों' का अध्ययन करता है।

रॉबिन्स, सीनियर, वालरस आदि अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान है। **रॉबिन्स** (Robbins) के अनुसार, ***"अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति तटस्थ है। (Economics is neutral between ends.)"*** उनके विचार में अर्थशास्त्र का नीतिशास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं। इसमें उचित-अनुचित का कोई प्रश्न नहीं उठता। इसी सम्बन्ध में **सीनियर** (Senior) का कहना है कि ***"अर्थशास्त्री सलाह का एक शब्द भी नहीं जोड़ सकता। (The economist could not add even one word of advice.)"*** **रॉबिन्स** ने इसे और स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ***"अर्थशास्त्री का कार्य खोज और व्याख्या करना है, उसका कार्य समर्थन या आलोचना करना नहीं। (The function of an economist is to explain and explore, not to advocate or condemn.)"***

प्रो. रॉबिन्स तथा उनके समर्थक अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित तर्क देकर अर्थशास्त्र को एक वास्तविक विज्ञान माना है :

1. **तर्क पर आधारित (Based on Logic)-** प्रो. रॉबिन्स तथा उनके समर्थकों के अनुसार विज्ञान का आधार तर्क होता है। अर्थशास्त्र के नियम तर्क पर आधारित होते हैं। जैसे किसी वस्तु की माँग बढ़ने पर तर्क के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कीमत में वृद्धि होगी परन्तु फिर निर्धन व्यक्तियों की दृष्टि से कीमतों में वृद्धि होनी चाहिए अथवा नहीं, यह बात अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र से बाहर है।
2. **श्रम-विभाजन पर आधारित (Based on Division of Labour)-** आदर्शों का वर्णन करने का कार्य वस्तुत: नीतिशास्त्र का है। अत: 'क्या करना चाहिए, क्या नहीं? क्या वांछनीय है, क्या अवांछनीय?' आदि के निर्णय नीतिशास्त्रियों पर छोड़ देने चाहिए। अर्थशास्त्र में श्रम-विभाजन का सिद्धान्त यह माँग करता है कि अर्थशास्त्री इस बात का उत्तर दे की 'श्रम-विभाजन का सिद्धान्त क्या है?' और नीतिशास्त्री इस बात का उत्तर दे की 'श्रम-विभाजन का सिद्धान्त क्या होना चाहिए?'।
3. **भ्रम का डर (Fear of Confusion)-** यदि अर्थशास्त्र में वास्तविक और आदर्श दोनों पहलुओं को मिला दिया गया तो इससे भ्रामक स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। लोगों द्वारा अर्थशास्त्रियों को गलत समझे जाने की संभावना बढ़ जाएगी। उदाहरण के लिए सन्तुलन मजदूरी दर को यदि आदर्श मजदूरी-दर समझ लिया गया तो यह बहुत बड़ी भूल होगी। इस भ्रम से बचने के लिए अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान माना जाना चाहिए।
4. **अर्थशास्त्र की प्रगति में बाधा (Obstacle in the progress of Economics)** - यदि अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान तक ही सीमित नहीं रखा गया तो इसकी प्रगति रुक जाएगी। 'क्या है?' इस प्रश्न के संबंध में अर्थशास्त्रियों के बीच आम सहमति पाई जाती है और अर्थशास्त्र की प्रगति बहुत तेजी से होगी। इसके विपरीत अर्थशास्त्र का अध्ययन यदि वास्तविक तथा आदर्श दोनों रूपों में किया गया तो यह अर्थशास्त्रियों के मतभेदों के जंजाल में फँस जाएगा और इसकी प्रगति रुक जाएगी।

5. **संतुलन का तर्क (Equilibrium Argument)-** संतुलन के आधार पर अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है। संतुलन तो केवल संतुलन है, उसमें वांछनीयता एवं अवांछनीयता का लेशमात्र भी अंश नहीं होता। अत: अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान मानना ही उचित है।
6. **अधिक तटस्थता (More Neutrality)-** यदि अर्थशास्त्री को दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं -पहला 'क्या है?' दूसरा 'क्या होना चाहिए?' तो जब वह प्रथम प्रश्न का उत्तर देता है तो वह मात्र तथ्यों की व्याख्या करेगा लेकिन जब वह दूसरे प्रश्न का उत्तर देता है तो वह तथ्यों को अपने विचारानुसार प्रस्तुत करेगा। ऐसे में स्थिति की सही जानकारी नहीं मिल पायेगी। अत: अर्थशास्त्री केवल तटस्थ तभी रह सकेगा जब उसका संबंध केवल प्रथम प्रश्न से हो।

अर्थशास्त्र एक आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में (Economics as a Normative Science)

अनेक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जैसे-मार्शल, पीगू, हाट्रे आदि अर्थशास्त्र को आदर्शात्मक विज्ञान मानते हैं। उनके विचार में, ***"अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति तटस्थ नहीं है। (Economics is not neutral between ends.)"***

"आदर्शात्मक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध 'क्या होना चाहिए?' से होता है। (A normative science is a study of systematised knowledge concerning what ought to be.)" आदर्श विज्ञान 'क्या है?' के साथ-साथ 'क्या होना चाहिए?' की भी व्याख्या करता है। यह अच्छे-बुरे की परख करता है और उचित-अनुचित में भी अन्तर बतलाता है साथ ही लक्ष्य निर्धारित करता है और उन्हें प्राप्त करने का सुझाव भी देता है।

इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र केवल वास्तविक स्थिति का ही अध्ययन नहीं करता बल्कि आदर्श भी स्थापित करता है। **हाट्रे** (Hawtrey) के अनुसार, ***"अर्थशास्त्र को नीतिशास्त्र से पृथक नहीं किया जा सकता। (Economics cannot be separated from Ethics.)"*** अर्थशास्त्री को वास्तविक जगत की समस्याओं के सम्बन्ध में अपना मत देना ही होगा। उसे यह बताना होगा कि उचित मज़दूरी की दर क्या होनी चाहिए। देश का आर्थिक विकास किस प्रकार होना चाहिए? देश में से गरीबी कैसे दूर हो? आज विभिन्न आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में अर्थशास्त्री अपनी अन्तिम राय भी देता है। एक अर्थशास्त्री अवश्य चाहेगा कि एक ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमें अधिक-से-अधिक लोग अधिकतम आनन्द व सुख का जीवन यापन कर सकें। **फ्रेज़र** (Fraser) के अनुसार, ***"वह अर्थशास्त्री, जो केवल अर्थशास्त्री ही है, एक सुंदर किन्तु मूक मछली की भाँति ही है। (An economist, who is only an economist is a poor, pretty fish.)"***

अर्थशास्त्र के आदर्शात्मक विज्ञान होने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं।

1. **अधिक यथार्थवादी विचार (More Ideal View point)-** प्राचीन काल से लेकर अब तक के सभी अर्थशास्त्री अपने-अपने समय की आर्थिक प्रणालियों अथवा व्यवस्था की अच्छाई व बुराई के बारे में विचार प्रकट करते रहे हैं। उदाहरण के लिए मार्शल ने उन विधियों की चर्चा की जिनसे निर्धनता को रोका जा सकता है। आधुनिक अर्थशास्त्री कीन्स ने भी बेरोजगारी को दूर करने के लिए 'नवीन अर्थशास्त्र (New Economics)' की रचना की थी।
2. **कल्याणवादी अर्थशास्त्र (Welfare Economics) -** वर्तमान समय में कल्याणवादी अर्थशास्त्र का विकास बहुत तेजी से हो रहा है। हम सदैव इस चिन्ता में रहते हैं कि आर्थिक विकास किस प्रकार किया जाए। इस समस्या का समाधान तभी सम्भव है जब अर्थशास्त्र को आदर्श विज्ञान मान लिया जाए।

3. **मनुष्य तार्किक ही नहीं बल्कि भावुक भी होता है (Man is not always Logical but he is Sentimental also)-** मनुष्य प्रत्येक कार्य न केवल तर्क के आधार पर करता है, बल्कि उसके व्यवहार पर भावनाओं का भी बहुत प्रभाव पड़ता है। आदर्शात्मक पक्ष के द्वारा ही मनुष्य की भावनाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
4. **अधिक उपयोगी (More Useful)-** यदि हम अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान मानेंगे तो यह हमारे लिए उपयोगी नहीं रह जाएगा बल्कि एक नीरस एवं अरुचिकर विषय बन जाएगा। अर्थशास्त्र उपयोगी तभी बन सकेगा जब वह हमारे ज्ञान में वृद्धि के अलावा हमें फल देना भी प्रदान करेगा। इस संबंध में **पीगू** (Pigou) ने कहा है, ***"अर्थशास्त्र ज्ञानदायक ही नहीं, अपितु फलदायक भी है।"*** इस संदर्भ में **हाट्रे** (Hawtrey) का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि ***"यदि अर्थशास्त्र में से आदर्शवादी पहलू को निकाल दिया जाए, तो इसके अध्ययन की उपयोगिता उसी प्रकार से जाती रहेगी जिस प्रकार से शेक्सपियर के 'हैमलेट' नाटक की उपयोगिता उसके नायक 'हैमलेट' को निकाल देने से चली जाएगी।"***
5. **'संतुलन केवल संतुलन' का तर्क सही नहीं (Wrong Argument of 'Equilibrium is Equilibrium')-** प्रो. रॉबिन्स (Robbins) का यह तर्क कि 'संतुलन केवल संतुलन है' व्यावहारिक नहीं है। उदाहरण के लिए भारत में मजदूरी की दर माँग व पूर्ति के संतुलन से तय की गई है जो बहुत कम है। प्रो. रॉबिन्स के अनुसार, ***"मज़दूरी की दर को बढ़ाने के लिए सरकार को कोई कदम नहीं उठाने चाहिए, क्योंकि यह 'संतुलन मज़दूरी है।"*** उनका यह मानना गलत होगा। वास्तव में अर्थशास्त्री श्रमिकों को उनका राष्ट्रीय आय में उचित हिस्सा दिलवाने की भी बात करते हैं जो 'आदर्श विज्ञान' का सूचक है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र वास्तविक तथा आदर्श विज्ञान दोनों ही है। फ्रेज़र, हैण्डरसन तथा अन्य आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार वर्तमान समय में आर्थिक विकास की समस्याएँ अर्थशास्त्र का केन्द्र-बिन्दु बन गई हैं इसलिए अर्थशास्त्र के आदर्शात्मक पहलू की उपेक्षा नहीं की जा सकती। **प्रो. वेगनर** (Wagner) ने इस संबंध में ठीक ही कहा है कि ***"अर्थशास्त्र एक वास्तविक तथा आदर्शात्मक दोनों प्रकार का विज्ञान है।"***

3.4.3 क्या अर्थशास्त्र एक कला है ? (Is Economics an Art?)

क्या अर्थशास्त्र एक कला है? इस सम्बन्ध में कोई निर्णय लेने से पहले यह जानना आवश्यक हो जाता है कि कला किसे कहते हैं?

कला का अर्थ- ***"किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग 'कला' कहलाता है। (Art is the practical application of knowledge for achieving definite ends.)"*** **कीन्स** (Keynes) के अनुसार, ***"निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने की विधि ही कला है। (An art is a system of rules for the attainment of given ends.)"*** बहुत-से अर्थशास्त्री कला को 'व्यावहारिक विज्ञान' मानते हैं। उनके विचार में ***"विज्ञान हमें 'ज्ञान' देता है और कला हमें 'करना' सिखाती है। (Science teaches us to know, Art teaches us to do.)"***

कला हमारी समस्याओं का समाधान करती है अर्थात् कला का सम्बन्ध किसी कार्य को करने के सर्वोत्तम ढंग से होता है। जो अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को कला नहीं मानते उनका कहना है कि अर्थशास्त्र एक विज्ञान है और इसे विज्ञान ही रहना चाहिए। बहुत से अर्थशास्त्री, अर्थशास्त्र को कला मानते हैं उनके विचार में बहुत-सी समस्याएँ शुद्ध आर्थिक समस्याएँ होती हैं। अत: एक अर्थशास्त्री ही उनका समाधान बता सकता है। अर्थशास्त्री एक कला के रूप में बतला देता है कि लगान, मज़दूरी व ब्याज की उचित तथा आदर्श दर निर्धारित करने के लिए किन-किन साधनों व उपायों का प्रयोग करना चाहिए। देश की निर्धनता को दूर

करने के लिए क्या काम करना चाहिए। देश में आय का समान बँटवारा कैसे किया जा सकता है? लोगों का जीवन-स्तर कैसे ऊँचा उठाया जाए? वस्तुओं की कीमतों को स्थिर रखने के लिए किन-किन तरीकों को अपनाया जाए? अर्थशास्त्र यह भी मार्ग-दर्शन करता है कि देश में योजना कैसे बननी चाहिए और सरकार को अपनी आय कैसे खर्च करनी चाहिए। इस प्रकार अर्थशास्त्र हमारी व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता करता है। अत: अर्थशास्त्री केवल सिद्धान्त बनाने वाला ही नहीं होता बल्कि 'सिद्धान्तों का प्रयोग करने वाला' भी होता है। स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र एक विशुद्ध विज्ञान ही नहीं बल्कि कला भी है।

3.5 अर्थशास्त्र का महत्व

अर्थशास्त्र के महत्व को स्पष्ट करते हुए **डरविन** कहते है कि अर्थशास्त्र आज के युग का बौद्धिक धर्म है। मार्शल के अनुसार "***अर्थशास्त्र के अध्ययन का प्रथम उद्देश्य ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा उद्देश्य व्यावहारिक जीवन में मार्गदर्शन करना है।***" अर्थशास्त्र के अध्ययन के दोनों (सैद्धान्तिक व व्यावहारिक) महत्व है।

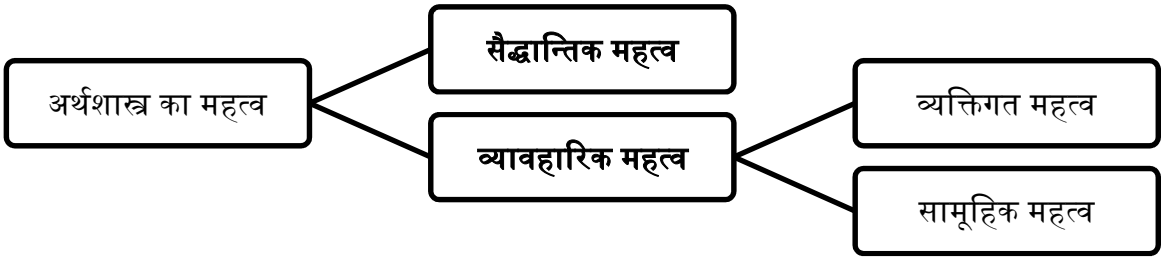

सैद्धान्तिक महत्व के अर्न्तगत इसके अध्ययन से अनेक आर्थिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है। यही नहीं अर्थशास्त्र के अध्ययन से मानव मस्तिष्क में तर्क, अवलोकन, विश्लेषण एवं विवेक शक्ति का विकास होता है।

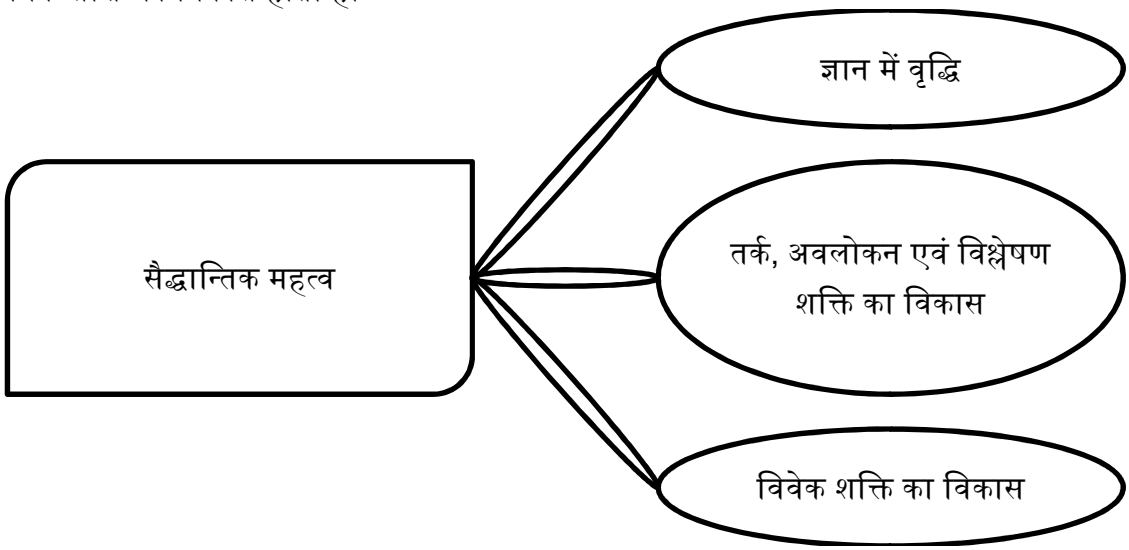

अर्थशास्त्र के अध्ययन के निम्नलिखित सैद्धान्तिक महत्व हैं-

1. **ज्ञान में वृद्धि एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विस्तार (Increase in knowledge and broadening and scientific outlook)-** अर्थशास्त्र के अध्ययन से मनुष्य को उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा राजस्व से संबंधित अनेक बातों, नियमों तथा सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त होता है। उसे देश की अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार उनका दृष्टिकोण विस्तृत एवं वैज्ञानिक हो जाता है।

2. **तर्क, अवलोकन एवं विश्लेषण शक्ति का विकास (Development of logic, observation and analytical power) -** अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिये निगमन प्रणाली के प्रयोग से मनुष्य की तर्क शक्ति का विकास होता है और आगमन प्रणाली के प्रयोग से मनुष्य की निरीक्षण, अवलोकन और विश्लेषण शक्ति का विकास होता है।
3. **विवेक शक्ति का विकास (Development of discretion) -** आर्थिक सामग्री की प्रचुरता और विविधता के कारण मनुष्य को सही और गलत में अंतर करने के लिए सोचना पड़ता है, जिससे मनुष्य में विचार शक्ति, विवेक शक्ति और निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है।

अर्थशास्त्र के अध्ययन का **व्यावहारिक महत्व** भी है। अर्थशास्त्र के अध्ययन से होने वाले व्यावहारिक लाभों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- पहला व्यक्तिगत लाभ तथा दूसरा सामूहिक लाभ।

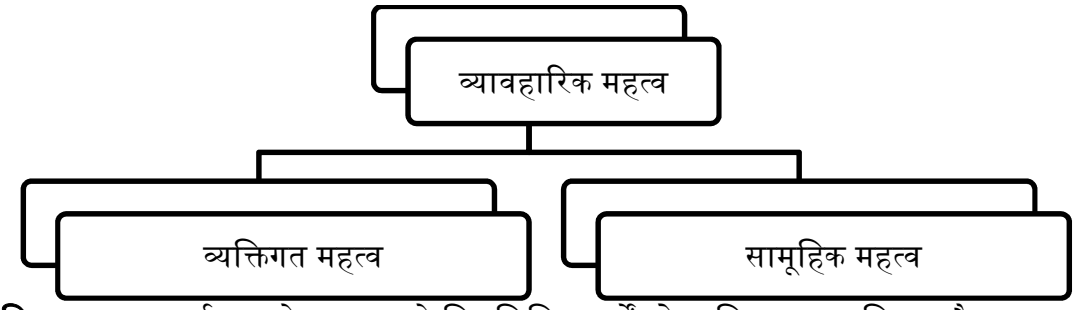

व्यक्तिगत महत्व- अर्थशास्त्र के अध्ययन से निम्नलिखित वर्गों को व्यक्तिगत लाभ मिलता है।

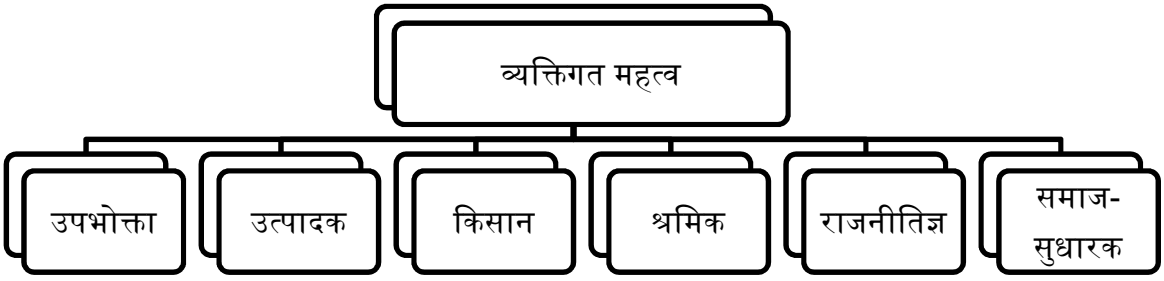

1. उपभोक्ताओं को लाभ (Benefits to Consumers)

1. **सीमित आय से अधिक संतुष्टि (satisfaction beyond limited income) -** प्रत्येक उपभोक्ता उपभोग के 'सम-सीमान्त तुष्टिगुण नियम' का पालन करके आप अपनी और अपने परिवार की अधिकतम जरूरतों को पूरा करके अपने पारिवारिक जीवन को और अधिक खुशहाल बना सकते हैं।
2. **पारिवारिक बजट के आधार पर व्यय (Expenses based on family budget)** - पारिवारिक बजट की मदद से गृहस्वामी अनावश्यक खर्चों को कम कर सकता है और आवश्यक, अधिक उपयोगी और स्वास्थ्यप्रद वस्तुओं पर अपना खर्च बढ़ा सकता है, जिससे उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

2. उत्पादकों एवं व्यापारियों को लाभ (Benefits to Producers and Traders)

1. **पूर्वानुमान (Forecast)** - अर्थशास्त्र का अध्ययन करके एक व्यवसायी को अपने उत्पादित माल की माँग और आय तथा उत्पादन से संबंधित स्थितियों का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. **न्यूनतम लागत - अधिकतम उत्पादन (Minimum Cost-Maximum Production) -** अर्थशास्त्र के अध्ययन से एक उत्पादक को यह निश्चित करने में सुविधा होती है कि किस वस्तु का और किस

स्थान पर और कौन सा उद्योग स्थापित करे? उत्पत्ति के साधनों को कैसे जुटाया जाए? उत्पादन का पैमाना क्या हो?

3. **मूल्य निर्धारण में सहायक (Assistant in Price determination)** - एक उत्पादक अपने उत्पाद को उचित मूल्य पर बेचने तथा अधिकतम लाभ प्राप्त करने में तभी सफल हो सकता है जबकि उसे माँग की कीमत सापेक्षता, उत्पत्ति के नियम, उपभोक्ता की बचत, मण्डियों का संगठन तथा आयात-निर्यात नीति का समुचित ज्ञान हो।
4. **वितरण कार्यों में सहायक (Assistant in distribution functions)** - उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को उनकी सेवाओं के बदले पुरस्कार वितरित करने हेतु उसे वितरण के विभिन्न सिद्धान्तों का ज्ञान होना आवश्यक है।

3. श्रमिकों को लाभ (Benefits to Workers)

1. **कार्यकुशलता में वृद्धि (Increase in efficiency)** - अर्थशास्त्र के अध्ययन से श्रमिकों को यह ज्ञान हो जाता है कि कार्यकुशलता में वृद्धि हो जाने से उसकी आय में वृद्धि हो जाएगी। अत: वे अपनी कार्यकुशलता में वृद्धि करने का प्रयत्न करने लगते हैं।
2. **श्रम-संघों के महत्व का ज्ञान (Knowledge of the importance of labor unions)** - अर्थशास्त्र के अध्ययन से श्रमिकों को श्रम-संघों के महत्व का ज्ञान होता है। अत: वे अपने अधिकारों व हितों की सुरक्षा हेतु श्रम-संघों की स्थापना करते हैं।
3. **अधिकारों के प्रति जागरूकता (Awareness of rights)** - अर्थशास्त्र का ज्ञान श्रमिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रखता है और उचित पुरस्कार पाने के लिये प्रोत्साहित करता है।
4. **रहन-सहन के स्तर में वृद्धि (Increase in standard of living)** - पारिवारिक बजटों के आधार पर व्यय करने से वे अपने रहन-सहन के स्तर में वृद्धि कर सकते हैं।

4. राजनीतिज्ञों को लाभ (Benefits to Politicians)

1. **राजस्व में महत्व (Importance in revenue)** - अर्थशास्त्र का ज्ञान एक राजनीतिज्ञ को अपने कार्यको संचालित करने में निम्न प्रकार से सहायता प्रदान करता है।
   क. अर्थशास्त्र का ज्ञान वित्त-मन्त्री को बजट बनाने में सहायक होता है।
   ख. कर-नीति के उचित निर्धारण के लिये अर्थशास्त्र का ज्ञान बहुत आवश्यक है ।
   ग. अर्थ-व्यवस्था पर अनुकूलन प्रभाव डालने के लिये वित्त-मन्त्री को अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धान्त के अनुसार कार्य करना होता है।
2. **आर्थिक नियोजन (Economic Planning)** - सरकार आर्थिक नियोजन के माध्यम से देश को आर्थिक विकास के मार्ग पर ले जाना चाहती है। देश में उपलब्ध आर्थिक एवं मानवीय साधनों का ज्ञान उत्पादन स्तर के लक्ष्य, वित्तीय साधनों का एकत्रीकरण आदि के बिना नियोजन सफल नहीं हो सकता।
3. **अर्थव्यवस्था का नियन्त्रण व नियमन (Control and regulation of the economy)** - अर्थव्यवस्था को विनियमित और नियंत्रित करने के लिए उसके पास देश की अर्थव्यवस्था के बारे में सटीक जानकारी होना आवश्यक है।

5. समाज-सुधारकों को लाभ (Benefits to Social Reformers)

समाज सुधारकों के लिये भी अर्थशास्त्र का ज्ञान अति आवश्यक है। एक समाज-सुधारक को अर्थशास्त्र के अध्ययन से उन उपायों का ज्ञान हो जाता है जो सामाजिक दोषों को दूर करके आर्थिक कल्याण में वृद्धि कर सकते हैं। एक समाज सुधारक विभिन्न आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का सही अध्ययन करके कल्याणकारी राज्य की स्थापना में सहयोग प्रदान कर सकता है।

सामूहिक महत्व -

अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य सामूहिक रूप से आर्थिक समस्याओं का समाधान करना है। अर्थशास्त्र में ऐसे कई विषय हैं जिनका संबंध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं बल्कि पूरे समाज से है। उदाहरण के लिए- मुक्त व्यापार एवं व्यापार संरक्षण, आर्थिक नियोजन, आयात एवं निर्यात नीति, जनसंख्या नियंत्रण, औद्योगिक समस्याएँ, अंतर्राष्ट्रीय संगठन आदि। अर्थशास्त्र में इन विषयों पर पूर्णत: सामाजिक दृष्टिकोण से विचार किया जाता है।

3.6 अर्थशास्त्र की सीमाएं (Limitations of Economics)

अर्थशास्त्र के क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए अर्थशास्त्र की सीमाओं को जानना भी अनिवार्य है। अर्थशास्त्र की मुख्य सीमाएँ निम्नलिखित हैं-

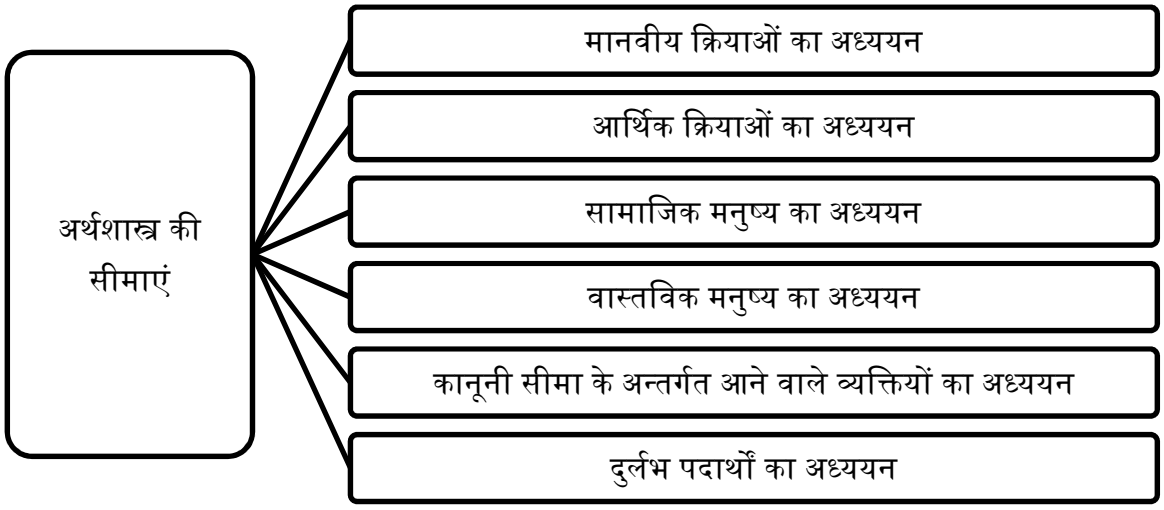

1. **मानवीय क्रियाओं का अध्ययन (Study of Human Activities)-** अर्थशास्त्र में केवल मानवीय क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। यद्यपि धन-सम्बन्धी क्रियाओं में पशु-पक्षी भी लगे होते हैं परन्तु उनका अध्ययन अर्थशास्त्र में नहीं किया जाता।
2. **आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन (Study of Economic Activities)-** अर्थशास्त्र में मनुष्य की केवल आर्थिक क्रियाओं का ही अध्ययन किया जाता है। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले अन्य कार्यों (सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, जैविक आदि) का अध्ययन अर्थशास्त्र में नहीं किया जाता हैं।
3. **सामाजिक मनुष्य का अध्ययन (Study of Social Man) -** मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र में केवल समाज में रहने वाले मनुष्यों का ही अध्ययन किया जाता है। समाज से विरक्त साधु, संत, संन्यासी आदि मनुष्यों का अर्थशास्त्र में अध्ययन नहीं किया जाता हैं।
4. **वास्तविक मनुष्य का अध्ययन (Study of Real Man)-** अर्थशास्त्र में वास्तविक मनुष्य का अध्ययन किया जाता है। स्वार्थी, लालची, काल्पनिक मनुष्य का नहीं। वास्तविक मनुष्य वह होता है जिसमें स्नेह, प्रेम, भावनाएँ तथा इच्छाएँ हों।
5. **सामान्य मनुष्य का अध्ययन (Study of Normal Man)-** अर्थशास्त्र में हम औसतन सामान्य मनुष्य का अध्ययन करते हैं। असामान्य मनुष्यों (पागल, शराबी, नशें में चूर, अत्यधिक कंजूस) का अध्ययन अर्थशास्त्र में नहीं किया जाता हैं।

6. कानूनी सीमा के अन्तर्गत आने वाले व्यक्तियों का अध्ययन (Study of Law-Abiding Citizens) - अर्थशास्त्र में कानून के दायरे में रहकर कार्य करने वाले लोगों का अध्ययन किया जाता है। चोरों, लुटेरों, जेबकतरों आदि का नहीं।

7. दुर्लभ पदार्थों का अध्ययन (Study of Scarce Goods)- अर्थशास्त्र में केवल ऐसी वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है जो दुर्लभ हों अर्थात् जिनकी पूर्ति उस वस्तु की माँग से कम हो। प्रचुर मात्रा में उपलब्ध निःशुल्क पदार्थों का अध्ययन अर्थशास्त्र के अंतर्गत नहीं किया जाता हैं।

3.7 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए –

1. अर्थशास्त्र की वितरण शाखा के अर्न्तगत सरकार के आय-व्यय व राज्य के आर्थिक क्रियाओं का वर्णन किया जाता है।

(सत्य/ असत्य)

2. एडम स्मिथ तथा अन्य परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है।

(सत्य/ असत्य)

3. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को 'कल्याण का विज्ञान' माना है।

(सत्य/ असत्य)

4. विज्ञान दो प्रकार का होता है एक वास्तविक विज्ञान दूसरा आदर्शात्मक विज्ञान।

(सत्य/ असत्य)

5. किसी घटना के 'कारण' तथा 'परिणामों' का अध्ययन आदर्शात्मक विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।

(सत्य/ असत्य)

6. वास्तविक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध 'क्या होना चाहिए?' से होता है।

(सत्य/ असत्य)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. वास्तविक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध ..... (क्या होना चाहिए/ क्या हैं) से होता है।
2. आदर्श विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध ..... (क्या होना चाहिए/ क्या हैं) से होता है।
3. ..... (उपभोग/ उत्पादन) का अर्थ वस्तुओं व सेवाओं को मनुष्य की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए उपयोग से होता है।
4. ..... (उपभोग/ उत्पादन) का अर्थ किसी वस्तु या सेवा में उपयोगिता का सृजन करना होता है।

3.8 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन से आप जान गए होंगे कि परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने धन को अर्थशास्त्र की विषय वस्तु माना। नव-परम्परावादी अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को भौतिक कल्याण का शास्त्र मानते है। आधुनिक विचारों के अनुसार अर्थशास्त्र सीमितता का विज्ञान है। उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण और राजस्व अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है। वास्तविक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका संबंध 'क्या है' से होता है। रॉबिन्स, सीनियर, वालरस आदि अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान है। आदर्श विज्ञान 'क्या है?' के साथ साथ 'क्या होना चाहिए?' की भी व्याख्या करता है। अर्थशास्त्री का कार्य खोज और व्याख्या करना है, उसका कार्य समर्थन या आलोचना करना नहीं है।

अर्थशास्त्री को वास्तविक जगत की समस्याओं तथा विभिन्न आर्थिक समस्याओं के संबंध में अपना मत देना ही होगा। एक अर्थशास्त्री अवश्य चाहेगा की एक ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमें अधिक से अधिक लोग अधिकतम आनंद व सुख का जीवनयापन कर सके। अर्थशास्त्र हमारी व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता करता है। अर्थशास्त्र की कुछ सीमाएं है जैसे यह केवल मानवीय क्रियाओं का अध्ययन करता है। अर्थशास्त्र केवल आर्थिक क्रियाओं का ही अध्ययन करता है, अन्य कार्यों (राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि) का नहीं। अर्थशास्त्र के अध्ययन के दो महत्व है- व्यावहारिक और सैद्धान्तिक महत्त्व। अर्थशास्त्र के अध्ययन के सैद्धान्तिक महत्त्व के अंतर्गत ज्ञान में वृद्धि, विवेक शक्ति का विकास और तर्क, अवलोकन एवं विश्लेषण शक्ति का विकास होता है। व्यावहारिक महत्व के अंतर्गत भी दो महत्त्व है- व्यक्तिगत और सामूहिक। व्यक्तिगत महत्त्व के अंतर्गत उपभोक्ता, उत्पादक, किसान, श्रमिक, राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारकों को व्यक्तिगत लाभ मिलता है जबकि सामूहिक महत्त्व के अंतर्गत मुक्त व्यापार एवं व्यापार संरक्षण, आर्थिक नियोजन, जनसंख्या नियंत्रण, औद्योगिक समस्याएँ आदि विषयों पर सामाजिक दृष्टिकोणों पर विचार किया जाता है।

3.9 शब्दावली (Glossary)

- **वास्तविक विज्ञान (Positive Science)** - वास्तविक विज्ञान किसी विषय का ऐसा क्रमबद्ध अध्ययन होता है जिसका सम्बन्ध 'क्या है' से होता है।
- **आदर्श विज्ञान (Normative Science)** - आदर्श विज्ञान 'क्या है?' के साथ-साथ 'क्या होना चाहिए?' की भी व्याख्या करता है।
- **विज्ञान (Science)** - विज्ञान किसी भी विषय के क्रमबद्ध अध्ययन को कहते हैं जिसमें किसी भी तथ्य विशेष के सम्बन्ध में कारण एवं परिणाम के सम्बन्ध को व्यक्त किया जाता है।
- **कला (Art)** - किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग 'कला' कहलाता है।

3.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. असत्य 6. असत्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. क्या हैं 2. क्या होना चाहिए 3. उपभोग 4. उत्पादन

3.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

3.12 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.

- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics***, Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

3.13 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. अर्थशास्त्र के क्षेत्र की व्याख्या कीजिए। अर्थशास्त्र एक विज्ञान है या कला है?
2. 'अर्थशास्त्र वास्तविक तथा आदर्श दोनों प्रकार का विज्ञान हैं।' इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. अर्थशास्त्र के महत्त्व एवं सीमाओं को विस्तार से समझाए।

इकाई- 4 अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंध
(Relation of Economics with other Disciplines)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)
4.2 उद्देश्य (Objectives)
4.3 सामाजिक विज्ञान के प्रभाग (Division of Social Sciences)
4.4 अर्थशास्त्र के प्रभाग एवं उसका सम्बन्ध (Division of Economics and its relation)
4.5 अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंध (Relation of Economics with other Disciplines)
4.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)
4.7 सारांश (Summary)
4.8 शब्दावली (Glossary)
4.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)
4.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)
4.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)
4.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

प्रस्तुत इकाई में आप सबसे पहले सामाजिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रभागों का अध्ययन करेंगे। अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रभागों का अध्ययन के उपरान्त आप उनके मध्य पारस्परिक संबंधों को जानेगे। अंत में आप अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों के बीच के अंतर्संबंधों को समझेगें।

4.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

- ✓ सामाजिक विज्ञान के प्रभागों से अवगत हो सकेगें।
- ✓ अर्थशास्त्र के प्रभागों से अवगत हो सकेगें।
- ✓ अर्थशास्त्र के प्रभागों में परास्परिक संबंधों को भली भाँति जान सकेगें।
- ✓ अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंधों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4.3 सामाजिक विज्ञान के प्रभाग (Division of Social Sciences)

व्यक्ति की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति उसके स्वयं के क्रियाकलापों के द्वारा होती है। उसके स्वयं के साथ साथ कुछ अन्य आवश्यकताएं भी होती है। जिनकी पूर्ति आवश्यक रूप से समुदाय अथवा संयुक्त प्रयासों से ही हो सकती है। इन अर्थों में समूह की गतिविधियों से सम्बधित प्रक्रिया सामाजिक प्रक्रिया कहलाती है और इन प्रक्रियाओं को वर्गीकृत करने और समझने वाले विज्ञान सामाजिक विज्ञान कहलाते है।

"सामाजिक विज्ञानों को ऐसे मानसिक अथवा सांस्कृतिक विज्ञानों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो व्यक्ति के समूह के सदस्य की गतिविधियों से सम्बधित रहते है। चूंकि मानव की सामान्य आवश्यकताएं अत्यधिक भिन्नता लिए होती है। अत: इनकी पूर्ति के लिए किए जा रहे सामूहिक क्रियाकलाप भी विविधता पूर्ण रहते है जिससे सामाजिक विज्ञानों की संख्या में भी वृद्धि होती है।"

अत: सामाजिक विज्ञान की सरलतम परिभाषा के अनुसार, वे उन सभी शैक्षणिक विषयों को इंगित करते है जिनका मनुष्य से उनके सामाजिक संदर्भों में सरोकार होता है। मानव समाज के विषय में संपूर्णतया से जाना अथवा बताया नहीं जा सकता है। अत: आवश्यक है कि मनुष्यों के द्वारा की जा रही है अंतःक्रियाओं को सुव्यवस्थित अध्ययन इकाईयों में विभक्त किया जाए। ऐसे विषय को हम अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र तथा अन्य अनेक नामों से सम्बोधित करते हैं। इनमें से प्रत्येक शास्त्र का अपना इतिहास, अपने विशिष्ट रुझान और शोध प्रणालियां रहती हैं।

1 समाज शास्त्र (Sociology)

आधुनिक सामाजिक विज्ञान में नवीनतम किंतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य उन नियमों का प्रतिपादन करना रहा है जो सामाजिक सम्बंधों की आधारशिला होते है। समाजशास्त्र को मानसिक विज्ञानों में श्रेष्ठतम व जटिलतम माना जा सकता है। इसे सामाजिक क्रिया के साथ वैज्ञानिक चिंतन का समन्वय माना जा सकता है। समाजशास्त्र की प्रक्रिया में किसी भी शाश्वत स्थिति की पड़ताल की जाती है। उसके समाधान हेतु अनुसंधान की जाती है और अंततः समाधान के प्रधानों का व्यावहारिक रूप में क्रियान्वयन किया जाता है।

2 राजनीति शास्त्र/विज्ञान (Political Science)

सामाजिक विज्ञानों में आरम्भिक विषय सम्भवतः राजनीति शास्त्र रहा चूंकि मानव समूहों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समूह राज्य के रूप में रहा है। जिस समय यूनान में वैज्ञानिक चिंतन शुरू हुआ। उस समय तक समस्त पूर्व राजनैतिक समूहों को राज्य के द्वारा समाहित किया जा चुका था। अतः यूनानी विद्वानों का मुख्य सरोकार राजनीति अथवा राजनीति विज्ञान से रहा। जो स्वशासित इकाईयों में सर्वोच्च इकाई अर्थात पोलिस से सम्बंधित थी।

3 नीति शास्त्र (Ethics)

सभी मानवीय क्रियाओं का अंतिम लक्ष्य नैतिक जीवन को सुव्यवस्थित करना होता है। नैतिक आचरण मूलत: एक व्यक्तिगत प्रश्न हैं किंतु इसे सामाजिक प्रभावों का परिणाम माना जाता है। समूह के अभाव में नैतिक अथवा अनैतिक नही हो सकता। समुदायों के मध्य लगातार बढ़ते सम्पर्क से समूहों की नैतिकता का मुद्दा भी महत्वपूर्ण हुआ है। इस प्रकार नीतिशास्त्र का सम्बन्ध व्यक्तियों के साथ-साथ समूहों में भी स्थापित हो जाता है।

4 न्यायशास्त्र (Jurisprudence)

आरम्भिक समाज में भी सह-परम्पराओं को कठोर दमनात्मक नियमों के द्वारा कानून के रूप में ढ़ाला गया था। कालांतर में अपेक्षाकृत विकसित राज्यों के अस्तित्व में आने के पश्चात् कानून को न्याय का प्रतीक माना गया। जिसमे न्यायशास्त्र की उत्पत्ति हुई। इस विज्ञान को विकसित करने में रोमन लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आधुनिक समय में न्यायशास्त्र का दायरा निरंतर रूप से विस्तृत होता रहा है। वैधानिक संबंधों को मानवीय समूहों के सभी पक्षों में विद्यमान पाया जा सकता है।

5 इतिहास (History)

परम्परागत सामाजिक विज्ञानों की श्रेणी में यूनानियों से सम्बंधित तीसरा विषय इतिहास रहा । **हेरोडोटस** को इतिहास का जनक माना जाता है। उसकी कृतियों में इतिहास विज्ञान के स्थान पर एक साहित्यिक कला अधिक प्रतीत होता है। शताब्दियों तक इतिहास, कला और विज्ञान का समन्वय बना रहा। **थ्युसीडाइडिज** की लेखनी में इतिहास का केन्द्र राज्य को माना गया तथा इसकी प्रकृति वैज्ञानिक बनने लगी। आधुनिक युग के आरम्भ के साथ ही अब तक राजनैतिक विज्ञान के लिए सहायक रहा इतिहास विषय अपने क्षेत्र में अभिवृद्धि करता है। अब इसके अंतर्गत मनुष्य जीवन की बहु-आयामी गतिविधियों के साथ-साथ राजनैतिक संगठनों की गतिविधियों को भी समाहित किया गया। इस प्रकार इतिहास सामाजिक प्रक्रियाओं की व्याख्या के लिए एक परिहार्य स्रोत बन जाता है।

6 मनोविज्ञान (Psychology)

मनोविज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। मानवीय व्यवहार का अध्ययन होने के कारण मनोविज्ञान आंशिक रूप सें सामाजिक प्रकृति का बन जाता है। मनोविज्ञान के द्वारा मनुष्य जीवन तथा विचार प्रक्रिया के जैवकीय तथा यांत्रिकीय आधारों का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जाता है। एक मनोवैज्ञानिक इस तथ्य से भली भांति अवगत रहता है कि सृष्टि की सम्पूर्ण प्रक्रिया को निर्धारण मानवीय के साथ साथ प्राकृतिक वातावरण भी करता है। अत: अलग व्याक्ति की अवधारणा भी निर्मूल है।

7 भूगोल (Geography)

भूगोल पृथ्वी की सतह के अध्ययन को कहा जाता है। इसके अंतर्गत प्राकृतिक के साथ-साथ सामाजिक प्रक्रियाओं के विस्तरण को भी समाहित किया जाता है। भूगोल मनुष्य तथा उसकी सामाजिक विरासत और दूसरी ओर मनुष्य तथा प्राकृतिक वातावरण की अंतःक्रिया को समझने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

8 अर्थशास्त्र (Economics)

यूनानियों के दृष्टिकोण में राजनीति विज्ञान के पश्चात् द्वितीय स्थान पर अर्थशास्त्र को रखा गया। इसका सम्बंध ओइकोस दरबार से था। जो मनुष्य की सम्पति से सम्बंधित विषयों के सम्बंध का प्रतीक था। दरबार को सुव्यवस्थित रखना जिसमें व्यक्ति की पत्नी, संतान तथा दासों को सम्मिलित किया गया था जोकि अत्यंत महत्वपूर्ण रहा किंतु यूनानियों ने धन की प्राप्ति को निश्चित रूप से एक निम्न प्रवृत्ति मानते हुए उस पर अधिक बल नही दिया जबकि कालांतर में (16 वी शताब्दी में) संपत्ति को राष्ट्रीय शक्ति का प्रतीक माना गया। आधुनिक अर्थशास्त्र की उत्पत्ति के लिए मार्ग सशक्त हो जाता है। राष्ट्रीय महत्व के अंतर्गत ही **डी. वाटेविल** के द्वारा इस विषय के लिये राजनीति अर्थशास्त्र का नामकरण प्रस्तावित हुआ। चूंकि संपत्ति सम्बंधों की नवीन व्यवस्था का निर्धारण राज्य के द्वारा ही किया जाना था। यह धारणा इतनी बलवती थी

की अन्यथा रूप में सरकारी नियंत्रण के विरोधी **एडम स्मिथ** अर्थशास्त्र के लिये राजनीति अर्थशास्त्र नामकरण का समर्थन करते हैं। 17 वी शताब्दी में विषय की वास्तविक सामाजिक प्रवृत्ति स्पष्ट हुई तथा इसे यूनानियों के द्वारा दिया गया प्राचीन नाम अर्थात् Economics पुन: प्राप्त हो सका।

4.4 अर्थशास्त्र के प्रभाग एवं उसका सम्बन्ध (Division of Economics and its relation)

अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंध को जानने से पहले हमें अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रभागों और उनके मध्य पारस्परिक संबंधों को जानना आवश्यक है। आईये हम अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रभागों और उनके बीच के अंतर्संबंधों को समझे।

अर्थशास्त्र के प्रभाग (Division of Economics)

अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु की व्याख्या एक अन्य ढंग से भी की जा सकती है। प्राचीन फ्रांसीसी अर्थशास्त्री **जे. बी. से (J.B. Say)** ने 1803 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Traite de Economic Politique' में अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री को उत्पादन, उपभोग और वितरण तीन मूल प्रभागों में विभाजित किया था। लगभग 100 वर्षों तक अर्थशास्त्री **जे. बी. से (J.B. Say)** का अनुसरण करते रहे किन्तु आधुनिक अर्थशास्त्री विनिमय तथा राजस्व को भी अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण प्रभाग मानते हैं।
अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से अर्थशास्त्र को पाँच प्रभागों में विभाजित किया जाता है।

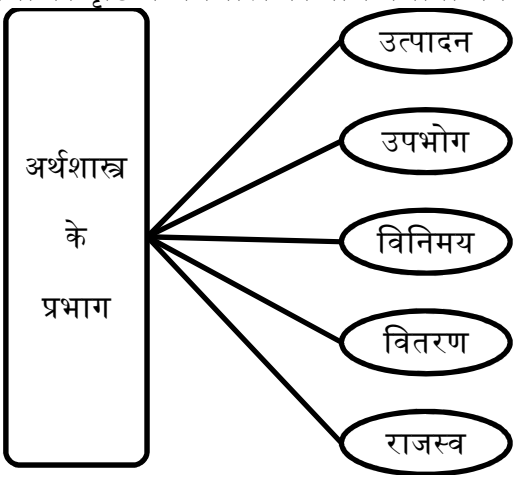

1. **उत्पादन (Production) -** वस्तुओं में तुष्टिगुण का सृजन ही उत्पादन कहलाता है। **प्रो. पेन्सन** के शब्दों में, ***"वस्तु में मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने की योग्यता, गुण अथवा शक्ति में वृद्धि करना ही उत्पादन है।"*** कोई भी व्यक्ति हमेशा किसी नवीन वस्तु का उत्पादन नहीं कर सकता परन्तु उसकी उपयोगिता में परिवर्तन कर सकता है। अर्थशास्त्र के इस प्रभाग में उत्पादन के अनेक साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी, प्रबन्ध तथा साहस), उत्पत्ति के नियमों, उत्पादन के पैमाने आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है।
2. **उपभोग (Consumption) -** अर्थशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाग उपभोग है। उपभोग से अभिप्राय वस्तु की उपयागिता को मानव आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नष्ट करने से है। अर्थशास्त्र के इस प्रभाग में मनुष्यों की आवश्यकताओं, उनके कारण, उनके प्रकारों तथा उनकी तृप्ति से होने वाली सन्तुष्टि व उनके नियमों (जैसे उपयोगिता ह्रास नियम, सम-सीमान्त उपयोगिता का नियम, माँग का नियम, उपभोक्ता की बचत आदि का अध्ययन किया जाता है। **मार्शल (Marshall)** ने उपभोग को अर्थशास्त्र का 'आदि और अन्त' कहा है।

3. **विनिमय (Exchange) -** अर्थशास्त्र में विनिमय का अर्थ है कम आवश्यक वस्तुओं को अधिक आवश्यक वस्तुओं में बदलना। अर्थशास्त्र के इस प्रभाग के अंतर्गत वस्तु विनिमय, उसकी कठिनाइयाँ, मुद्रा का जन्म, उसका विकास, बैंक तथा साख व्यवस्था, आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्तों, समस्याओं तथा बाजार की विभिन्न अवस्थाओं में वस्तु के मूल्य निर्धारण सम्बन्धी सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता हैं।
4. **वितरण (Distribution) -** उत्पादन में भाग लेने वाले साधनों के बीच होने वाले धन के बंटवारे को वितरण कहते हैं। अर्थशास्त्र के इस प्रभाग में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि संयुक्त उत्पादन के वितरण का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त क्या है तथा उत्पादन में शामिल सभी साधनों का पारिश्रमिक किस आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए।
5. **राजस्व अथवा लोकवित्त (Public Finance) -** राजस्व, अर्थशास्त्र का नवीनतम प्रभाग है। राजस्व प्रभाग के अंतर्गत सरकार की आय तथा व्यय तथा उसके पारस्परिक समन्वय का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र के इस प्रभाग के अन्तर्गत हम सार्वजनिक व्यय, सार्वजनिक आय, सार्वजनिक ऋण, वित्तीय प्रबन्ध, आर्थिक स्थायित्व व राजकोषीय नीति का अध्ययन करते हैं।

अर्थशास्त्र के प्रभागों में पारस्परिक सम्बन्ध (Interrelationship among division of Economics)

1 उपभोग तथा उत्पादन

(अ) उत्पादन उपभोग पर आश्रित है- यदि किसी चीज का उपभोग नहीं होगा तो बाजार में उसकी माँग भी नहीं होगी। उत्पादन की मात्रा तथा स्वभाव भी उपभोग पर निर्भर करते हैं। जिस वस्तु की जितनी माँग होगी उतना ही उसका उत्पादन होगा। रुचि, फैशन, रीति-रिवाज आदि में परिवर्तन होने पर उत्पादन के स्वभाव में भी परिवर्तन होगा।

(ब) उपभोग भी उत्पादन पर आश्रित है- उत्पादन के बिना उपभोग की कल्पना करना भी सम्भव नहीं है। किसी वस्तु का उपभोग उतना ही होगा जितना उसका उत्पादन हुआ है। उत्पादन ही उपभोग का स्वभाव निश्चित करता है। किसी देश में जिस वस्तु का उत्पादन होता है उसी वस्तु का उपभोग होता है।

2. उपभोग और विनिमय

(अ) विनिमय उपभोग पर आश्रित है- (i) उपभोग के कारण ही वस्तुओं का विनिमय होता है। (ii) उपभोग ही वस्तु के बाजार के क्षेत्र को प्रभावित करता है।

(ब) उपभोग भी विनिमय पर आश्रित है- (i) बिना विनिमय के उपभोग सम्भव नहीं है। (ii) विनिमय उपभोग के स्वभाव को बदलने में सहायक होता है। (iii) विनिमय उपभोग के क्षेत्र को भी विस्तृत करता है।

3. उपभोग तथा वितरण

(अ) वितरण उपभोग पर आश्रित है- (i) उपभोग के अस्तित्व का मूल कारण वितरण होता है। (ii) वितरण के अनेक सिद्धान्तों तथा समस्याओं को सुलझाने में उपभोग के नियमों का ज्ञान सहायक है।

(ब) उपभोग भी वितरण पर आश्रित है- (i) वितरण के द्वारा ही हमें अपने उपभोग की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। (ii) वितरण की मात्रा व स्वभाव पर ही उपभोग की मात्रा व स्वभाव निर्भर करता है। चूंकि उपभोग वितरण को तथा वितरण उपभोग को प्रभावित करता है। अतः दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

4. उपभोग तथा राजस्व

(अ) उपभोग राजस्व पर आश्रित है- (i) उपभोग राज्य की आय तथा व्यय को बहुत प्रभावित करता है। यदि उपभोग कम हो जाएगा तो सरकार की आय कम होगी तथा सार्वजनिक कार्यों पर सरकार कम व्यय करेगी। (ii) राजस्व के नियमों तथा सिद्धान्तों के समझने में उपभोग के नियम सहायक होते हैं।

(ब) उपभोग भी राजस्व पर आश्रित है- (i) राजस्व उपभोग की मात्रा व स्वभाव को प्रभावित करता है। (ii) सरकार की कर नीति व व्यय-नीति व्यक्तिगत व सामूहिक उपभोग को प्रभावित करती है। यदि सरकार अपनी आय का अधिकांश भाग सामाजिक कल्याण कार्यों पर व्यय करती है तो उपभोग में वृद्धि होगी और यदि सरकार इसके विपरीत कार्य करती है तो उपभोग में कमी आ जाएगी।

5. उत्पादन तथा विनिमय

(अ उत्पादन विनिमय पर आश्रित है- (i) उत्पादन का वर्तमान स्वरूप विनिमय प्रणाली पर ही बहुत कुछ निर्भर करता है। (ii) विनिमय, उत्पादन में सहायक होता है।

(ब) विनिमय भी उत्पादन पर आश्रित है- (i) उत्पादन के कारण ही विनिमय का अस्तित्व है। (ii) उत्पादन की मात्रा व प्रकृति पर ही विनिमय की प्रकृति निर्भर करती है।

6. उत्पादन और वितरण

(अ) वितरण उत्पादन पर आश्रित है- (i) उत्पादन के कारण ही वितरण सम्भव हुआ है। (ii) उत्पादन ही वितरण की मात्रा को निश्चित करता है।

(च) उत्पादन भी वितरण पर आश्रित है- (i) वितरण उत्पादन की मात्रा को प्रभावित करता है। (ii) वितरण का स्वभाव उत्पादन के स्वभाव को भी प्रभावित करता है।

7. उत्पादन तथा राजस्व

(अ) राजस्व उत्पादन पर आश्रित रहता है- उत्पादन ही सरकार की आय और व्यय-प्रणाली को प्रभावित करता है।

(ब) उत्पादन भी राजस्व पर आश्रित रहता है- उत्पादन का स्वभाव, मात्रा तथा प्रगति राजकोषीय नीतियों पर निर्भर करते हैं।

8. विनिमय तथा वितरण

(अ) विनिमय से ही वितरण सम्भव है- विनिमय के द्वारा प्राप्त धन को ही उत्पादकों द्वारा उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को उनके पारिश्रमिक के रूप में बाँटा जाता है। यदि वस्तुओं का विनिमय नहीं होगा तो वितरण भी नहीं हो सकेगा।

(ब) वितरण भी विनिमय को प्रभावित करता है- वितरण के समान तथा न्यायसंगत होने के कारण विनिमय की जाने वाली वस्तुओं का स्वभाव बदल जाता है।

9. विनिमय तथा राजस्व

(अ) विनिमय का राजस्व पर प्रभाव - विनिमय राजस्व को काफी प्रभावित करता है क्योंकि विनिमय का सार्वजनिक आय पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

(ब) राजस्व का विनिमय पर प्रभाव-राजस्व भी विनिमय की मात्रा को प्रभावित करता है क्योंकि विनिमय के साधनों- वैकिंग व्यवस्था, मुद्रा-संचालन, मूल्य नियन्त्रण आदि की व्यवस्था राज्य को ही करनी पड़ती है और सरकार की कर नीति भी विनिमय की मात्रा को घटाती-बढ़ाती है।

10. वितरण तथा राजस्व

(अ) राजवित्त पर वितरण का प्रभाव – (i) वितरण राज्य की कर-नीति को प्रभावित करता है। (ii) सरकार की व्यय-नीति भी वितरण पर निर्भर होती है।

(ब) वितरण पर राजस्व का प्रभाव - वितरण पर भी राजस्व का बहुत प्रभाव पड़ता है क्योंकि कर-नीति तथा व्यय-नीति भी वितरण को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार वितरण तथा राजस्व एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अतः दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

4.5 अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंध (Relation of Economics with other Disciplines)

अर्थशास्त्र में समाज में रहने वाले मनुष्य की क्रियाओं का अध्ययन होता है। अर्थशास्त्र के अतिरिक्त अनेक ऐसे विज्ञान हैं, जिनके अध्ययन का विषय भी मनुष्य है। अत: ये सभी विज्ञान एक दूसरे से परस्पर सम्बन्धित हैं।

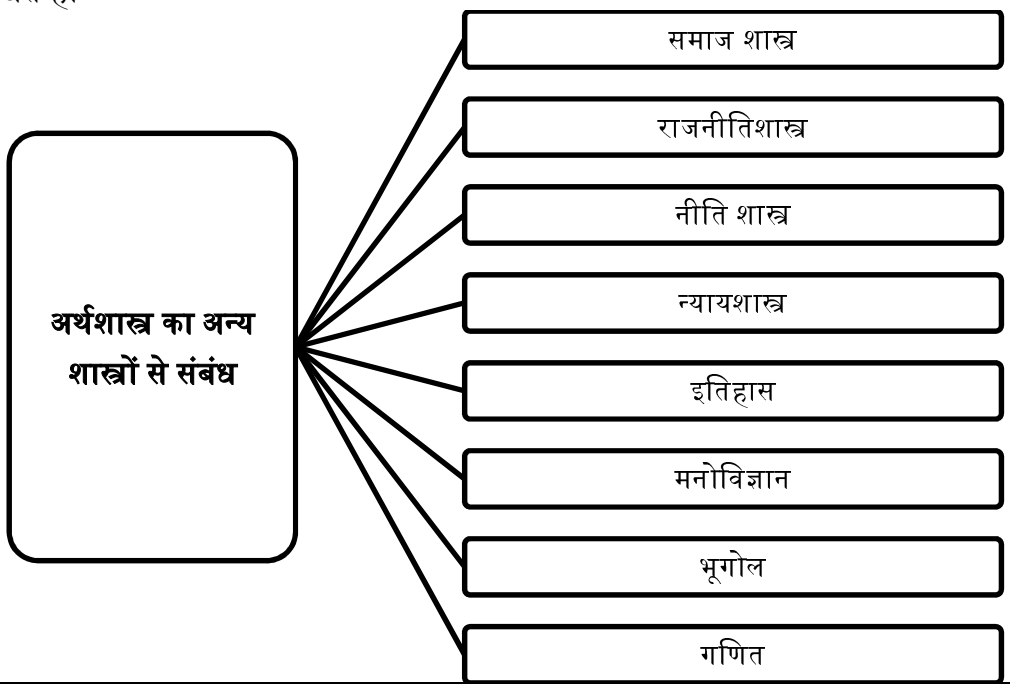

4.5.1 अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र (Economics and Sociology)

समाजशास्त्र में हम मनुष्य के समस्त सामाजिक व्यवहारों और समस्याओं का अध्ययन करते हैं परन्तु अर्थशास्त्र में हम मानव-जीवन के आर्थिक पहलू का अध्ययन करते हैं।

1. समाजशास्त्र के अध्ययन में अर्थशास्त्र का ज्ञान सहायक है (Knowledge of Economics is helpful in the study of Sociology) - समाजशास्त्र के नियम सभी सामाजिक विज्ञानों के नियमों पर आधारित होते हैं। आर्थिक क्रियाएं मनुष्य की सामाजिक क्रियाओं को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन के बिना उसकी सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन नहीं किया जा सकता ।
2. अर्थशास्त्र के अध्ययन में समाजशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है (Knowledge of Sociology is helpful in the study of Economics) - वास्तव में मनुष्य के सामाजिक सम्बन्ध व उसकी सामाजिक मान्यताओं का उसकी आर्थिक क्रियाओं पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक

समस्याएं देश के आर्थिक विकास में बाधक सिद्ध होती हैं। कोई भी आर्थिक योजना तभी सफल हो सकती है जबकि उसे समाज का पूर्ण समर्थन प्राप्त होता हो।

4.5.2 अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र (Economics and Political Science)

अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र दोनों ही सामाजिक विज्ञान हैं और दोनों का अध्ययन-विषय (Subject of Study) मनुष्य है। मात्र इतना अन्तर है कि अर्थशास्त्र में मनुष्य के आर्थिक पहलू का अध्ययन किया जाता है जबकि राजनीति शास्त्र में मनुष्य के राजनीतिक पहलू का अध्ययन किया जाता है।

1. राजनीति शास्त्र का अर्थशास्त्र पर प्रभाव (Impact of Political Science on Economics)
   (i) किसी देश की राजनीतिक अवस्था का उसके आर्थिक संगठन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि देश में शान्ति, सुरक्षा और सुव्यवस्था है तब राज्य शक्तिशाली न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है तथा उसे आर्थिक योजनाओं के कार्यान्वयन में जन-सहयोग प्राप्त होता है तो वह देश आर्थिक दृष्टि से विकसित होगा। इसके विपरीत दशाओं में देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होगा।
   (ii) राज्य के स्वरूप का उनकी आर्थिक क्रियाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साम्यवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्था में उद्योग और व्यापार पर राज्य का पूर्ण नियन्त्रण होता है तथा उद्योगों के विकास में संरक्षण नीति का प्रयोग किया जाता है। इसके विपरीत पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन, उपभोग व रोजगार की स्वतन्त्रता होती है।
2. अर्थशास्त्र का राजनीति शास्त्र पर प्रभाव (Impact of Economics on Political Science)
   (i) किसी देश की आर्थिक स्थिति वहाँ के समाज व शासन-व्यवस्था को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए
      (1) आर्थिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में राज्य-व्यवस्था भी मूल रूप से भिन्न रही है।
      (2) आर्थिक समस्याओं को ध्यान में रखकर ही राजकोषीय नीति निर्धारित की जाती है।
      (3) आर्थिक दशाओं के अनुरूप ही विदेशी सरकारों व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से आर्थिक व राजनीतिक समझोते किए जाते हैं।
   (ii) किसी देश की आर्थिक दशाएं ही राजनीतिक संघर्षों का आधार होती है। चीन की क्रान्ति का मूल कारण वहाँ की आर्थिक दशाएं ही थीं ।
   (iii) साम्यवाद, पूँजीवाद, समाजवाद आदि सभी अर्थशास्त्र ब राजनीतिशास्त्र दोनों के अध्ययन-विषय (Subject of Study) हैं।

4.5.3 अर्थशास्त्र एवं नीति शास्त्र (Economics and Ethics)

अर्थशास्त्र एवं नीति शास्त्र दोनों का अध्ययन-विषय (Subject of Study) मानव-व्यवहार है। अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र दोनों ही सामाजिक विज्ञान हैं और दोनों में ही मानव-व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि अर्थशास्त्र में मनुष्य के केवल आर्थिक पहलू का अध्ययन किया जाता है।

1. नीतिशास्त्र आर्थिक क्रियाओं के नैतिक पक्ष का विश्लेषण करता है। नीतिशास्त्र एक आदर्श शास्त्र है, जिसमें हम मानव-व्यवहार के आदर्शात्मक पहलू का अध्ययन करते हैं। यह इस बात का ज्ञान कराता है कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र दोनों का ही सम्बन्ध 'मानवीय कल्याण में वृद्धि' से है। इसलिए अर्थशास्त्री नीतिशास्त्र की सहायता से ही अपनी आर्थिक नीति निर्धारित करते हैं।

2. अर्थशास्त्र एक नीति प्रधान विज्ञान है। यह उद्देश्यों के प्रति तटस्थ नहीं रह सकता। इसलिए कहा जाता है कि 'अर्थशास्त्र नीतिशास्त्र का साथी और व्यवहार का दास है। (Economics is a handmaid of Ethics and servant of practice.)'
3. व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का प्रभाव उसके नैतिक स्तर पर भी पड़ता है। व्यवहार में मनुष्य की आय, उसे प्राप्त करने तथा उसके व्यय करने का ढंग उस मानव के चरित्र व आचार-विचार पर बहुत गहरा प्रभाव डालता है।

4.5.4 अर्थशास्त्र एवं न्यायशास्त्र (Economics and Jurisprudence)

अर्थशास्त्र एवं न्यायशास्त्र दोनों विषयों का अध्ययन-विषय (Subject of Study) समान है। अर्थशास्त्र और न्यायशास्त्र दोनों का अध्ययन-विषय सामाजिक मनुष्य तथा उसका आचरण है। अर्थशास्त्र एवं न्यायशास्त्र दोनों में अन्तर केवल इतना है कि अर्थशास्त्र मनुष्य के केवल आर्थिक पहलू का अध्ययन करता है जबकि न्यायशास्त्र मानव-व्यवस्था के केवल कानूनी पहलू का अध्ययन करता है।

1. देश की न्याय-व्यवस्था उसकी आर्थिक प्रणाली को प्रभावित करती है। उचित न्याय-व्यवस्था से देश के आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है, श्रमिक वर्ग का शोषण नहीं हो पाता और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का समुचित उपभोग कर सकता है। इसके विपरीत, देश में न्याय-व्यवस्था के बिगड़े रहने पर देश के आर्थिक विकास की गति भी अवरुद्ध हो जाती है।
2. देश की आर्थिक स्थिति उसकी न्याय-व्यवस्था को भी प्रभावित करती है। देश की आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप ही नए-नए कानूनों का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए- मूल्य बढ़ने पर ही मूल्य नियन्त्रण सम्बन्धी कानून बनाये जाते हैं।

अतः अर्थशास्त्र तथा न्यायशास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

4.5.5 अर्थशास्त्र एवं इतिहास (Economics and History)

अर्थशास्त्र एवं इतिहास दोनों ही शास्त्रों का अध्ययन-विषय (Subject of Study) मानव है। अन्तर केवल इतना है कि अर्थशास्त्र में मनुष्य की केवल आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है और इतिहास में अतीत में मानव-क्रियाओं का समन्वित स्वरूप है।

1. अर्थशास्त्र का ज्ञान इतिहास के अध्ययन में सहायक है (Knowledge of Economics is helpful in the study of History) - अर्थशास्त्र के ज्ञान से हमें इतिहास की घटनाओं को समझने में बहुत सहायता मिलती है। वास्तव में, आर्थिक घटनाओं को समझे बिना हम ऐतिहासिक घटनाओं को नहीं समझ सकते हैं क्योंकि प्रत्येक ऐतिहासिक घटना के पीछे कोई ना कोई आर्थिक घटना होती है और जब तक इन आर्थिक घटनाओं की पूर्ण जानकारी हमें नहीं होगी, हम ऐतिहासिक घटनाओं को भी ठीक प्रकार से नहीं समझ सकते है।
2. इतिहास का ज्ञान अर्थशास्त्र के अध्ययन में सहायक है (History of Economics is helpful in the study of Knowledge)-
   (i) पिछली आर्थिक योजनाओं व आर्थिक सम्बन्धों का ज्ञान भविष्य की आर्थिक योजनाओं के निर्माण में सहायक होता है।
   (ii) आर्थिक इतिहास का ज्ञान ही आर्थिक नियमों के निर्माण, विवेचन एवं संशोधन में सहायक होता है।

(iii) आर्थिक विचारों का इतिहास हमें इस बात का ज्ञान कराता है कि वर्तमान में आर्थिक सिद्धान्तों का विकास किस प्रकार हुआ हैं। इस प्रकार का ज्ञान हमें आर्थिक सिद्धान्तों को अच्छी तरह से समझ विकसित करने में सहायक होता है।

अर्थशास्त्र और इतिहास के सम्बन्धों की घनिष्ठता को बताते हुये एक विद्वान ने कहा है-

"Economics without History has no root, History without Economics has no fruit."

4.5.6 अर्थशास्त्र एवं मनोविज्ञान (Economics and Psychology)

अर्थशास्त्र एवं मनोविज्ञान दोनों का अध्ययन-विषय (Subject of Study) समान है। अर्थशास्त्र एवं मनोविज्ञान में अन्तर केवल इतना ही है कि अर्थशास्त्र में मानवीय आवश्यकताओं तथा इनकी पूर्ति के लिए मनुष्य द्वारा किए गए प्रयत्नों का अध्ययन किया जाता है जबकि मनोविज्ञान में मनुष्य की मानसिक भावनाओं एवं प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

1. मनोविज्ञान का अर्थशास्त्र पर प्रभाव (Impact of Psychology on Economics) –

   (i) अर्थशास्त्र में अधिकांश आर्थिक नियमों के निर्माण का आधार मनोवैज्ञानिक है। इच्छा, उपयोगिता, सन्तोष, त्याग आदि मानसिक विचार हैं और मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय हैं। अर्थशास्त्र के अनेक आधारभूत नियम इन्हीं मनोवैज्ञानिक भावनाओं पर आधारित हैं; जैसे- उपयोगिता ह्रास नियम, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम, माँग का नियम, उपभोक्ता की बचत आदि ।

   (ii) प्रत्येक मानसिक अवस्था मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित करती है। कार्य करने की दशाएं, स्वस्थ वातावरण, कार्य में रुचि आदि सभी मानसिक अवस्थाएं हैं जोकि मनुष्य की कार्यक्षमता में वृद्धि करती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करने वाले श्रमिकों की कार्यक्षमता भी गिर जाती है।

2. अर्थशास्त्र का मनोविज्ञान पर प्रभाव (Impact of Economics on Psychology) – मनुष्य की आर्थिक क्रियाएं उसके मानसिक विचारों को भी प्रभावित करती हैं। सुखी व समृद्ध समाज में संगीत व कला के प्रति रुचि पाई जाती है। सामान्यतया धनी व्यक्ति ही सुखी, साहसी एवं आशावादी होते है जबकि निर्धन व्यक्ति हीन भावना के शिकार होते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

4.5.7 अर्थशास्त्र एवं भूगोल (Economics and Geography)

अर्थशास्त्र एवं भूगोल दोनों विषयों का अध्ययन-विषय (Subject of Study) समान है। भूगोल का अध्ययन विषय है 'मनुष्य और प्राकृतिक वातावरण' जबकि अर्थशास्त्र का विषय है 'मनुष्य और आर्थिक क्रियाएं'।

1. मनुष्य को आर्थिक क्रियाएं भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं क्योंकि किसी देश की जलवायु, वनस्पति, धरातल, प्राकृतिक दशाओं आदि का वहाँ के लोगों के आचार-विचार, खान-पान, वेशभूषा, कार्य-कुशलता तथा उद्योग-धन्धों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। किसी देश का आर्थिक विकास मुख्य रूप से वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों पर ही निर्भर करता है। वास्तव में मनुष्य अपने भौगोलिक पर्यावरण का दास है।
2. भूगोल भी अर्थशास्त्र से बहुत अधिक प्रभावित होता है। किसी भी देश के आर्थिक विकास की गति वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों को काफी प्रभावित करती है। अतः अर्थशास्त्र और भूगोल में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

4.5.8 अर्थशास्त्र एवं गणित (Economics and Mathematics)

आधुनिक अर्थशास्त्री आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में गणित का उपयोग काफी मात्रा में करते हैं। सांख्यिकीय रीतियाँ अर्थशास्त्र के सभी नियमों की रचना में काफी सहायक होती हैं। आर्थिक विकास के मॉडल बीजगणितीय सूत्रों पर आधारित हैं। आर्थिक नियोजन रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराने में तथा आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण में आँकड़े व सांख्यिकीय रीतियाँ अत्यधिक उपयोगी हैं। आर्थिक नियमों की रेखाचित्रों व दण्डचित्रों की सहायता से व्याख्या की जा सकती है। आज गणित व सांख्यिकी के बिना अर्थशास्त्र महत्वहीन है।

4.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. वस्तुओं में तुष्टिगुण का सृजन ही ..... (उत्पादन /उपभोग) कहलाता है।
2. राजनीति शास्त्र में मनुष्य के ..... (आर्थिक / राजनीतिक) पहलू का अध्ययन किया जाता है।

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. अर्थशास्त्र में कम आवश्यक वस्तुओं को अधिक आवश्यक वस्तुओं में बदलना ही विनिमय कहलाता है।

(सत्य / असत्य)

2. अर्थशास्त्र को सात प्रभागों में विभाजित किया जाता है।

(सत्य / असत्य)

3. मनोविज्ञान में मनुष्य की मानसिक भावनाओं एवं प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

(सत्य / असत्य)

4.7 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप यह भलीभांति समझ चुके होगें कि उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण और राजस्व अर्थशास्त्र के मुख्य प्रभाग है जिसके अंतर्गत हम विभिन्न प्रकार के सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं। अर्थशास्त्र के पाँचों प्रभागों में पारस्परिक सम्बन्ध है और प्रत्येक प्रभाग एक दूसरे से अंतर्संबंधित हैं। अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नीति शास्त्र, न्यायशास्त्र, इतिहास मनोविज्ञान, भूगोल और गणित सभी विषयों से सम्बंधित है।

4.8 शब्दावली (Glossary)

- **उत्पादन (Production) -** वस्तुओं में तुष्टिगुण का सृजन ही उत्पादन कहलाता है।
- **उपभोग (Consumption) -** उपभोग से अभिप्राय वस्तु की उपयागिता को मानव आवश्यकताओं की पूति हेतु नष्ट करने से है।
- **विनिमय (Exchange) -** अर्थशास्त्र में कम आवश्यक वस्तुओं को अधिक आवश्यक वस्तुओं में बदलना ही विनिमय कहलाता है।
- **वितरण (Distribution) -** उत्पादन में भाग लेने वाले साधनों के बीच होने वाले धन के बंटवारे को वितरण कहते हैं।
- **राजस्व अथवा लोकवित्त (Public Finance) -** राजस्व के अंतर्गत सरकार की आय तथा व्यय तथा उसके पारस्परिक समन्वय का अध्ययन किया जाता है।
- **राजनीति शास्त्र (Political Science) -** राजनीति शास्त्र में मनुष्य के राजनीतिक पहलू का अध्ययन किया जाता है।

- **नीतिशास्त्र (Ethics) -** नीतिशास्त्र एक आदर्श शास्त्र है, जिसमें हम मानव-व्यवहार के आदर्शात्मक पहलू का अध्ययन करते हैं।
- **न्यायशास्त्र (Jurisprudence) -** न्यायशास्त्र मानव-व्यवस्था के कानूनी पहलू का अध्ययन किया जाता है।
- **मनोविज्ञान (Psychology) -** मनोविज्ञान में मनुष्य की मानसिक भावनाओं एवं प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

4.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. उत्पादन 2. राजनीतिक

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए –

1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य

4.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण***, शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

4.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics***, Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

4.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. अर्थशास्त्र में कितने प्रभाग हैं? उनके पारस्परिक सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए।
2. 'अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रभाग एक-दूसरे पर आश्रित हैं।' समझाइए।
3. अर्थशास्त्र का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध बताइए।

इकाई- 5 अर्थशास्त्र के अध्ययन की विधियाँ

(Methods of the Study of Economics)

5.1 परिचय (Introduction)
5.2 उद्देश्य (Objectives)
5.3 अध्ययन विधि का परिचय (Introduction of Method of Study)
5.4 अध्ययन विधि के प्रकार (Types of Method of Study)
5.4.1 निगमनात्मक विधि (Deductive Method)
5.4.2 आगमनात्मक विधि (Inductive Method)
5.5 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)
5.6 सारांश (Summary)
5.7 शब्दावली (Glossary)
5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)
5.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)
5.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)
5.11 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

5.1 परिचय (Introduction)

इस इकाई के अंतर्गत आप अर्थशास्त्र की अध्ययन विधियों के बारे में विस्तार से पढेंगे, जिनकी सहायता से आप तथ्यों का अध्ययन करना सीखेंगे एवं आर्थिक नियमों का उपयोग करना भी जानेंगे। इस इकाई में दो प्रकार की अध्ययन विधियों की चर्चा की गई है - पहली निगमनात्मक विधि और दूसरी आगमनात्मक विधि। इकाई में आप दोनों विधियों का विस्तार से अध्ययन करेंगे, उनके अर्थ, प्रकार, गुण-दोषों को भी समझेंगे।

सामान्यतः प्रत्येक विज्ञान का उद्देश्य व्यवस्थित अध्ययन, अवलोकन एवं विश्लेषण के माध्यम से अपने क्षेत्र में कारण एवं प्रभाव के बीच संबंध स्थापित करके कुछ निष्कर्ष प्राप्त करना होता है। इसके लिए प्रयुक्त विधियाँ उस विज्ञान की अध्ययन विधि कहलाती हैं। जिसका अध्ययन आप इस इकाई के अंतर्गत करेंगे।

5.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- ✓ अर्थशास्त्र की अध्ययन की विधियों से अवगत हो सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र की अध्ययन विधियों के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- ✓ निगमनात्मक विधि का अर्थ, गुण एवं दोषों को जान सकेंगे।
- ✓ आगमनात्मक विधि का अर्थ, गुण एवं दोषों को समझ सकेंगे।
- ✓ अर्थशास्त्र में की अध्ययन की विधियों के प्रयोगों को समझ सकेंगे।

5.3 अध्ययन विधि का परिचय (Introduction of Method of Study)

अध्ययन विधि से आशय उस तर्कपूर्ण विधि से होता है जिसका प्रयोग सत्यता की खोज करने के लिए किया जाता हैं। सामान्यतः प्रत्येक विज्ञान का उद्देश्य विधिवत् अध्ययन, अवलोकन एवं विश्लेषण द्वारा अपने क्षेत्र में कारण और परिणाम के मध्य सम्बन्ध स्थापित करके कुछ निष्कर्षों को प्राप्त करना होता है। इस अध्ययन हेतु जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है, वह उस विज्ञान की अध्ययन विधि कहलाती है। अन्य विज्ञानों की तरह से अर्थशास्त्र के भी अपने नियम एवं सिद्धान्त हैं, जिन्हें आर्थिक नियमों अथवा आर्थिक सिद्धान्तों के नाम से जाना जाता है। आर्थिक नियम आर्थिक घटनाओं के कारण एवं परिणाम के बीच सम्बन्ध को व्यक्त करते हैं। आर्थिक नियमों के निर्माण के लिए कुछ विधियों का सहारा लेना पड़ता है। **कोसा (Cossa)** के अनुसार ***"विधि शब्द का अर्थ उस तर्कपूर्ण विधि से होता है जिसका प्रयोग सच्चाई को खोजने अथवा उसे व्यक्त करने के लिए किया जाता है। (Method means the logical process used in discovering or in demonstrating the turth.)"*** आर्थिक नियमों की रचना के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है वे आर्थिक अध्ययन की विधियाँ कहलाती हैं। अर्थशास्त्र में इन विधियों का अत्यधिक महत्त्व होता है। **बेजहाट (Begehot)** के शब्दों में, ***"यदि आप ऐसी समस्याओं को बिना किसी विधि के हल करना चाहते हैं तो आप ठीक उसी प्रकार असफल रहेंगे, जिस प्रकार एक असाधारण आक्रमण के द्वारा किसी आधुनिक सैनिक दुर्ग को जीतने में।"***

5.4 अध्ययन विधि के प्रकार (Types of Method of Study)

अर्थशास्त्र एक विज्ञान है। वह विधि जिसके द्वारा आर्थिक तथ्यों का अध्ययन करके आर्थिक नियमों का निर्माण किया जाता है, अर्थशास्त्र की अध्ययन विधि कहलाती है। अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए दो विधियों का उपयोग किया जाता है, निगमनात्मक विधि और आगमनात्मक विधि।

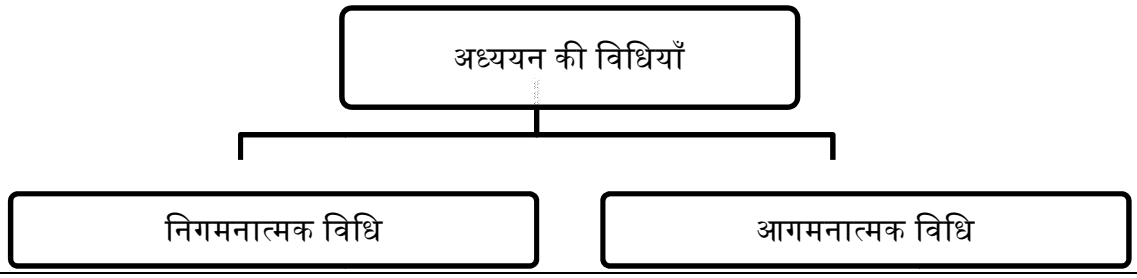

5.4.1 निगमनात्मक विधि (Deductive Method)

निगमनात्मक विधि का अर्थ (Meaning of Deductive Method)

निगमनात्मक विधि में कारण और परिणाम के बीच संबंध स्थापित करने के लिए तर्क की सहायता लेनी पड़ती है। इस विधि में तर्क का क्रम **सामान्य (General) से विशिष्ट (Particular) की ओर** होता है। इसमें कुछ सर्वमान्य स्वयंसिद्ध तथा निर्विवाद मान्यताओं के आधार पर आर्थिक नियमों का निर्माण किया जाता है। इस विधि को विश्लेषणात्मक (Analytical), परिकल्पनात्मक (Hypothetical) अथवा सार या अमूर्त (Abstract) विधि भी कहते हैं।

इस विधि के अनुसार सर्वप्रथम हम मानव व्यवहार से सम्बन्धित कुछ सर्वमान्य, प्रचलित एवं निर्विवाद सत्यों को आधार मान लेते हैं और तत्पश्चात् तर्क एवं विश्लेषण की सहायता से किसी विशिष्ट सत्य या नियम का प्रतिपादन कर दिया जाता है। जिन सामान्य सत्यों को हम आधार मानते हैं वे या तो स्वयं-सिद्ध होते हैं अथवा अनुभव पर आधारित होते हैं। इस प्रकार इस विधि की तकनीक या तर्क का क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।

निगमनात्मक विधि के उदाहरण (Examples of Deductive Method)

निगमनात्मक विधि की सहायता से आर्थिक समस्याओं की खोज करने वाला अर्थशास्त्री विवादरहित तथ्यों को अपने अध्ययन का आधार बनाता है और फिर इन सर्वमान्य तथ्यों की सहायता से विशिष्ट तथ्यों को परखता है। अर्थशास्त्र में जब भी किसी समस्या का अध्ययन करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है तो अर्थशास्त्री को उस समस्या से संबंधित आधारभूत तथ्यों को एकत्रित करना होता है और फिर उनके आधार पर तर्क का सहारा लेकर निष्कर्ष निकालने होते हैं।

अर्थशास्त्र में, एक सामान्य सत्य के रूप में हमारी यह मान्यता है कि सभी मनुष्यों का व्यवहार विवेकपूर्ण होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि सभी उपभोक्ता अपनी सन्तुष्टि को अधिकतम करना चाहते हैं। वास्तव में, इस प्रचलित सत्य के आधार पर ही और व्यक्तिगत प्रयोगों की सहायता से 'अधिकतम सन्तुष्टि का नियम' या 'सम-सीमान्त उपयोगिता नियम' का प्रतिपादन किया जा सका है। दूसरा उदाहरण व्यक्ति या समाज की उपभोग-क्षमता सीमित होती है अर्थात् आवश्यकता-विशेष की पूर्ण सन्तुष्टि की जा सकती है। वास्तव में, इस सामान्य सत्य के आधार पर ही 'उपयोगिता ह्रासमान नियम' का निर्माण किया गया है। इसी प्रकार यह एक सर्वसिद्ध मान्यता है कि सभी फर्म अपने लाभ को अधिकतम करना चाहती है। इस 'सामान्य' मान्यता के आधार पर 'विशिष्ट' निष्कर्ष यह निकलता है कि फर्म का सन्तुलन (अर्थात् अधिकतम लाभ) उस बिन्दु पर होगा जहाँ उसकी सीमान्त लागत (MC) उसके सीमान्त आगम (MR) के बराबर हो जाती है।

निगमनात्मक विधि के प्रकार (Types of Deductive Method)

निगमनात्मक विधि को सामान्यता दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है: गणितीय तथा गैर-गणितीय। गणितीय विधि का प्रयोग आधुनिक (Modern) अर्थशास्त्रियों ने अधिक किया है जबकि गैर-गणितीय विधि का प्रयोग परंपरावादी (Classical) तथा नव-परंपरावादी (Neo-Classical) अर्थशास्त्रियों ने अधिक किया है। सीनियर (Senior), जे. एस. मिल (J. S. Mill), मार्शल (Marshall) और

रिकार्डो (Ricardo) जैसे प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अपने सिद्धातों को प्रतिपादित करने में इस विधि का विस्तृत रूप से प्रयोग कर अर्थशास्त्र के सिद्धातों को विकसित किया। ये सभी अर्थशास्त्री आगमनात्मक विधि की तुलना में निगमनात्मक विधि के कट्टर समर्थक थे। आधुनिक काल में सीमांतवादी विचारधारा के अर्थशास्त्री इस विधि के विशेष रूप से पक्षपाती हैं।

निगमनात्मक विधि के गुण (Merits of Deductive Method)

निगमनात्मक विधि के विषय में **कैरनीज (Cairnes)** ने लिखा है ***"यदि उचित नियंत्रणों के भीतर निगमनात्मक विधि का प्रयोग किया जाए तो यह मानव बुद्धि द्वारा विकसित अनुसंधान की विभिन्न विधियों में सर्वाधिक शक्तिशाली है। (The method of deduction is incomparably, when conducted under proper checks, the most powerful instrument of discovery ever wielded by human intelligence.)"*** **कैरनीज (Cairnes)** ने यह बात बढ़ा-चढ़ा कर कही हैं, फिर भी इसमें संदेह नहीं है कि अध्ययन की यह विधि निम्नलिखित गुणों से युक्त हैं

1. **सरलता (Simplicity) -** इस विधि का सबसे बड़ा गुण इसकी सरलता है। इसका कारण यह है कि मानव व्यवहार से सम्बन्धित कुछ आधारभूत तथ्यों की सहायता से हम कम समय में अनेक महत्वपूर्ण विशिष्ट परिणाम निकाल सकते हैं। इतना ही नहीं, निगमनात्मक विधि के अंतर्गत आँकड़ों को एकत्र करने, उन्हें व्यवस्थित करने तथा वर्गीकृत करने की आवश्यकता नहीं होती है, जिसके फलस्वरूप सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति भी इस विधि का उपयोग बिना किसी कठिनाई के कर सकता है। सीनियर (Senior), जे. एस. मिल (J. S. Mill), रिकार्डो (Ricardo) आदि ने अनेक नियम सर्वमान्य तथ्यों के आधार पर ही प्रतिपादित किए हैं। यदि इन विद्वानों ने उस समय आगमनात्मक विधि का सहारा लिया होता तो वे आँकड़ों के अभाव के कारण किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते। निगमनात्मक विधि आगमनात्मक विधि की तुलना में सरल, मितव्ययी, समय तथा श्रम की बचत करने वाली है।
2. **निश्चितता (Certainty) -** निगमनात्मक विधि से निकाले गए निष्कर्ष अधिक निश्चित एवं स्पष्ट होते हैं इसके दो कारण है पहला तो यह कि ये तर्क पर आधारित होते हैं तथा दूसरा इनके विश्लेषण में गणितीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। यदि विषय की स्वयं-सिद्धियाँ (axioms) तथा मान्यताएं ठीक हैं तो इस विधि द्वारा निकाले गए निष्कर्ष निश्चित रूप से विश्वसनीय एवं त्रुटिरहित होते हैं। निगमनात्मक विधि द्वारा ना केवल अर्थशास्त्र में ही सुनिश्चित नियमों का निर्माण हुआ है बल्कि **आइंस्टीन (Einstein)** का विख्यात **सापेक्षिकता का सिद्धांत (Theory of relativity)** निगमनात्मक विधि पर ही निर्भर है जिसकी सत्यता के विषय में किसी भी प्रकार का संदेह नहीं किया जाता।
3. **सर्वव्यापकता (Universality) -** इस विधि द्वारा बनाए गए नियम सर्वव्यापी तथा सर्वकालीन होते हैं और उन पर अलग-अलग परिस्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योकि ये नियम मनुष्य की सामान्य प्रकृति एवं स्वभाव पर आधारित होते हैं इसलिए उन्हें किसी भी देश, समाज या काल में लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए - निगमनात्मक विधि पर आधारित उपयोगिता ह्रास नियम है। जोकि प्रत्येक देश तथा प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होता है।
4. **आर्थिक विश्लेषण के लिए अधिक उपयुक्त (More useful for Economic analysis) -** अन्य विज्ञानों की तुलना में अर्थशास्त्र में परीक्षण एवं प्रयोग का क्षेत्र बहुत सीमित है। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत भौतिकशास्त्र व रसायनशास्त्र की भाँति बड़े पैमाने पर प्रयोग नहीं किए जा सकते इसलिए निगमनात्मक विधि ही आर्थिक विश्लेषण का उपयुक्त आधार हो सकती है।

5. **निष्पक्षता (Unbiased) -** निगमनात्मक विधि द्वारा निकाले गए निष्कर्ष पूरी तरह से निष्पक्ष होते हैं जिसके दो कारण हैं। पहला, इन्हें सामान्य सत्य की कसौटी पर परखा जाता है तथा दूसरा, ये शोधकर्ता के विचारों एवं दृष्टिकोण से प्रभावित नहीं होते हैं। इसके विपरीत आगमनात्मक विधि में शोधकर्ता तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर उन पर अपने निजी विचारों की छाप आसानी से डाल सकता है।
6. **भविष्यवाणी की सम्भावना (Probability of Prediction) -** निगमनात्मक विधि का एक अन्य गुण यह है कि इसके द्वारा आर्थिक घटनाओं के बारे में अधिक अच्छे ढंग से भविष्यवाणी की जा सकती है। इसका कारण यह है कि निगमनात्मक विधि से निकाले गए निष्कर्ष अत्यधिक निश्चित एवं दृढ़ प्रकृति के होते हैं। इसका कारण यह है कि जब निगमनात्मक विधि से कारण और परिणाम के बीच संबंध का पता चल जाता है तो भविष्य का अनुमान लगाना कठिन नहीं होता।
7. **आगमनात्मक विधि की पूरक विधि (Complimentary method to inductive method) -** आगमनात्मक विधि की सहायता से निकाले गए निष्कर्षो की सत्यता की जाँच निगमनात्मक विधि द्वारा ही की जाती है। अत: इस दृष्टि से निगमनात्मक विधि को आगमनात्मक विधि की पूरक विधि कहा जा सकता है।

निगमनात्मक विधि के दोष (Demerits of Deductive Method)

निगमनात्मक विधि अपने अनेक गुणों के बावजूद दोषयुक्त है और इसके प्रयोग में अनेक प्रकार के खतरे एवं जोखिम है। अध्ययन की इस विधि के निम्नलिखित दोष हैं।

1. **निष्कर्ष वास्तविकता से कोसों दूर (Findings far from Reality) -** निगमनात्मक विधि द्वारा बनाए गए नियम कुछ मान्यताओं पर आधारित होते हैं और ये नियम तभी सत्य हो सकते हैं जबकि उनकी मान्यतायें भी सत्य सिद्ध होती हों। लेकिन जैसा कि हम जानते हैं आर्थिक दशाएँ या वस्तुएँ कभी यथावत् नहीं रहतीं इसलिए जिन मान्यताओं पर निगमनात्मक निष्कर्ष आधारित होते हैं वे या तो गलत सिद्ध होते हैं या फिर वे नियम आंशिक रूप में ही सत्य हो सकते है।
2. **सर्वव्यापकता पर संदेह (Suspicion of Omnipresence) -** यह कहना गलत है कि निगमनात्मक विधि के आधार पर बनाए गए नियम सर्वव्यापी होते हैं। इसका कारण यह है कि आर्थिक दशाएं स्थान तथा समय के साथ-साथ बदलती रहती है इसलिए एक स्थान या परिस्थिति में निकाले गए निष्कर्ष किसी अन्य स्थान या समय के लिए सही नहीं हो सकते हैं।
3. **प्रामाणिकता की पुष्टि करने में कठिनाई (Difficulty in verifying authenticity) -** इस विधि का एक अन्य दोष यह है कि आधारभूत सत्यों को परखने तथा उनकी जाँच करने की कोई कार्य-विधि नहीं है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों पर तो यह आरोप विशेषरूप से लगाया जाता है कि उन्होंने एक अमूर्त एवं काल्पनिक सत्य को ही वास्तविक मान लिया और उसके आधार पर विशिष्ट निष्कषों की सृष्टि कर डाली। यही कारण था कि अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित अवास्तविक नियम बनते चले गए जिनकी आज कटु आलोचना तक की जाती है। **निकल्सन (Nicholson)** का भी कहना है कि ***"निगमनात्मक विधि का सबसे बड़ा खतरा इस बात में निहित है कि इस विधि के अन्तर्गत निष्कर्षों के परखने सम्बन्धी कार्य के प्रति स्वाभाविक अरुचि पायी जाती है।"***
4. **प्रावैगिक विश्लेषण की असंभवता (Impossibility of Dynamic analysis) -** निगमनात्मक विधि का एक प्रमुख दोष यह भी है कि इसके द्वारा आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन केवल 'स्थैतिक दशाओं' में ही किया जा सकता है और 'प्रावैगिक आर्थिक विश्लेषण' सम्भव नहीं हो पाता। इसका कारण यह है कि चूंकि प्रावैगिक अर्थशास्त्र आर्थिक दशाओं को स्थिर नहीं मानता जबकि निगमनात्मक विश्लेषण आर्थिक दशाओं को स्थिर मानकर चलता है। अत: स्वाभाविक है कि ऐसी दशा में प्रावैगिक विश्लेषण निगमनात्मक विधि के क्षेत्र से बाहर बना रहता है जोकि आपत्तिजनक है।

5. **विश्लेषण की अपूर्ण विधि (Incomplete method of analysis) -** अर्थशास्त्र की अनेक ऐसी समस्याएं भी हैं जिनका समाधान या विश्लेषण निगमनात्मक विधि द्वारा किया ही नहीं जा सकता। अत: इस दृष्टि से आवश्यक हो जाता है कि अर्थशास्त्र का पूर्ण विकास करने के लिए निगमनात्मक विधि के साथ-साथ किन्हीं अन्य विधियों का भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

5.4.2 आगमनात्मक विधि (Inductive Method)

आगमनात्मक विधि का अर्थ (Meaning of Inductive Method)

आगमनात्मक विधि का अर्थ यह विधि निगमनात्मक विधि के बिल्कुल विपरीत है। इस विधि के अन्तर्गत तर्क का क्रम **विशिष्ट (Particular) से सामान्य (General) की ओर** होता है। आगमनात्मक विधि में विशिष्ट सत्यों के आधार पर सामान्य सत्यों का निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से सर्वप्रथम कुछ तथ्यों का अध्ययन एवं निरीक्षण किया जाता है तत्पश्चात् उनसे कुछ विशिष्ट निष्कर्ष निकाले जाते हैं और अन्त में उन विशिष्ट निष्कर्षों की एकरूपता की जाँच करके सामान्य 'सिद्धान्तों' या 'नियमों' का प्रतिपादन कर दिया जाता है। **जे. के. मेहता (J. K. Mehta)** के शब्दों में, ***"आगमनात्मक विधि तर्क की विधि है जिसमें हम बहुत-सी व्यक्तिगत आर्थिक घटनाओं के आधार पर कारणों और परिणामों के सामान्य सम्बन्ध स्थापित करते है।"***

इस प्रकार विश्लेषण की यह विधि अवलोकन (Observation), प्रयोग (Experiment) तथा अन्वेषण (Investigation) पर आधारित होने के कारण वास्तविकता के अधिक निकट समझी जाती है। आगमनात्मक विधि को ऐतिहासिक (Historical), समन्वयमूलक (Coordination oriented), अनुभावत्मक (Empirical) तथा प्रयोगात्मक (Experimental) विधि भी कहते हैं।

इस विधि के विकास का श्रेय जर्मनी के ऐतिहासिक सम्प्रदाय के प्रमुख अर्थशास्त्रियों जैसे फ्रेड्रिक लिस्ट (Friedrich List), रोशर (Roscher), जेम्स इन्ग्राम (James Ingram), वॉन थुनेन (Von Thunen) तथा वैगनर (Wagner) आदि को दिया जाता है। ब्रिटेन के अर्थशास्त्री किल्फ लैसली (Killf Lassally) भी आगमनात्मक विधि के प्रमुख समर्थक रहे हैं।

आगमनात्मक विधि के उदाहरण (Examples of Inductive Method)

मान लीजिए जब किसी वस्तु की कीमत कम हो जाती है, तो यह देखा जाता है कि पहले की तुलना में अधिक लोग उस वस्तु को खरीदने लगे हैं। यदि विभिन्न बाजारों में तथा विभिन्न क्रेताओं पर किए गए सर्वेक्षण के बाद उन सभी का व्यवहार एक सा नजर आता है तो ऐसी स्थिति में यह सामान्य निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ***'वस्तुओं की कीमत कम होने पर उनकी माँग बढ़ जाती है और कीमत के बढ़ जाने पर माँग घट जाती है।'*** इसे माँग का नियम भी कहते हैं। आगमनात्मक विधि से किए गए विश्लेषण से ही माँग-नियम का प्रतिपादन संभव हो सका है।

इस विधि का आश्रय लेकर ही अठारहवीं शताब्दी में **ग्रेगरी किंग (Gregory King)** ने गेहूं के मूल्य निर्धारण का सिद्धांत प्रतिपादित किया था। **माल्थस (Malthus)** ने अपने **जनसंख्या सिद्धांत** के प्रतिपादन में इसी पद्धति का प्रयोग किया है। **एंजिल (Engel)** का '**उपभोग नियम**' तथा **परेटो (Pareto)** का आय के '**असमान वितरण का सिद्धांत**' भी इस विधि द्वारा बनाए गए सिद्धातों के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। आधुनिक काल में तो तथ्यों की जांच के लिए अर्थमिति (econometrics) का प्रयोग बहुत बढ़ गया है।

आगमनात्मक विधि के प्रकार (Types of Inductive Method)

आगमनात्मक विधि के दो रूप है-

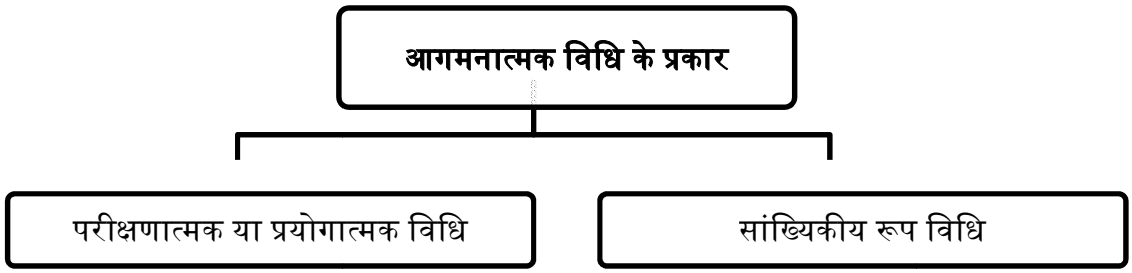

नीचे इन दोनों का थोड़ा विस्तार के साथ विवेचन करेंगे-

(क) प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method) - इस विधि में नियन्त्रित दशाओं के अन्तर्गत प्रयोग किए जाते हैं और तब उनके आधार पर सामान्य सत्यों का प्रतिपादन कर दिया जाता है। प्रयोगात्मक निगमनात्मक विधि का प्रयोग मुख्यतया भौतिक व प्राकृतिक विज्ञानों के नियम बनाने के लिए ही अधिक उपयुक्त समझा जाता है क्योंकि इस प्रकार के विज्ञानों में परीक्षण का विषय पदार्थ या द्रव्य होता है जोकि जीवरहित होने के कारण किसी प्रकार का कोई प्रतिरोध नहीं करता परन्तु इसके विपरीत अर्थशास्त्र का विषय 'पदार्थ' नहीं बल्कि 'मनुष्य' है और मनुष्य को प्रयोगशाला में लाकर उस पर कोई भी प्रयोग या परीक्षण करना सम्भव नहीं हो पाता। **बोल्डिग (Boulding)** ने इसे एक उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट किया है। मान लीजिए हम स्कूली बच्चों पर दूध के आहार का प्रभाव देखना चाहते हैं। इसके लिए दो स्कूल छांटे गए। एक स्कूल के बच्चों को दूध दिया गया और दूसरे स्कूल के बच्चों को दूध नहीं दिया गया। इस प्रकार हम 'प्रयोगात्मक विधि' द्वारा दूध के प्रभाव का अध्ययन कर सकते हैं। लेकिन **बोल्डिग (Boulding)** का कहना है कि अर्थशास्त्र में ऐसे नियन्त्रित प्रयोगों की सम्भावना बहुत ही कम हैं। उदाहरणार्थ, व्यापारियों पर ब्याज की ऊँची दरों का प्रभाव जानने के लिए यह सम्भव नहीं है कि उनको दो समूहों में बाँट दिया जाए अर्थात् एक समूह पर ऊँची ब्याज दर का प्रभाव देखा जाये और दूसरे पर नीची ब्याज दर की प्रतिक्रिया देखी जाए। यही कारण है कि अर्थशास्त्र में प्रयोगात्मक विधि की अपेक्षा सांख्यिकीय विधि का ही अधिक प्रयोग किया जाता है।

(ख) सांख्यिकीय विधि (Statistical Method) - आगमनात्मक विश्लेषण को इस विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम विभिन्न क्षेत्रों या तथ्यों से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। तत्पश्चात् उनका वर्गीकरण व सारणीयन किया जाता है और अन्त में सांख्यिकीय सूत्रों की सहायता से उनका विश्लेषण करके सामान्य सत्य या आर्थिक सिद्धान्त प्रतिपादित कर दिए जाते हैं। अर्थशास्त्र में अधिकतर सांख्यिकीय विधि का ही प्रयोग किया जाता है।

आगमनात्मक विधि के गुण (Merits of Inductive Method)

अध्ययन की यह विधि निम्नलिखित गुणों से युक्त हैं-

1. **निष्कर्षों का सही एवं विश्वसनीय होना (Accurate and Reliable Conclusion) -** आगमनात्मक विधि में निष्कर्ष, वास्तविक तथ्यों, आँकड़ों एवं प्रयोगों की सहायता से निकाले जाते हैं इसलिए ये निष्कर्ष वास्तविकता से अधिक निकट एवं विश्वसनीय होते हैं। यदि किसी व्यक्ति को निष्कर्षों पर सन्देह हो तो वह स्वयं आँकड़े एवं तथ्य एकत्र करके पुन: निष्कर्ष निकाल सकता है।
2. **निष्कर्षों की जाँच सम्भव (Verification is possible) -** इस विधि में निकाले गए निष्कर्षों को वास्तविक प्रयोगों, आँकड़ों एवं तथ्यों के आधार पर जाँचा जा सकता है। जब नए प्रयोगों द्वारा निष्कर्षों की बार-बार पुष्टि की जाती है तो जनता का इस पद्धति पर विश्वास बढ़ता जाता है।
3. **प्रावैगिक दृष्टिकोण (Dynamic Approach) -** आगमनात्मक विधि प्रावैगिक दृष्टिकोण लिए हुए है। इस विधि में एक बार निकाले गए निष्कर्षों एवं सिद्धान्तों को सदैव के लिए सत्य नहीं माना जाता है।

आर्थिक परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं इसलिए इस विधि में बदलती परिस्थितियों के अनुसार नवीन आँकड़े एकत्रित करके अथवा नवीन प्रयोग करके पुराने निष्कर्षों की जाँच की जा सकती है और उनमें आवश्यक संशोधन किया जा सकता है।

4. **निगमनात्मक विधि की पूरक (Complimentary to deductive Method) -** आगमनात्मक विधि के द्वारा हम उन निष्कर्षों की जाँच कर सकते हैं जो निगमनात्मक विधि द्वारा निकाले गए हैं। अत: यह विधि निगमनात्मक विधि की पूरक है।
5. **समष्टि आर्थिक विश्लेषण में अधिक उपयोगी (More useful in Micro analysis) -** आगमनात्मक विधि समष्टि आर्थिक विश्लेषण में अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। राष्ट्रीय आय, उपभोग, बचत एवं विनियोग के सम्बन्ध में हम आँकड़े एकत्रित करके उनकी सहायता से विभिन्न प्रकार के आर्थिक सम्बन्ध ज्ञात कर सकते हैं और इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिए आर्थिक नीतियों में संशोधन के सुझाव दे सकते हैं।

आगमनात्मक विधि के दोष (Demerits of Inductive Method)

जहाँ आगमनात्मक विधि में उपरोक्त अनेक गुण है, वहाँ इस विधि में कुछ ऐसे दोष भी हैं जो इसकी व्यवहारिक उपयोगिता को कम कर देते है। इसके कुछ महत्वपूर्ण दोष निम्नलिखित है।

1. **जटिल एवं कठिन (Complex and Difficult) -** आगमनात्मक विधि में आँकड़ों को एकत्रित कर वर्गीकरण करने के उपरान्त उनका विश्लेषण करना होता है। अनेक बार इस विधि में नियन्त्रित प्रयोग भी करने होते हैं। ये सब प्रयोग अत्यन्त जटिल एवं कठिन होते हैं। एक सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति इस विधि की कार्य विधि को सरलतापूर्वक नहीं समझ सकता है। माल्थस ने जनसंख्या का सिद्धांत प्रतिपादित करने के लिए अपने समय के यूरोप के कुछ देशों से प्राप्त आँकड़ों का परीक्षण किया था। ये आंकड़े तत्कालीन यूरोप में जनसंख्या की प्रवृत्ति समझने के लिए पर्याप्त हो सकते थे किन्तु संपूर्ण विश्व के लिए सार्वकालिक जनसंख्या का सिद्धांत प्रतिपादित करने के लिए वे अपर्याप्त थे। यही कारण है कि माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत दोषपूर्ण कहलाता है।
2. **पक्षपात का भय (Fear of biasness) -** आगमनात्मक विधि में एक शोधकर्ता पक्षपात कर सकता है। वह अपनी विचारधारा के अनुरूप प्रयोग की इकाइयाँ चुन सकता है और उनसे इच्छित निष्कर्ष निकाल सकता है। इसलिए कहा जाता है कि ***"आँकड़े कुछ भी सिद्ध कर सकते हैं और कुछ भी सिद्ध नहीं कर सकते।"***शोधकर्ता अपनी इच्छानुसार निष्कर्षों को आवश्यक रूप दे सकता है।
3. **निष्कर्ष अनिश्चित (Uncertain Conclusion) -** इस विधि द्वारा निकाले गए निष्कर्षों में अनिश्चितता की सम्भावना रहती है। स्वयं **बोल्डिंग (Boulding)** ने माना है कि ***"सांख्यिक सूचना केवल ऐसी बातें या निष्कर्षों को प्रस्तुत कर सकती हैं जिनके होने की सम्भावना कम या अधिक होती है। वह पूर्णतः निश्चित निष्कर्ष नहीं दे सकती है। (Statistical information can only give us propositions whose truth is more or less probable; it can never give us certainty.)"***
4. **खर्चीली (Expensive) -** आगमनात्मक विधि में निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए विभिन्न प्रकार के आँकड़ों का संग्रह एवं प्रयोग करना आवश्यक होता है। इस कार्य के लिए गणकों (enumerators) एवं अन्वेषकों को रखना पड़ता है जिसमें अत्यधिक समय एवं धन का व्यय होता है। इसी कारण यह विधि अत्यधिक खर्चीली होती है।

5. **सीमित क्षेत्र के अवलोकन पर आधारित निष्कर्ष दोषपूर्ण (Conclusions drawn on limited observations are defective) -** आगमनात्मक विधि के निष्कर्षों की सत्यता आँकड़ों एवं प्रयोगों के क्षेत्र पर निर्भर करती है। यदि बहुत थोड़े से आँकड़ों एवं प्रयोगों के आधार पर कोई निष्कर्ष अथवा सिद्धान्त प्रतिपादित कर दिए जाते हैं तो वे वास्तविकता से दूर होते हैं।
6. **तथ्यों में भटक जाने की संभावना (Possibility of getting lost in facts) -** आगमनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए प्राय: शोधकर्ता के तथ्यों में भटक जाने की संभावना रहती है। इस विधि का प्रयोग करते समय अर्थशास्त्रियों के सामने कोई कल्पना नहीं होती जो निर्दिष्ट सामाजिक उद्देश्य की ओर संकेत करती रहे। जर्मनी की ऐतिहासिक विचारधारा के प्रारंभिक अर्थशास्त्री रोश्चर (Roscher), हिल्डेब्रांड (Hildebrand) तथा कार्ल नीज (Karl Knies) के साथ ऐसा ही हुआ है। ये अर्थशास्त्री तथ्यों में इतने अधिक उलझ गए थे कि इन्होंने अर्थशास्त्र के नियमों का निर्माण करने के स्थान पर अर्थव्यवस्था का इतिहास लिख डाला।
7. **अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के लिए कम उपयोगी (Less useful for social sciences like Economics) -** अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जिसमें मानव व्यवहार पर नियन्त्रित प्रयोगों के लिए बहुत कम क्षेत्र होता है इसलिए इसका आर्थिक विश्लेषण में अधिक प्रयोग नहीं हो सकता है।
8. **अर्थशास्त्र के विकास के लिए अपर्याप्त (Inadequate for the development of Economics) -** यदि केवल इसी विधि का प्रयोग आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए किया जाएगा तो अर्थशास्त्र विषय का विकास रुक जाएगा क्योंकि अनेक समस्याएँ इस विधि से हल नहीं की जा सकती हैं। विश्लेषणात्मक पद्धति की सहायता के बिना आगमनात्मक विधि के द्वारा आर्थिक पहलू का केवल वर्णन ही संभव होता है। **ई. एफ. एम. डर्बिन (E. F. M. Durbin)** ने इस संबंध में लिखा है ***"तथ्य स्वयं कुछ नहीं कहते। केवल विश्लेषण, तुलना, कल्पना तथा भविष्यवाणी द्वारा उनसे कुछ कहलाया जा सकता है।"***अत: यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र के अंतर्गत आने वाली समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए आगमनात्मक विधि अपने आप में अपूर्ण है।

इस प्रश्न पर प्रारम्भ से ही मतभेद रहा है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए निगमनात्मक तथा आगमनात्मक विधियों में से कौन-सी विधि अधिक श्रेष्ठ है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने निगमनात्मक विधि का प्रयोग किया है जबकि ऐतिहासिक सम्प्रदाय के प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विश्लेषण के लिए आगमनात्मक विधि का प्रयोग किया। यद्यपि दोनों ही विधियों में गुण एवं दोष हैं तथापि ये दोनों ही परस्पर सहायक हैं प्रतियोगी नहीं। आधुनिक अर्थशास्त्रियों का भी यही विश्वास है। यही कारण है कि आधुनिक अर्थशास्त्री दोनों विधियों के समन्वित रूप को अपनाते हैं ।

5.5 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1.अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए ..... (दस/दो) विधियों का उपयोग किया जाता है।

2. अर्थशास्त्र में, एक सामान्य सत्य के रूप में हमारी यह मान्यता है कि सभी मनुष्यों का व्यवहार ..... (विवेकपूर्ण / अविवेकपूर्ण) होता है।

3. गणितीय विधि का प्रयोग ..... (आधुनिक/परंपरावादी) अर्थशास्त्रियों ने अधिक किया है।

4. गैर-गणितीय विधि का प्रयोग ..... (आधुनिक/परंपरावादी) तथा ..... (आधुनिक/ नव परंपरावादी) अर्थशास्त्रियों ने अधिक किया है।

5. आगमनात्मक विधि अवलोकन, प्रयोग तथा ..... (अन्वेषण/विचार) पर आधारित होने के कारण वास्तविकता के अधिक निकट समझी जाती है।
6. निगमनात्मक विधि का आश्रय लेकर ही ग्रेगरी किंग (Gregory King) ने ..... (गेहूं /बैकिंग) के मूल्य निर्धारण का सिद्धांत प्रतिपादित किया था।

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. जिन सामान्य सत्यों को हम आधार मानते हैं वे या तो स्वयं-सिद्ध होते हैं अथवा अनुभव पर आधारित होते हैं।

(सत्य / असत्य)

2. निगमनात्मक विधि को सामान्यता दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है: गणितीय तथा गैर-गणितीय।

(सत्य / असत्य)

3. सीनियर, जे. एस. मिल, मार्शल और रिकार्डो आधुनिक अर्थशास्त्री हैं।

(सत्य / असत्य)

4. निगमनात्मक विधि को विश्लेषणात्मक (Analytical), परिकल्पनात्मक (Hypothetical) अथवा सार या अमूर्त (Abstract) विधि भी कहते हैं।

(सत्य / असत्य)

5. आगमनात्मक विधि को ऐतिहासिक, समन्वयमूलक, अनुभावत्मक तथा प्रयोगात्मक विधि भी कहते हैं।

(सत्य / असत्य)

6. माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धांत के प्रतिपादन में आगमनात्मक विधि का प्रयोग किया है।

(सत्य / असत्य)

5.6 सारांश (Summary)

अन्य विज्ञानों की तरह ही अर्थशास्त्र के भी अपने नियम एवं सिद्धान्त हैं। इन्ही आर्थिक नियमों के निर्माण के लिए कुछ विधियों का सहारा लेना पड़ता है। जिस विधि के द्वारा आर्थिक तथ्यों का अध्ययन करके आर्थिक नियमों का निर्माण किया जाता है, अर्थशास्त्र की अध्ययन विधि कहलाती है। अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए दो विधियों का उपयोग किया जाता है, निगमनात्मक विधि और आगमनात्मक विधि।

निगमनात्मक विधि में कारण और परिणाम के बीच संबंध स्थापित करने के लिए तर्क की सहायता लेनी पड़ती है। इस विधि में तर्क का क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है। इस विधि के अनुसार सर्वप्रथम हम मानव व्यवहार से सम्बन्धित कुछ सर्वमान्य, प्रचलित एवं निर्विवाद सत्यों को आधार मान लेते हैं और तत्पश्चात् तर्क एवं विश्लेषण की सहायता से किसी विशिष्ट सत्य या नियम का प्रतिपादन कर दिया जाता है। जिन सामान्य सत्यों को हम आधार मानते हैं वे या तो स्वयं-सिद्ध होते हैं अथवा अनुभव पर आधारित होते हैं। इसमें सरलता, निश्चितता, सर्वव्यापकता, आर्थिक विश्लेषण के लिए अधिक उपयुक्त और भविष्यवाणी की सम्भावना जैसे गुण विद्यमान रहते है। परन्तु इसमें निष्कर्ष वास्तविकता से कोसों दूर, सर्वव्यापकता पर संदेह, प्रामाणिकता की पुष्टि करने में कठिनाई, प्रावैगिक विश्लेषण की असंभवता और विश्लेषण की अपूर्ण विधि जैसे दोष भी हैं।

आगमनात्मक विधि का अर्थ यह विधि निगमनात्मक विधि के बिल्कुल विपरीत है। इस विधि के अन्तर्गत तर्क का क्रम विशिष्ट से सामान्य की ओर होता है। आगमनात्मक विधि में विशिष्ट सत्यों के आधार पर सामान्य सत्यों का निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से सर्वप्रथम कुछ तथ्यों का अध्ययन एवं निरीक्षण किया जाता है तत्पश्चात् उनसे कुछ विशिष्ट निष्कर्ष निकाले जाते हैं और अन्त में उन विशिष्ट निष्कर्षों की एकरूपता की जाँच करके सामान्य 'सिद्धान्तों' या 'नियमों' का प्रतिपादन कर दिया जाता है।

इसमें निष्कर्षों का सही एवं विश्वसनीय होना, निष्कर्षों की जाँच सम्भव, प्रावैगिक दृष्टिकोण, निगमनात्मक विधि की पूरक, समष्टि आर्थिक विश्लेषण में अधिक उपयोगी जैसे गुण विद्यमान रहते है। परन्तु इसमें जटिल एवं कठिन, पक्षपात का भय, निष्कर्ष अनिश्चित, खर्चीली, सीमित क्षेत्र के अवलोकन पर आधारित निष्कर्ष दोषपूर्ण तथ्यों में भटक जाने की संभावना, अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के लिए कम उपयोगी और अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के लिए कम उपयोगी जैसे दोष भी विद्यमान है।

5.7 शब्दावली (Glossary)

- **अध्ययन विधि (Method of Study) :** अध्ययन विधि से आशय उस तर्कपूर्ण विधि से होता है जिसका प्रयोग सत्यता की खोज करने के लिए किया जाता हैं। प्रत्येक विज्ञान का उद्देश्य विधिवत् अध्ययन, अवलोकन एवं विश्लेषण द्वारा अपने क्षेत्र में कारण और परिणाम के मध्य सम्बन्ध स्थापित करके कुछ निष्कर्षों को प्राप्त करना होता है। इस हेतु जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है वह उस विज्ञान की अध्ययन विधि कहलाती है।
- **निगमनात्मक विधि (Inductive Method) :** निगमनात्मक विधि में कारण और परिणाम के बीच संबंध स्थापित करने के लिए तर्क की सहायता लेनी पड़ती है। इस विधि में तर्क का क्रम सामान्य (General) से विशिष्ट (Particular) की ओर होता है।
- **आगमनात्मक विधि (Deductive Method) :** इस विधि के अन्तर्गत तर्क का क्रम 'विशिष्ट (Particular) से सामान्य (General) की ओर' होता है। आगमनात्मक विधि में विशिष्ट सत्यों के आधार पर सामान्य सत्यों का निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से सर्वप्रथम कुछ तथ्यों का अध्ययन एवं निरीक्षण किया जाता है तत्पश्चात् उनसे कुछ विशिष्ट निष्कर्ष निकाले जाते हैं और अन्त में उन विशिष्ट निष्कर्षों की एकरूपता की जाँच करके सामान्य 'सिद्धान्तों' या 'नियमों' का प्रतिपादन कर दिया जाता है।
- **प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method) :** इस विधि में नियन्त्रित दशाओं के अन्तर्गत प्रयोग किए जाते हैं और तब उनके आधार पर सामान्य सत्यों का प्रतिपादन कर दिया जाता है।
- **सांख्यिकीय विधि (Statistical Method) :** इस विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम विभिन्न क्षेत्रों या तथ्यों से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। तत्पश्चात् उनका वर्गीकरण व सारणीयन किया जाता है और अन्त में सांख्यिकीय सूत्रों की सहायता से उनका विश्लेषण करके सामान्य सत्य या आर्थिक सिद्धान्त प्रतिपादित कर दिए जाते हैं।

5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. दो
2. विवेकपूर्ण
3. आधुनिक
4. परंपरावादी, नव परंपरावादी
5. अन्वेषण
6. गेहूं

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए –

1. सत्य
2. सत्य
3. असत्य

4. सत्य 5. सत्य 6. असत्य

5.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण***, शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

5.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics***, Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

5.11 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. आर्थिक अध्ययन की विभिन्न विधियों को स्पष्ट कीजिए।
2. आर्थिक अध्ययन की निगमनात्मक विधि का अर्थ, गुण एवं दोषों को लिखिए।
3. आर्थिक अध्ययन की आगमनात्मक विधि को परिभाषित कीजिए तथा इसके गुण-दोष बतलाइए।

इकाई- 6 अर्थशास्त्र की मूल समस्या
(Basic Problem of Economics)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

6.2 उद्देश्य (Objectives)

6.3 आर्थिक समस्या (Economic Problem)

- 6.3.1 आर्थिक समस्या का अर्थ (Meaning of Economic Problem)
- 6.3.2 आर्थिक समस्या की परिभाषा (Definition of Economic Problem)
- 6.3.3 आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के कारण (Causes of Economic Problem)

6.4 उत्पादन संभावना वक्र (Production Possibility Curve)

- 6.4.1 उत्पादन सम्भावना वक्र का अर्थ (Meaning of Production Possibility Curve)
- 6.4.2 उत्पादन सम्भावना वक्र की परिभाषा (Definition of Production Possibility Curve)
- 6.4.3 उत्पादन सम्भावना वक्र की मान्यताएँ (Assumptions of Production Possibility Curve)
- 6.4.4 उत्पादन सम्भावना वक्र की विशेषताएँ (Characteristics of production possibility Curve)

6.5 अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएँ (Central Problems of an Economy)

- 6.5.1 संसाधनों के आबंटन की समस्या (Problem of Allocation of Resources)
- 6.5.2 संसाधनों के सम्पूर्ण एवं कुशलतम प्रयोग की समस्या (Problem of Fuller and Optimum Utilisation of Resources)
- 6.5.3 संसाधनों के विकास की समस्या (Problem of Growth of Resources)
- 6.5.4 आर्थिक विकास की समस्या (Problem of Economic Growth)

6.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

6.7 सारांश (Summary)

6.8 शब्दावली (Glossary)

6.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

6.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

6.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

6.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

इस इकाई के अंतर्गत आप आर्थिक समस्या का अर्थ एवं परिभाषा को जानेंगे तथा आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के कारणों से भी परिचित होंगे। आप उत्पादन सम्भावना वक्र की अर्थ, परिभाषा, मान्यताएं एवं विशेषताओं को जान पाएँगे। किसी अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ जैसे- संसाधनों के आबंटन की समस्या, संसाधनों के सम्पूर्ण एवं कुशलतम प्रयोग की समस्या, संसाधनों के विकास की और आर्थिक विकास की समस्या को भी समझ सकेंगे।

6.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- ✓ आर्थिक समस्या का अर्थ एवं परिभाषा को जान सकेंगे।
- ✓ आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के कारणों को समझ सकेंगे।
- ✓ उत्पादन सम्भावना वक्र का अर्थ एवं परिभाषा से अवगत होंगे।
- ✓ उत्पादन सम्भावना वक्र की मान्यताएं एवं विशेषताओं को जान सकेंगे।
- ✓ अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं से परिचित होंगे।

6.3 आर्थिक समस्या (Economic Problem)

6.3.1 आर्थिक समस्या का अर्थ (Meaning of Economic Problem)

प्रत्येक मनुष्य की असंख्य आवश्यकताएँ होती हैं जिन्हें वह संतुष्ट करना चाहता है। मनुष्य की आवश्यकताओं का कोई अन्त नहीं है। वह अनाज, कपड़ा, चाय, दूध, चीनी, मकान, फर्नीचर, रेफ्रिजरेटर, टेलीविजन, किताब, चिकित्सा सुविधाएँ आदि ऐसी असंख्य आवश्यकताओं को संतुष्ट करना चाहता है किन्तु उसके पास इन सबको संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं होते इसलिए उसे यह चुनाव करना होता है कि उसे अपनी कौन सी आवश्यकताओं को पहले संतुष्ट करना चाहिए और कौन सी आवश्यकताओं को बाद में संतुष्ट करना चाहिए। साधन दुर्लभ ही नहीं होते अपितु उनके वैकल्पिक प्रयोग (Alternative Uses) भी होते हैं। उदाहरण के लिए- यदि किसी व्यक्ति के पास एक एकड़ भूमि है। जिसका वह भवन, कारखाना, स्कूल आदि के निर्माण के लिए प्रयोग कर सकता है। इस भूमि के टुकड़े पर गेहूँ अथवा साग-सब्जियाँ भी उगाई जा सकती है। अब समस्या यह उत्पन्न होती है कि वह व्यक्ति भूमि का किस प्रकार प्रयोग करे। अत: उसे इन वैकल्पिक प्रयोगों में चुनाव करना पड़ेगा। इसी प्रकार का चुनाव उत्पादन के अन्य साधनों, जैसे- श्रम, पूँजी, उद्यमशीलता आदि के सन्दर्भ में भी करना पड़ता है। अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मनुष्य के पास साधन तो दुर्लभ होते हैं किन्तु जिन आवश्यकताओं को वह सन्तुष्ट करना चाहता है वे असीमित होती हैं। अत: उसे यह चुनाव करना होगा कि वह साधनों का चुनाव किस प्रकार करे जिससे उसको अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो। इसी चुनाव की समस्या को 'आर्थिक समस्या' कहा जाता है। यदि मनुष्य के पास हवा, धूप, पानी आदि की तरह साधन पर्याप्त मात्रा में होते तो उसके सामने चुनाव की समस्या (अर्थात् आर्थिक समस्या) उत्पन्न ही नहीं होती। इस प्रकार आर्थिक समस्या मूल रूप से साधनों की दुर्लभता से उत्पन्न हुई समस्या है।

आर्थिक समस्याओं का सामना केवल एक व्यक्ति को ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था को भी करना पड़ता है। यहां तक कि सीमित संसाधनों वाली अर्थव्यवस्था को भी यह चुनाव करना होता है कि कौन सी वस्तु का उत्पादन पहले और कितनी मात्रा में किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए - भारतीय अर्थव्यवस्था के पास श्रम-साधन की तो प्रचुरता है जबकि पूँजी-साधन का अभाव है। इसी प्रकार आस्ट्रेलियन अर्थव्यवस्था के पास भूमि प्रचुर मात्रा में है जबकि श्रम का अभाव है। अत: विश्व की कोई भी अर्थव्यवस्था सभी संसाधनों से युक्त नहीं है। अर्थव्यवस्था उपलब्ध सीमित संसाधनों के साथ अपने नागरिकों के लिए सभी अभीष्ट (desired) वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर सकती है।

6.3.2 आर्थिक समस्या की परिभाषा (Definition of Economic Problem)

आर्थिक समस्या की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:

एरिक रोल (Prof. Eric Roll) के शब्दों में, ***"आर्थिक समस्या मूल रूप से चुनाव की आवश्यकता से उत्पन्न समस्या है। इस चुनाव का संबंध वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों के प्रयोग से है। यह साधनों के उपयुक्त उपयोग की समस्या है। (Economic problem is essentially a problem arising from the necessity of choice, choice of manner in which limited resources with the alternative uses are disposed off. It is a problem of husbandry of resources.)"***

मिल्टन फ्रीडमैन (Milton Friedman) के अनुसार, ***"आर्थिक समस्या उस समय उत्पन्न होती है जब वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों का प्रयोग किया जाता है। यदि साधन सीमित नहीं हैं, तो कोई आर्थिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी। (An economic problem exists wherever scarce means are used to satisfy alternative ends. If means are not scarce, there is no problem at all.)"***

लेफ्टविच (Leftwitch) के अनुसार, ***"आर्थिक समस्या का संबंध मनुष्य को वैकल्पिक आवश्यकताओं के लिए सीमित साधनों के प्रयोग तथा उनके प्रयोग से अधिक-से-अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि से है। (Economic problem is concerned with the use of scarce resources among alternative human wants and in using these resources towards the end of satisfying wants as fully as possible.)"***

6.3.3 आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के कारण (Causes of Economic Problem)

लॉर्ड रॉबिन्स (Lord Robbins) ने वर्ष 1932 में प्रकाशित अपनी पुस्तक '**An Essay on the Nature and Significance of Economic Science'** में आर्थिक समस्याओं के उत्पन्न होने के निम्नलिखित कारण बतलाए हैं।

1. **असीमित आवश्यकताएँ (Unlimited Wants)-** मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं। इनका कोई अंत नहीं है। जब एक आवश्यकता पूरी हो जाती है तो दूसरी नई आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए- मान लीजिए आप एक टेलीविजन खरीदना चाहते हैं। जब आप इसके लिए आवश्यक धन कमा कर इसे खरीद लेंगे तो फिर आप अन्य वस्तु, जैसे-कार आदि की इच्छा करने लगेंगे। यही नहीं कुछ आवश्यकताएँ बार-बार उत्पन्न होती हैं जैसे कि यदि आज आप एक जोड़ा जूता खरीदते हैं तो कुछ समय पश्चात् (जब यह नष्ट हो जाएगा) आपको जूता दोबारा खरीदना पड़ेगा। इसके अलावा जैसे-जैसे समय बदलता है, जरूरतें भी बढ़ती हैं। जैसे कुछ समय पूर्व मल्टीमीडिया फ़ोन, कैमरा, कार आदि की अधिक माँग नहीं थी किन्तु अब इनकी माँग में काफी वृद्धि हो गयी है और भविष्य में और अधिक वृद्धि होने की सम्भावना है।
2. **दुर्लभ साधन (Scarce Means)** - आवश्यकताओं की तुलना में उनकी पूर्ति हेतु साधन सीमित होते हैं। यदि साधन सीमित नही होते तो कोई आर्थिक समस्या उत्पन्न ही नहीं होती। साधनों की सीमितता (अथवा दुर्लभता) से अभिप्राय साधनों की पूर्ति का उनकी माँग की तुलना में कम होना है।
3. **साधनों के वैकल्पिक प्रयोग (Alternative Uses of Means)** - साधन ना केवल सीमित होते हैं बल्कि उनके वैकल्पिक प्रयोग भी होते हैं। यदि संसाधनों का वैकल्पिक उपयोग नहीं होता तो चयन

की समस्या उत्पन्न ही नहीं होती। उदाहरण के लिए - बिजली का प्रयोग रोशनी के लिए, खाना पकाने के लिए, टेलीविजन व रेफ्रिजरेटर चलाने के लिए तथा अन्य कार्यों के लिए किया जा सकता है। साधनों की इस विशेषता के कारण साधन और भी अधिक सीमित हो जाते हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति अथवा अर्थव्यवस्था को अपने सीमित साधनों के कुशलतम प्रयोग किए जाने की आवश्यकता है।

संक्षेप में, असंख्य आवश्यकताओं की तुलना में साधनों की सीमितता आर्थिक समस्या को पैदा करती है। इसके लिए साधनों के कुशलतम प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है जिसे अर्थशास्त्र में साधनों की मितव्ययिता (या किफायत) (Economising of Resources) कहा जाता है।

6.4 उत्पादन संभावना वक्र (Production Possibility Curve)

6.4.1 उत्पादन सम्भावना वक्र का अर्थ (Meaning of Production Possibility Curve)

उत्पादन सम्भावना वक्र एक ऐसा वक्र होता है जो दो वस्तुओं X तथा Y के उन सभी अधिकतम प्राप्त करने योग्य उत्पत्ति संयोगों को बताता है जो साधनों की एक दी हुई मात्रा के पूर्ण एवं कुशल प्रयोग द्वारा उत्पादन तकनीक की एक निश्चित व दी हुई स्थिति में प्राप्त किए जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, एक उत्पादन सम्भावना वक्र साधनों की एक स्थिर मात्रा और एक दी हुई उत्पादन तकनीक पर दो वस्तुओं की अधिकतम उत्पादन की जा सकने वाली मात्राओं के विभिन्न सम्भव संयोगों को प्रकट करता है।

6.4.2 उत्पादन सम्भावना वक्र की परिभाषा (Definition of Production Possibility Curve)

उत्पादन संभावना वक्र दो वस्तुओं के ऐसे संयोजनों का बिन्दुपथ है जिसका उत्पादन कोई देश उत्पादन की तकनीकों और उत्पादन के सभी उपलब्ध कारकों के पूर्ण उपयोग के आधार पर कर सकता है। (A production possibility curve is the locus of such combinations of two commodities that a country can produce, given the techniques of production and the fullest utilisation of all the available factors of production.)

इसे उत्पादन सीमा (Production frontier), रूपान्तरण वक्र (Transformation curve), उत्पादन प्रतिस्थापन वक्र (Product substitution curve) अथवा अवसर लागत वक्र (Opportunity cost curve) भी कहा जाता हैं।

6.4.3 उत्पादन सम्भावना वक्र की मान्यताएँ (Assumptions of Production Possibility Curve)

उत्पादन संभावना वक्र दिखाने के लिए हमें यह मान्यता लेनी होगी कि अर्थव्यवस्था में केवल दो वस्तुओं का उत्पादन हो रहा है। उत्पादन संभावना वक्र की उपरोक्त परिभाषा में निहित मान्यताओं को निम्नलिखित तरीके से व्यक्त किया जा सकता है

1. **कुशलता या दक्षता (Efficiency) -** सभी साधनों का कुशलता से प्रयोग हो रहा है अर्थात अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार तथा पूर्ण उत्पादन की परिस्थितियों में काम कर रही है।
2. **स्थिर संसाधन (Fixed Resources) -** अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसाधनों को मात्रा स्थिर व दी हुई है। साधनों की मात्रा में वृद्धि से उत्पादन संभावना वक्र खिसक जाएगा।

3. **स्थिर प्रौद्योगिकी (Fixed Technology) -** अर्थव्यवस्था विशेष का तकनीकी ज्ञान दिया हुआ है और उसमें किसी समय बिन्दु पर कोई परिवर्तन नहीं होता।
4. **गैर-विशिष्टता (Non-Specificity) -** कोई भी साधन पूरी तरह विशिष्ट नहीं है अर्थात ऐसा नहीं है कि किसी साधन द्वारा एक ही वस्तु का उत्पादन किया जा सके और दूसरी वस्तु के उत्पादन के लिए वह बिल्कुल अनुपयुक्त हो।
5. **दो वस्तुओं का उत्पादन (Two Products)** - रेखाचित्र द्वारा निरूपण तभी संभव है जब हम केवल दो वस्तुओं पर ही विचार करें क्योंकि हम केवल द्विमितीय (Two Dimensional) रेखा ही खींच सकते हैं। उत्पादन संभावना चक्र बनाने के लिए हम यह मान्यता लेंगे कि अर्थव्यवस्था में केवल दो वस्तुओं-बंदूकों या गेहूँ का उत्पादन हो रहा है। यहाँ बंदूकों से तात्पर्य सैन्य वस्तुओं (Military goods) तथा गेहूँ से तात्पर्य असैनिक वस्तुओं (Civilian goods) से है।

6.4.4 उत्पादन सम्भावना वक्र की विशेषताएँ (Characteristics of Production Possibility Curve)

उत्पादन सम्भावना वक्र की अनेक विशेषताएँ होती हैं जिनमें से कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

1. **उत्पादन सम्भावना वक्र बायें से दायें नीचे की ओर गिरता हुआ होता है। (The production possibilities curve is downward sloping from left to right.)** - उत्पादन सम्भावना वक्र दो वस्तुओं के उत्पादन के विभिन्न संयोगों को व्यक्त करता है। उत्पादन सम्भावनाओं के अन्तर्गत किसी एक वस्तु के उत्पादन को बढ़ाने का अभिप्राय दूसरी वस्तु से उत्पादन के साधनों को निकालना होता है। अत: दूसरी वस्तु का उत्पादन कम करना पड़ता है। इसलिए उत्पादन सम्भावना रेखा बायें से दायें नीचे की ओर गिरती हुई होती है।
2. **सामान्यतया उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु के प्रति नतोदर होता है। (Generally the production possibilities curve is concave towards the origin.)** - सामान्यतया सभी उत्पादन सम्भावना वक्र अपने मूल बिन्दु के प्रति नतोदर होता है।

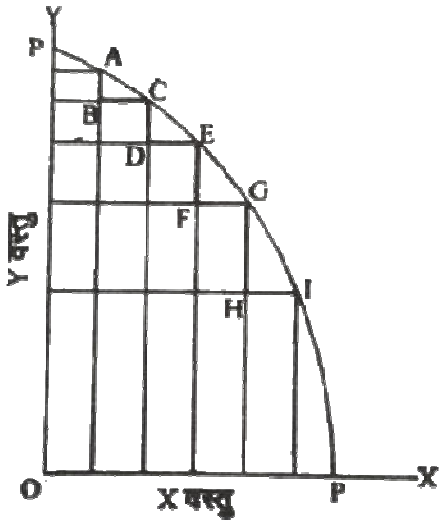

रेखाचित्र 6.1

इसका अभिप्राय यह है कि जब हम किसी एक वस्तु (X वस्तु) का उत्पादन बढ़ाना चाहते हैं तो हमें दूसरी वस्तु (Y वस्तु) के उत्पादन का त्याग करना पड़ेगा और जैसे-जैसे X वस्तु का उत्पादन बढ़ाते जायेंगे वैसे-वैसे हमें Y वस्तु की अधिकाधिक मात्रा का त्याग करना पड़ेगा अर्थात् X वस्तु की पहली इकाई के लिए Y वस्तु की जितनी मात्रा का त्याग हमें करना पड़ता है उसकी तुलना में X वस्तु की

दूसरी इकाई के उत्पादन के लिए हमें Y वस्तु की ओर अधिक इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा और यह लगातार बढ़ता जाएगा। ऐसा बढ़ती हुई लागतों के नियम (Law of increasing Cost) के कारण होता है। इस तथ्य को रेखाचित्र 6.1 से देखा जा सकता है।

रेखाचित्र 6.1 में PP एक उत्पादन सम्भावना रेखा है जिसके A से C बिन्दु पर जाने पर अर्थात् X वस्तु की एक और इकाई उत्पादन करने के लिए Y वस्तु की AB मात्रा का त्याग करना पड़ता है परन्तु C से E बिन्दु पर जाने पर अर्थात् X वस्तु का उत्पादन एक और इकाई से बढ़ाने के लिए Y वस्तु की CD मात्रा का त्याग करना पड़ता है। CD मात्रा AB से अधिक है। इसी तरह E से G पर जाने पर X वस्तु की एक और इकाई के लिए Y वस्तु की EF मात्रा का त्याग करना पड़ता है जो CD से अधिक है। इसी तरह G से I पर जाने के लिए Y वस्तु की GH मात्रा का त्याग करना पड़ता है जो EF से अधिक है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि X वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाइयों के उत्पादन के लिए Y वस्तु की बढ़ती हुई मात्राओं का त्याग करना पड़ता है जिससे उत्पादन सम्भावना वक्र अपने मूल बिन्दु के अति नतोदर होता है।

3. उत्पादन सम्भावना वक्र पर तथा उसके अन्दर स्थित सभी संयोग प्राप्य होते हैं तथा इसके बाहर स्थित सभी संयोग अप्राप्य होते हैं। (All combinations lying on and inside the production possibilities curve are attainable and all combinations lying outside it is unattainable.) - किसी भी उत्पादन सम्भावना रेखा के भीतरी भागों में स्थिति संयोग वर्तमान तकनीक एवं साधनों से प्राप्त किये जा सकते हैं परन्तु ये संयोग उत्पादन संगठन की अकुशलता को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए रेखाचित्र 6.2 में E संयोग एक ऐसा ही संयोग है। उत्पादन सम्भावना रेखा के बाहर स्थित संयोग वर्तमान परिस्थितियों में उपलब्ध साधनों एवं दी हुई तकनीक के अन्तर्गत अप्राप्य होते हैं। रेखाचित्र 3 में F एक ऐसा ही अप्राप्य संयोग है। इसी चित्र में उत्पादन सम्भावना वक्र पर स्थित A, B तथा C संयोग प्राप्य संयोग हैं।

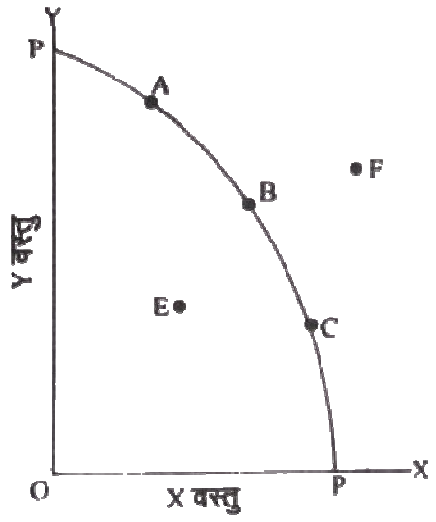

रेखाचित्र 6.2

4. उत्पादन सम्भावना वक्र पर स्थित सभी बिन्दु समान कुशल उत्पादन संगठन को व्यक्त करते हैं। (All points on the production possibilities curve represent the same efficient production organization.) - उत्पादन सम्भावना वक्र पर स्थित सभी संयोग साधनों के पूर्ण प्रयोग तथा उत्पादन के तकनीकी दृष्टि से कुशल संगठन को व्यक्त करते हैं परन्तु इनमें से कौन-सा संयोग समाज के लिए वांछनीय होगा। यह एक विषयगत प्रश्न है जिसका उत्तर उत्पादन सम्भावना वक्र नहीं देता है। इस प्रश्न का उत्तर समाज के नैतिक मूल्यों पर निर्भर करता है।

6.5 अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएँ (Central Problems of an Economy)

कोई अर्थव्यवस्था चाहे कितनी भी सम्पन्न क्यों न हो, उसकी कुछ-न-कुछ आर्थिक समस्याएँ अवश्य होती हैं। इन समस्याओं को अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ (Central Problems of an Economy) अथवा मूल समस्याएँ कहा जाता है। **प्रो. सेम्यूलसन** (Samuelson) के अनुसार अर्थव्यवस्था की तीन केन्द्रीय समस्याएँ होती हैं। पहली, क्या उत्पादन किया जाए? दूसरी, कैसे उत्पादन किया जाए? और तीसरी, किसके लिए उत्पादन किया जाए?

सामान्यता इन समस्याओं को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जाता हैं।

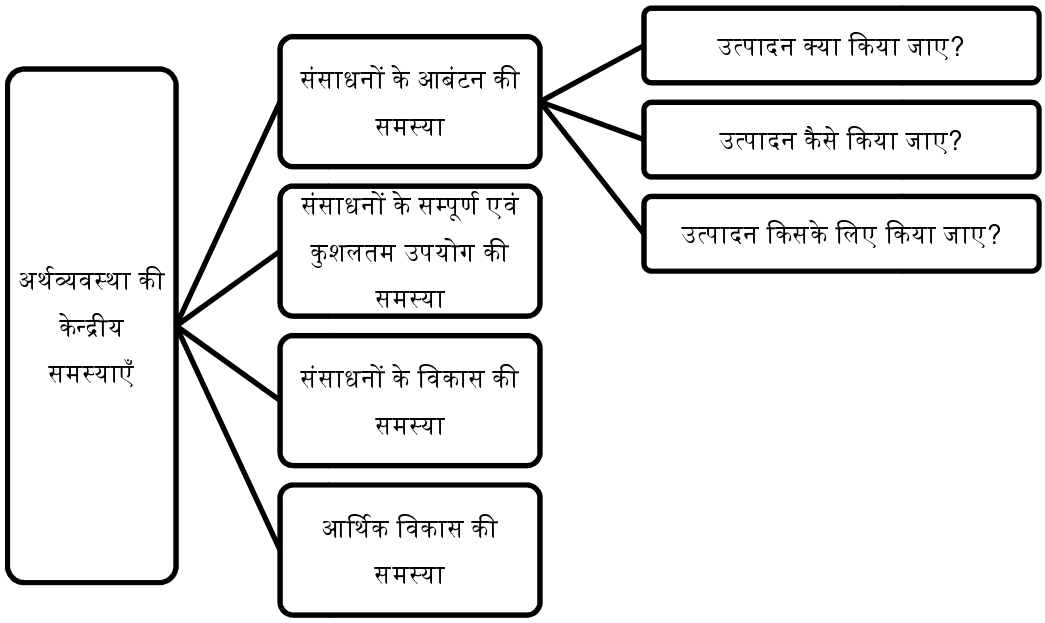

6.5.1 संसाधनों के आबंटन की समस्या (Problem of Allocation of Resources)

प्रत्येक अर्थव्यवस्था के पास वैकल्पिक प्रयोग वाले संसाधन सीमित मात्रा में उपलब्ध होते हैं। अतः संसाधनों के विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं का आबंटन करते समय उसे निम्नलिखित तीन निर्णय लेने पड़ते हैं:

1. क्या उत्पादन किया जाए और कितना उत्पादन किया जाए (What is to be produced and how much is to be produced) -

एक अर्थव्यवस्था की सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण समस्या यह निर्धारित करना होता है कि **किन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाए?** एक अर्थव्यवस्था में समाज की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं जबकि इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधन उपलब्ध होते हैं। समाज की समस्त आवश्यकताओं को एक साथ पूरा नहीं किया जा सकता है। अत: समाज को चुनाव करना पड़ता है कि उपलब्ध साधनों को किन-किन वस्तुओं के उत्पादन में लगाया जाए, जिससे उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की यथासम्भव पूर्ति हो सके।

अर्थव्यवस्था में किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए। इस बात का निर्धारण प्रमुख रूप से इस बात पर निर्भर करेगा कि उपभोक्ताओं की कौन-कौन-सी आवश्यकताएँ समग्र रूप से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और किस सीमा तक उनकी पूर्ति की जानी है? उदाहरण के लिए देश में उपलब्ध इस्पात का प्रयोग टैंकों के निर्माण में किया जाए या मोटरगाड़ियों के निर्माण में किया जाए अथवा भवनों के निर्माण में किया जाए अथवा पुलों के निर्माण में किया जाए या फिर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सभी वस्तुओं के निर्माण में किया जाए। जैसा कि अब आप जानते है कि साधन सीमित होते हैं

तथा आवश्यकताएँ अनन्त। अत: उत्पादन की संरचना का निर्धारण समाज की सापेक्षिक आवश्यकताएँ, उनकी तीव्रता तथा साधनों की उपलब्धता के सामंजस्य से किया जाएगा।

किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए - इसके अन्तर्गत उपभोक्ता वस्तुओं तथा पूँजीगत वस्तुओं के सापेक्षिक उत्पादन के सम्बन्ध में निर्णय करना होता है अर्थात् कितनी मात्रा में पूँजीगत वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और कितनी मात्रा में उपभोक्ता वस्तुओं का? पूँजीगत वस्तुओं का उत्पादन भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बन्धित होता है जबकि उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बन्धित होता है। अतः यदि किसी समय पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन को अधिक महत्त्व दिया जाता है तो इससे वर्तमान में उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन के लिए साधन कम रह जाएँगे। इसके विपरीत वर्तमान में उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन को प्रधानता देने पर भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन कम रह जाएँगे।
इस तथ्य को रेखाचित्र 6.3 से स्पष्ट किया गया है।

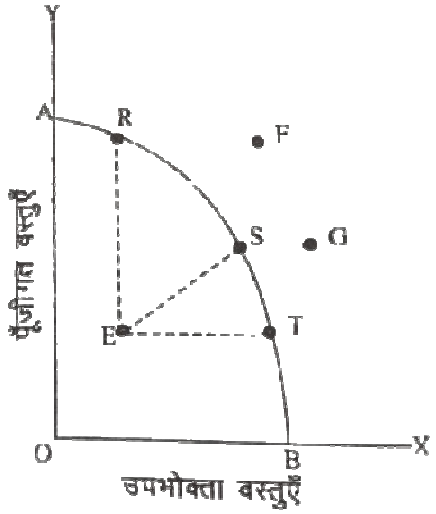

रेखाचित्र 6.3

रेखाचित्र 6.3 में OX अक्ष पर उपभोक्ता वस्तुओं तथा OY अक्ष पर पूँजीगत वस्तुओं की मात्रा को दिखाया गया है। रेखाचित्र में AB उत्पादन सम्भावना वक्र (Production Possibility Curve) है। यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन सम्भावना वक्र के R बिन्दु पर विचार किया जाए तो हमें ज्ञात होता है कि अर्थव्यवस्था में जब OK मात्रा में पूँजीगत वस्तुओं का उत्पादन किया जाता हैं तब उपभोक्ता वस्तुओं को OM (कम) मात्रा में ही उत्पादित किया जा सकेंगा परन्तु उत्पादन सम्भावना वक्र के बिन्दु T पर विचार करें तो यह ज्ञात होता है कि उपभोक्ता वस्तुओं को जब ON मात्रा (अर्थात् अधिक) में उत्पादित किया जाता हैं तब पूँजीगत वस्तुओं को केवल OL मात्रा (अर्थात् कम) ही उत्पन्न किया जा सकता हैं। किसी भी अर्थव्यवस्था में केवल उपभोक्ता वस्तुओं अथवा पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन से अधिकतम सन्तुष्टि का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अत: दोनों प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन में सामंजस्य बैठाना आवश्यक होता है। अतः एक अर्थव्यवस्था में समाज को पहले अधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं का चुनाव करना होता है तथा बाद में साधनों को उन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए आबंटित करना होता है।

किसी अर्थव्यवस्था में केवल उत्पादित की जाने वाली पूँजीगत तथा उपभोक्ता वस्तुओं का निर्धारण ही पर्याप्त नहीं होता है बल्कि यह भी निर्धारित करना आवश्यक होता है कि प्रत्येक पूँजीगत वस्तु तथा प्रत्येक उपभोक्ता वस्तु कितनी मात्रा में उत्पादित की जाए? दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि एक अर्थव्यवस्था में सर्वप्रथम यह निर्धारित किया जाना चाहिये कि उत्पादन सूची में कौन-कौन-सी वस्तुएँ शामिल की जाएँ और उत्पादन सूची में शामिल की जाने वाली वस्तुओं के निर्धारण के बाद प्रत्येक वस्तु की उत्पादन मात्रा का निर्धारण किया जाना चाहिए।

इस संदर्भ में अर्थव्यवस्था के लिए मार्गदर्शक तत्त्व यह है कि उसे अपने संसाधनों का वितरण विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में इस प्रकार करना चाहिए जिससे अर्थव्यवस्था से 'अधिकतम सामाजिक लाभ' (Maximum Social Advantage) की प्राप्ति की जा सके। आप लोक वित्त प्रश्न पत्र में अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धांत का अध्ययन करेंगे।

विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में क्या और कितना उत्पादन किया जाए के निर्धारण के लिए विभिन्न रीतियों का प्रयोग किया जाता है। एक स्वतन्त्र पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में क्या उत्पादित किया जाए का निर्धारण कीमत तन्त्र (Price Mechanism) द्वारा किया जाता है। पूँजीवादी व्यवस्था में हर वस्तु का मूल्य उसकी कीमत द्वारा व्यक्त किया जाता है। केवल उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन किया जाएगा जिन्हें खरीदने के लिए उपभोक्ता सामूहिक रूप से अधिक मुद्रा देने को तत्पर है और जिन वस्तुओं को खरीदने के लिए कम मुद्रा देने को तत्पर है उनका कम उत्पादन किया जाएगा।। अत: यह कहा जा सकता है कि पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली में उपभोक्ताओं के अधिमानों के अनुसार ही वस्तुओं की किस्म एवं मात्रा का निर्णय किया जाता है। वहीं समाजवादी व्यवस्था में कीमत तंत्र स्वतन्त्र नहीं होता है बल्कि वह नियन्त्रित एवं निर्देशित होता है। समाजवादी व्यवस्था में क्या और कितना उत्पादन किया जाए इसका निर्धारण उपभोक्ता अधिमानों पर नहीं छोड़ा जाता है। समाजवादी व्यवस्था में क्या और कितना उत्पादन किया जाए इसका निर्धारण सरकार अथवा नियोजन सत्ता द्वारा समाज के अधिकतम हित के अनुसार किया जाता है।

2. उत्पादन कैसे किया जाए अथवा उत्पादन का संगठन क्या हो? (How to produce or what should be the organisation of production)

एक अर्थव्यवस्था की दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या यह निर्धारित करना होता है कि उत्पादन कैसे किया जाए अथवा उत्पादन का संगठन क्या हो? इस समस्या का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है:

1. साधनों को उन उद्योगों अथवा प्रयोगों में कैसे वितरित किया जाए जिनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं को उपभोक्ता सर्वाधिक चाहते हैं तथा साधनों को उन उद्योगों अथवा प्रयोगों में जाने से कैसे रोका जाये जो ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं जिन्हें उपभोक्ता कम चाहते हैं।
2. कौन-सी वस्तुएँ सरकारी क्षेत्र में उत्पादित की जाएँ तथा कौन-सी वस्तुएँ निजी क्षेत्र में?
3. विभिन्न उद्योगों में किन-किन फर्मों को उत्पादन करना है तथा वे आवश्यक साधन कैसे प्राप्त करेंगी?
4. उत्पादन के लिए कौन-सी तकनीक उत्तम है?

उपर्युक्त सभी बातें उत्पादन के संगठन के सम्बन्ध में हैं। एक अर्थव्यवस्था को उत्पादन के उस संगठन को चुनना चाहिए जिससे समाज द्वारा चाही गई वस्तुओं का कुशलता के साथ उत्पादन इच्छित मात्रा में हो सके। रेखाचित्र 6.3 उत्पादन के किस बिन्दु पर उत्पादन संगठन उपयुक्त होगा, को स्पष्ट किया जा सकता है। रेखाचित्र 6.3 की भाँति रेखाचित्र 6.4 में AB उत्पादन सम्भावना वक्र है जो उपलब्ध साधनों से पूँजीगत तथा उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन की सम्भावना व्यक्त करती है। इस AB रेखा के ऊपर तथा भीतरी सभी बिन्दु दोनों वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को व्यक्त करते हैं जो उपलब्ध साधनों से प्राप्त किये जा सकते हैं जबकि AB वक्र के बाहरी बिन्दु उन संयोगों को व्यक्त करते हैं जो उपलब्ध साधनों से वर्तमान परिस्थितियों में प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं। रेखाचित्र 6.3 में AB रेखा के भीतर स्थित E बिन्दु उपलब्ध साधनों से प्राप्य संयोग है परन्तु यह उत्पादन संगठन की अकुशलता को व्यक्त करता है जबकि AB वक्र के बाहर स्थित बिन्दु F तथा G वर्तमान परिस्थितियों में उपलब्ध साधनों से अप्राप्य हैं। AB रेखा पर स्थित R, S तथा T बिन्दु ही कुशल उत्पादन संगठन को व्यक्त करते हैं। R बिन्दु पर E बिन्दु की तुलना में पूँजीगत वस्तुओं का

अधिक तथा T बिन्दु पर उपभोक्ता वस्तुओं का अधिक तथा S बिन्दु पर पूँजीगत तथा उपभोक्ता दोनों प्रकार की वस्तुओं का अधिक उत्पादन किया जा सकता है।

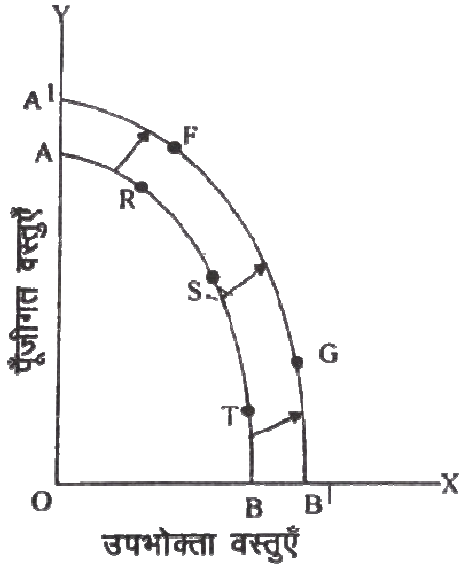

रेखाचित्र 6.4

विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में उत्पादन के संगठन के निर्धारण के लिए भी अलग-अलग विधियों का प्रयोग किया जाता है। वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन दो प्रकार से किया जा सकता है पहला श्रम-प्रधान उत्पादन तकनीक (Labour Intensive Technique) का प्रयोग करके, तथा दूसरा पूँजी-प्रधान उत्पादन तकनीक (Capital Intensive Technique) का प्रयोग करके। **पहली विधि** के अनुसार वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन श्रम की अधिक मात्रा और पूँजी की कम मात्रा लगाकर किया जाता है जबकि **दूसरी विधि** में प्रति इकाई उत्पादन के लिए पूँजी की मात्रा अधिक और श्रम की मात्रा का कम प्रयोग किया जाता है।

एक स्वतन्त्र पूँजीवादी प्रणाली में उत्पादन का संगठन भी मूल्य-तन्त्र द्वारा निर्धारित होता है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में जो फर्म उपभोक्ताओं द्वारा अधिक चाही गई वस्तुओं का उत्पादन करती हैं उन्हें लागत की तुलना में अधिक मूल्य प्राप्त होते हैं। अत: वे अपने उत्पादन के लिए आवश्यक साधनों को अपेक्षाकृत अधिक ऊँची कीमतें देने में समर्थ होती हैं। अत: उपभोक्ताओं द्वारा चाही गई वस्तुओं के उत्पादन उद्योगों में साधनों का पुरस्कार अधिक होता है इसलिए साधन उपभोक्ताओं द्वारा कम माँगी गई वस्तुओं के उत्पादन से निकल कर उपभोक्ताओं द्वारा अधिक माँगी गई वस्तुओं के उत्पादन की ओर हस्तान्तरित होते हैं। लाभ की प्रेरणा फर्मों को कुशल उत्पादन तकनीक को अपनाने को विवश करती है। फर्मे महँगे साधनों का सस्ते साधनों से प्रतिस्थापन करती जाती हैं जिससे उत्पादन लागत न्यूनतम हो अथवा उपलब्ध साधनों से अधिकतम सम्भव उत्पादन प्राप्त किया जा सके। समाजवादी व्यवस्था में उत्पादन संगठन का चुनाव आदान प्रदान विश्लेषण (Input-Output Analysis) के आधार पर किया जाता है।

3. उत्पादन का वितरण किन में किया जाए अथवा वितरण कैसे किया जाए? (To whom the production is to be distributed or How distribution is to be done?)

एक अर्थव्यवस्था का तीसरी महत्त्वपूर्ण समस्या कुल राष्ट्रीय उत्पादन को उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में कुशल व न्यायोचित ढंग से वितरित करना है। इस कार्य का सम्बन्ध निम्नलिखित बातों से होता है :

1. एक आर्थिक प्रणाली कुल उत्पादन को समाज की विभिन्न आर्थिक इकाइयों में किस प्रकार वितरित करेगी अर्थात् कुल उत्पादन को उपभोक्ताओं, परिवारों, फर्मों एवं सरकार में किस प्रकार बाँटा जाएगा?
2. अर्थव्यवस्था में यह भी निर्धारित करना होगा कि उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का वितरण कुशल एवं न्यायोचित हो। इस बात के निर्धारण में केवल आर्थिक तत्त्व ही नहीं बल्कि राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा आचरण शास्त्र के तत्त्वों पर भी ध्यान देना होगा।

एक स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का वितरण भी मूल्य-तन्त्र द्वारा होता है। जिन लोगों की आय अधिक होती है वे कम आय वालों की अपेक्षा अधिक मात्रा में वस्तु एवं सेवाएँ प्राप्त करते हैं। इस प्रकार उत्पादित वस्तुओं का वितरण व्यक्तिगत आय पर निर्भर करता है।

किसी भी अर्थव्यवस्था में व्यक्तिगत आय दो बातों पर निर्भर करती है। **प्रथम**, व्यक्तियों द्वारा उत्पादन प्रक्रिया में लगायी गयी विभिन्न साधनों की मात्राएँ तथा **द्वितीय**, उन साधनों के बदले मिलने वाली कीमतें अथवा प्रतिफल। अत: जिन व्यक्तियों के पास उत्पत्ति के विभिन्न साधनों की मात्रा अधिक तथा उनसे मिलने वाला प्रतिफल ऊँचा होता है उनकी आय उन व्यक्तियों की तुलना में अधिक होती है जिनके पास साधनों की मात्रा कम है और उनसे प्रतिफल भी कम प्राप्त होता है। अधिक आय वाले व्यक्ति अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन में बड़ा हिस्सा प्राप्त करते हैं। पूँजीवादी स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था में साधनों को गलत ढंग से उत्पादन प्रक्रिया में लगाने के कारण आय में उत्पन्न होने वाले अन्तर तो मूल्य-तन्त्र द्वारा ठीक कर दिये जाते हैं परन्तु साधनों के स्वामित्व के अन्तर के कारण आय में उत्पन्न होने वाले अन्तर मूल्य-तन्त्र से स्वत: ठीक नहीं होते हैं। अत: सरकार को प्रगतिशील कर नीति एवं सहायता का सहारा लेना होता है।

6.5.2 संसाधनों के सम्पूर्ण एवं कुशलतम प्रयोग की समस्या (Problem of Fuller and Optimum Utilisation of Resources)

किसी भी अर्थव्यवस्था में क्योंकि संसाधन सीमित हैं। अत: इनका पूर्ण एवं कुशल उपयोग करने की आवश्यकता है। अब समस्या यह उत्पन्न होती है कि अर्थव्यवस्था अपने उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण एवं कुशलतम प्रयोग कैसे करे? संसाधनों के अल्प-प्रयोग (Under-Utilisation of Resources) का अर्थ है- संसाधनों की बर्बादी (Wastage of Resources)।

6.5.3 संसाधनों के विकास की समस्या (Problem of Growth of Resources)

चूंकि संसाधन सीमित होते हैं और जब इनका निरन्तर प्रयोग होता है तो ये समाप्त भी हो जाते हैं इसलिए इनकी कमी को दूर करने के लिए इनका विकास करना भी एक मुख्य समस्या बन गई है। अमेरिका, कनाडा, रूस, जापान आदि देशों की सम्पन्नता संसाधनों के विकास के फलस्वरूप ही हो पाई है जबकि भारत, पाकिस्तान जैसे देश अभी भी निर्धन हैं चूँकि उनमें नये संसाधनों का विकास अधिक सम्भव नहीं हो सका है। इसलिए विशेष तौर पर अल्प-विकसित देशों के सामने समस्या न केवल संसाधनों के सम्पूर्ण उपयोग तथा कुशलतम उपयोग की है बल्कि संसाधनों के विकास की भी है।

6.5.4 आर्थिक विकास की समस्या (Problem of Economic Growth)

विश्व की प्रत्येक अर्थव्यवस्था के सामने उसके विकास की समस्या है। वह अपनी आर्थिक विकास की गति को तीव्र करना चाहती है और इस प्रकार अपने नागरिकों का जीवन-स्तर ऊपर उठाना चाहती है। इसके लिए विकास-दर में वृद्धि जनसंख्या में वृद्धि-स्तर से ऊँची रखी जानी आवश्यक है। इसीलिए प्रत्येक अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास की उच्चतम अवस्था प्राप्त करने के लिए आर्थिक विकास की दर को निरन्तर बढ़ाने में जुटी हुई है। जैसा कि आप जानते हैं कि अर्थशास्त्र के अध्ययन को मुख्य रूप से दो भागों (व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र) में बाँटा जाता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र (जिसे 'कीमत सिद्धान्त' भी कहा जाता

है) मूलतः संसाधनों के आबंटन की समस्या का अध्ययन करता है जबकि समष्टि अर्थशास्त्र में संसाधनों के सम्पूर्ण एवं कुशलतम प्रयोग तथा उनके विकास के बारे में अध्ययन किया जाता है।

6.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. आर्थिक समस्या मूल रूप से साधनों की दुर्लभता से उत्पन्न हुई समस्या है।

(सत्य/ असत्य)

2. साधनों के कुशलतम प्रयोग को अर्थशास्त्र में साधनों की अमितव्ययिता (या किफायत) कहा जाता है।

(सत्य/ असत्य)

3.साधनों की सीमितता से अभिप्राय साधनों की पूर्ति का उनकी माँग की तुलना में कम होना है।

(सत्य/ असत्य)

4. उत्पादन संभावना वक्र को अवसर लागत वक्र भी कहा जाता हैं।

(सत्य/ असत्य)

5. प्रो. सेम्यूलसन के अनुसार अर्थव्यवस्था की दस केन्द्रीय समस्याएँ होती हैं।

(सत्य/ असत्य)

6. व्यष्टि अर्थशास्त्र को 'कीमत सिद्धान्त' भी कहा जाता है।

(सत्य/ असत्य)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. मनुष्य की आवश्यकताएँ ..... (सीमित / असीमित) होती हैं।
2. चुनाव की समस्या को ..... (आर्थिक/सामाजिक) समस्या कहा जाता है।
3. उत्पादन सम्भावना वक्र ..... (बायें से दायें/ दायें से बायें) नीचे की ओर गिरता हुआ होता है।
4. सामान्यतया उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु के प्रति ..... (नतोदर/उत्तल) होता है।
5. उत्पादन सम्भावना वक्र पर तथा उसके अन्दर स्थित सभी संयोग ..... (प्राप्य/ अप्राप्य) होते हैं।
6. उत्पादन सम्भावना वक्र के बाहर स्थित सभी संयोग ..... (प्राप्य/ अप्राप्य)होते हैं।
7. उत्पादन सम्भावना वक्र पर स्थित सभी बिन्दु ..... (समान/असमान) कुशल उत्पादन संगठन को व्यक्त करते हैं।
8. एक स्वतन्त्र ..... (पूँजीवादी / समाजवादी) प्रणाली में उत्पादन का संगठन भी मूल्य-तन्त्र द्वारा निर्धारित होता है।

6.7 सारांश (Summary)

मनुष्य को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए सीमित संसाधनों में से चुनाव करना पड़ता है जिससे की उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो। इसी चुनाव की समस्या को आर्थिक समस्या कहा जाता है। **मिल्टन फ्रीडमैन** के अनुसार, आर्थिक समस्या उस समय उत्पन्न होती है जब वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों का प्रयोग किया जाता है यदि साधन सीमित नहीं है तों कोई आर्थिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी। **लार्ड रॉबिन्स** ने आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के निम्न कारण बताएं है- असीमित आवश्यकताएं, सीमित साधन एवं साधनों के वैकल्पिक प्रयोग। उत्पादन सम्भावना वक्र दो वस्तुओं के ऐसे संयोजनों का बिन्दुपथ है जिसका उत्पादन कोई देश उत्पादन के सभी उपलब्ध कारकों के पूर्ण उपयोग के आधार पर कर सकता है। उत्पादन सम्भावना वक्र की मान्यताएं निम्न है- स्थिर संसाधन, स्थिर प्रौद्योगिक, साधनों की दक्षता, विशिष्टता नहीं और केवल दो वस्तुएं। उत्पादन सम्भावना वक्र बाएँ से दाएं नीचे की ओर गिरता

हुआ होता है। उत्पादन सम्भावना वक्र पर तथा उसके अंदर स्थित सभी संयोग प्राप्य होते है तथा इसके बाहर स्थित सभी संयोग अप्राप्य होते है। उत्पादन सम्भावना वक्र पर स्थित सभी बिंदु समान कुशल उत्पादन संगठन को व्यक्त करते है। संसाधनों के आबंटन की समस्या के अंतर्गत तीन निर्णय लेने पड़ते है- पहला, क्या और कितना उत्पादन किया जाए? दूसरा, उत्पादन कैसे किया जाए? और तीसरा, उत्पादन किसके लिए किया जाए? चूँकि संसाधन सीमित होते है। अतः संसाधनों की कमी को दूर करने के लिए इनका विकास भी एक मुख्य समस्या है। अपने नागरिकों के जीवन स्तर को उठाने हेतु अर्थव्यस्था की आर्थिक विकास दर को निरंतर कैसे बढाया जाए यह भी एक समस्या है।

6.8 शब्दावली (Glossary)

- **आर्थिक समस्या (Economic Problem):** मनुष्य के पास साधन तो दुर्लभ होते हैं किन्तु जिन आवश्यकताओं को वह सन्तुष्ट करना चाहता है वे असीमित होती हैं। अत: उसे यह चुनाव करना होता है कि वह साधनों का चुनाव किस प्रकार करे जिससे कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो। इसी चुनाव की समस्या को 'आर्थिक समस्या' कहा जाता है।
- **साधनों की दुर्लभता (Scarcity of Resources):** साधनों की पूर्ति का उनकी माँग की तुलना में कम होना ही साधनों की दुर्लभता कहलाता है।
- **उत्पादन संभावना वक्र (Production Possibility Curve):** दो वस्तुओं के ऐसे संयोजन का बिन्दुपथ जिसे कोई देश उत्पादन की तकनीकों और उत्पादन के सभी उपलब्ध साधनों के पूर्ण उपयोग के आधार पर उत्पादित कर सकता है उसे उत्पादन संभावना वक्र कहा जाता है।
- **श्रम-प्रधान तकनीक (Labour Intensive Technique):** वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में श्रम की अधिक मात्रा और पूँजी की कम मात्रा लगाकर जब उत्पादन किया जाता है उसे श्रम-प्रधान तकनीक कहते हैं।
- **पूँजी-प्रधान तकनीक (Capital Intensive Technique):** वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में पूँजी की अधिक मात्रा और श्रम की कम मात्रा लगाकर जब उत्पादन किया जाता है उसे पूँजी-प्रधान तकनीक कहते हैं।

6.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य
4. सत्य 5.असत्य 6.सत्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. असीमित	2. आर्थिक	3. बायें से दायें	4. नतोदर
5. प्राप्य	6. अप्राप्य	7. समान	8. पूँजीवादी

6.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण***, शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।

- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र,*** अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

6.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory,*** Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics***, Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

6.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. आर्थिक समस्या को परिभाषित कीजिए तथा इसके उत्पन्न होने के कारण बताइए।
2. उत्पादन सम्भावना वक्र से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
3. एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

इकाई - 7 अर्थशास्त्र की संकल्पना: उपभोग, उपभोक्ता की सार्वभौमिकता एवं जीवन-स्तर (Concepts of Economics: Consumption, Consumer's Sovereignty and Standard of Living)

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

7.2 उद्देश्य (Objectives)

7.3 उपभोग (Consumption)

- 7.3.1 उपभोग का अर्थ (Meaning of Consumption)
- 7.3.2 उपभोग के आवश्यक तत्त्व (Essential elements of Consumption)
- 7.3.3 अर्थशास्त्र में उपभोग का महत्त्व (Importance of Consumption in Economics)

7.4 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता (Consumer Sovereignty)

- 7.4.1 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता का अर्थ (Meaning of Consumer's Sovereignty)
- 7.4.2 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता का आधार (Basis of Consumer's Sovereignty)
- 7.4.3 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता की सीमाएं (Limitations of Consumer's Sovereignty)

7.5 जीवन-स्तर (Standard of Living)

- 7.5.1 जीवन-स्तर का अर्थ एवं व्याख्या (Meaning and Explanation of Standard of Living)
- 7.5.2 जीवन-स्तर के रूप (Forms of Standard of Living)
- 7.5.3 जीवन-स्तर को निर्धारित करने वाले तत्व (Factors Affecting Standard of Living)

7.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

7.7 सारांश (Summary)

7.8 शब्दावली (Glossary)

7.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

7.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

7.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

7.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

अर्थशास्त्र की संकल्पना से संबंधित इस इकाई के अंतर्गत आप अर्थशास्त्र के कुछ मूलभूत तत्वों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे। मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं का प्रयोग करना पड़ता है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप उपभोग का अर्थ, इसके आवश्यक तत्व और अर्थशास्त्र में उपभोग के महत्त्व को समझ सकेंगे। उपभोग के आधार पर ही किसी मनुष्य के रहन सहन का अनुमान लगाया जा सकता है। अत: आप यह जान पाएँगे कि जीवन स्तर क्या होता है और इसको निर्धारित करने वाले आवश्यक तत्व कौन से है? इस इकाई के अध्ययन से आप उपभोक्ता की सार्वभौमिकता को भी जान सकेंगे।

7.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप बता पाएँगे की:

- ✓ अर्थशास्त्र में उपभोग का क्या आशय हैं?
- ✓ अर्थशास्त्र में उपभोग का महत्व क्या हैं?
- ✓ उपभोक्ता की सार्वभौमिकता से क्या आशय हैं?
- ✓ जीवन स्तर का क्या अर्थ हैं एवं जीवन स्तर के कितने प्रकार होते हैं?

7.3 उपभोग (Consumption)

7.3.1 उपभोग का अर्थ (Meaning of Consumption)

आमतौर पर उपभोग का अर्थ वस्तुओं के खाने-पीने से लगाया जाता है लेकिन अर्थशास्त्र में उपभोग का अर्थ इससे भिन्न रूप में लिया जाता है। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उपभोग वह क्रिया है जिससे उपभोक्ता की किसी आवश्यकता विशेष की सन्तुष्टि होती है। अधिक स्पष्ट शब्दों में, मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि के लिए वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रयोग को उपभोग कहते हैं।

प्रो. ऐली (Ely) के अनुसार ***"अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उपभोग से आशय मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु आर्थिक सेवाओं तथा व्यक्तिगत सेवाओं के प्रयोग करने से है।"***

प्रो. मेयर्स (Meyers) के मतानुसार ***"स्वतन्त्र मानव की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए वस्तुओं तथा सेवाओं का प्रत्यक्ष एवं अन्तिम प्रयोग ही उपभोग कहलाता है।"***

7.3.2 उपभोग के आवश्यक तत्त्व (Essential elements of Consumption)

1. **उपभोग से किसी आवश्यकता की तुष्टि होना जरूरी है। (Consumption must satisfy some Want) -** यदि किसी वस्तु के उपभोग करने से किसी आवश्यकता विशेष की तुष्टि नहीं होती है तो उसे उपभोग नहीं कहा जाएगा। जैसे भूख से व्याकुल व्यक्ति के सामने रखा हुआ भोजन, उपभोग नहीं माना जाएगा जब तक कि वह उसे खा ना ले। एक सुन्दर फिल्म देखना शत-प्रतिशत उपभोग है क्योंकि इससे मनुष्य की मनोरंजन सम्बन्धी आवश्यकता की तुष्टि होती है।
2. **आवश्यकताओं की सन्तुष्टि प्रत्यक्ष रूप में होनी चाहिए। (Wants must be satisfied directly) -** उपभोग की दूसरी शर्त यह है कि आवश्यकताओं की सन्तुष्टि प्रत्यक्ष रूप में हो नाकि अप्रत्यक्ष रूप में। ध्यान रहे, यदि किसी मानवीय आवश्यकता की तुष्टि किसी वस्तु-विशेष द्वारा परोक्ष रूप में हुई है तो अर्थशास्त्र में उसे 'वास्तविक उपभोग' नहीं माना जाता बल्कि उसे 'उत्पादन' की संज्ञा दी जाती है। उदाहरणार्थ, भूख लगने पर भोजन करना प्रत्यक्ष उपभोग है। जबकि इसके विपरीत कोयला, जिससे भोजन पकाया जाता है, हमारी भोजन सम्बन्धी आवश्यकता की तुष्टि परोक्ष रूप में करता है इसलिए इसे उपभोग नहीं कहा जा सकता ।
3. **उपभोगीय वस्तु की उपयोगिता का नष्ट होना ना कि वस्तु का नष्ट होना। (Consumable item is loss of utility not destruction of the item) -** उपभोग करते समय हम जिस वस्तु का उपभोग करते हैं वास्तव में वह वस्तु नष्ट नहीं होती बल्कि उस वस्तु में निहित उपयोगिता ही नष्ट

होती है। इसका कारण, भौतिक शास्त्र के अनुसार, किसी भी पदार्थ को ना तो नष्ट किया जा सकता है और ना ही बनाया जा सकता है बल्कि केवल उसका रूप बदला जा सकता है। जैसे रोटी का उपभोग करने पर पदार्थ तो नष्ट नहीं होता बल्कि यह रक्त और माँस के रूप में बदल जाता है।

4. **उपयोगिता का विनाश तुरन्त भी और धीरे-धीरे भी हो सकता है। (Destruction of utility can happen immediately or gradually) -** आपको पता होगा कि खाने-पीने की वस्तुओं की उपयोगिता का विनाश तुरन्त हो जाता है जबकि वस्त्र-पहनने, पुस्तक-पढ़ने, मोटर का प्रयोग करने सम्बन्धी उपभोगीय क्रियाओं (वस्तुओं) की उपयोगिता धीरे-धीरे नष्ट होती जाती है।

7.3.3 अर्थशास्त्र में उपभोग का महत्त्व (Importance of Consumption in Economics)

अर्थशास्त्र में उपभोग का सर्वाधिक महत्त्व है। आर्थिक संरचना में उपभोग ही वह घुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण अर्थ-विज्ञान चक्कर काटता रहता है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण बात तो यह है कि एडम स्मिथ (Adam Smith) को छोड़कर शेष अधिकांश प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों (जे. बी. से, रिकार्डो, जे. एस. मिल आदि) ने उपभोग के महत्त्व पर कोई ध्यान नहीं दिया था। सम्भवतया **जेवन्स** (Jevons) ही वे पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने उपभोग के महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसको अर्थशास्त्र का प्रमुख प्रभाग कहा। तत्पश्चात प्रो. वाईजर (Wiser), वालरस (Walras) तथा मार्शल (Marshall) ने उपभोग को मानवीय क्रियाओं के चक्रीय प्रवाह का मूल-स्रोत मानकर उसके महत्त्व पर विशेष बल दिया। आधुनिक अर्थशास्त्री जैसे रॉबिन्स (Robbins), जॉन रोबिन्सन (Joan Robinson) तथा हिक्स (Hicks) आदि ने भी उपभोग को अर्थशास्त्र का आधार माना है। संक्षेप में, उपभोग के महत्व को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत वर्णित किया जा सकता है-

1. **उपभोग आर्थिक क्रियाओं का उद्गम बिन्दु (Starting Point) है। (Consumption is the starting point of economic activities) -** एडम स्मिथ का कहना था कि "उपभोग सभी आर्थिक क्रियाओं का एकमात्र कारण और उद्देश्य है।" यह बात वास्तव में बिलकुल ठीक है क्योंकि उपभोग करने को आवश्यकता ही आर्थिक क्रियाओं को जन्म देती है। यदि मनुष्य में उपभोग करने की इच्छा नहीं होती तो उत्पादन, विनिमय और वितरण सम्बंधित क्रियाएँ कभी भी उत्पन्न नहीं हो पातीं।
2. **देश की आर्थिक प्रगति उपभोग की मात्रा एवं स्वरूप पर निर्भर करती है। (The economic progress of the country depends on the quantity and forms of consumption) -** किसी देश की आर्थिक प्रगति अथवा भौतिक कल्याण की जांच करने के लिए प्राय: उस देश के उपभोग के स्तर का अध्ययन किया जाता है। ऐसा इसलिए किया जाता है क्योकि किसी देश में उपभोग का स्तर बढ़ जाता है तो इसका सीधा-सा अर्थ यह होता है कि वहाँ के निवासी अनिवार्य आवश्यकताओं के अलावा आरामदायक और विलासिताओं का भी उपभोग कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, जिस देश में उपभोग का स्तर जितना अधिक ऊँचा होता है वहाँ के निवासियों का भौतिक कल्याण भी उतना ही अधिक होता है और उस देश का आर्थिक विकास भी उतना ही उन्नत माना जाता हैं।
3. **उपभोग का आधार उत्पादन, विनिमय तथा वितरण है। (The basis of consumption is production, exchange and distribution) -** किसी देश में उत्पादन का आकार और उसकी प्रकृति मूलरूप से उपभोग के स्वरूप पर निर्भर करती है। किसी समाज में किन वस्तुओं का और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाएगा? यह इस बात पर निर्भर हुआ करता है कि उस समाज के लोगों का उपभोग का स्तर क्या है? और वे किन वस्तुओं का उपभोग करना चाहते है? स्वाभाविक है कि कोई भी समाज ऐसी वस्तुओं का कभी भी उत्पादन नहीं करना चाहेगा जो उसके द्वारा उपभोग नहीं की जाती।

इसी प्रकार उपभोग विनिमय और वितरण के लिए भी प्रेरक शक्ति का काम करता है। विनिमय का जन्म (वस्तुओं का क्रय-विक्रय) केवल इसलिए होता है ताकि उपभोग सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। संक्षेप में, उपभोग की इच्छा के कारण उत्पादन किया जाता है उत्पादन से धन के वितरण का जन्म होता है और वितरण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विनिमय को गति प्रदान करता है और इस प्रकार आवश्यकताओं की पूर्ति का दूसरा नाम 'उपभोग' है।

4. **रोजगार का स्तर उपभोग की मात्रा पर निर्भर करता है। (The level of employment depends on the quantity of consumption) -** लार्ड कीन्स (Lord Keynes) के रोजगार सिद्धान्त से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि किसी भी समाज में रोजगार का स्तर प्रभावपूर्ण माँग अर्थात् उपभोग की मात्रा पर निर्भर होता है। किसी समाज में लोगों का उपभोग जितना अधिक होगा, उस देश में उत्पादन भी उतना ही अधिक किया जाएगा और फलस्वरूप रोजगार का स्तर ऊँचा उठने लगेगा। इसके विपरीत उपभोग के कम होने पर उत्पादन कम होगा जिससे रोजगार का स्तर भी घट जाएगा।

7.4 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता (Consumer's Sovereignty)

7.4.1 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता का अर्थ (Meaning of Consumer's Sovereignty)

ऐसा अक्सर कहा जाता है कि पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत उपभोक्ता की स्थिति एक निरंकुश सम्राट के समान है और उसके आदेश, इच्छाओं और अधिमानों के आधार पर ही सम्पूर्ण उत्पादन-तन्त्र संचालित होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यों होता है? अर्थात् उत्पादन सम्बन्धी सम्पूर्ण निर्णय उपभोक्ता की इच्छा या माँग के अनुसार ही क्यों लिए जाते हैं? इसका कारण यह है कि पूँजीवादी व्यवस्था में उपभोक्ता-व्यवहार पर किसी प्रकार का कोई नियन्त्रण नहीं होता और उपभोक्ताओं को आर्थिक निर्णय लेने की पूरी स्वतन्त्रता होती है। यही कारण है कि उपभोक्ता जिन वस्तुओं का उपभोग करना चाहते हैं उत्पादक वर्ग द्वारा केवल उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

यही नहीं, जैसा कि हम जानते हैं एक उत्पादक का उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना है। कोई भी उत्पादक अपने लाभ को अधिकतम तभी कर सकता है जबकि वह केवल उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करे, जिन्हें उपभोक्ता चाहते हैं। यदि कोई उत्पादक उपभोक्ताओं की इच्छा की अवहेलना करके किन्हीं अन्य वस्तुओं का उत्पादन करता है तो स्पष्ट है कि वह ऐसी वस्तुओं को बेच नहीं सकेगा, जिससे उसे हानि उठानी पड़ेगी। अत: **प्रो. बेन्हम** का कहना है कि ***"अन्तिम रूप में, समस्त उत्पादन क्रियाओं का उद्देश्य उपभोक्ता की रुचि की वस्तुओं को उत्पन्न करना है। एक उत्पादक को उपभोक्ता के व्यय करने के तरीकों से ही यह जानकारी हो पाती है कि किन वस्तुओं का और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाना है।"***

इस दृष्टि से उपभोक्ता एक स्वामी, एक सम्राट तथा प्रभुत्व-सम्पन्न प्रभु (Sovereign) है जो समूची पूँजीवादी अर्थव्यवस्था पर शासन करता है। वह एक ऐसा नायक है जिसके इशारे पर सारी आर्थिक व्यवस्था चलती है। उत्पादक तो उपभोक्ता के एक विशिष्ट सेवक के समान है जिसका काम उसके आदेशों का पालन करना है। इस प्रकार ***"चुनावों की स्वतन्त्रता के आधार पर उत्पादन-क्रियाओं को संचालित करने की इस शक्ति को ही उपभोक्ता को सार्वभौमिकता कहते हैं।"***

राजनीति में जो स्थान 'मतदाता' को प्राप्त है आर्थिक जगत में वही स्थान 'उपभोक्ता' को दिया जाता है। प्रसिद्ध विचारक **कीक हॉफ़र (Kiek Hofer)** का कहना है कि ***"आर्थिक चुनावों के क्षेत्र में उपभोक्ता की स्थिति एक मतदाता के समान है। आर्थिक चुनाव में उपभोक्ता उतने ही मत दे सकता है जितने डॉलर व्यय करने के लिए उसके पास हैं। यदि उपभोक्ता अपनी मुद्रा अच्छी वस्तुओं के स्थान पर खराब वस्तुओं पर या आवश्यक वस्तुओं के स्थान पर विलासिता की वस्तुओं पर खर्च करने का निश्चय करता है तो फिर ऐसी ही वस्तुओं का उत्पादन किया जाएगा। वास्तव में, उपभोक्ता का चुनाव ही चाहे वह मूर्खतापूर्ण हो या विवेकपूर्ण, हमारी आर्थिक क्रियाओं का संचालन करता है।"***

7.4.2 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता का आधार (Basis of Consumer's Sovereignty)

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता की प्रभुता का पोषण कीमत-यन्त्र (price-mechanism) द्वारा होता है। एक उत्पादक उपभोक्ताओं की रुचियों या अधिमानों की जानकारी कीमत-यन्त्र के द्वारा प्राप्त करता है। जब उपभोक्ताओं द्वारा किसी वस्तु की माँग अधिक की जाती है तो उससे उस वस्तु की कीमत बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में उत्पादक उस वस्तु का उत्पादन बढ़ाकर अपना लाभ अधिकतम कर लेता है। इसके विपरीत उपभोक्ताओं द्वारा जिन वस्तुओं की माँग कम की जाती है उनकी कीमत में होने वाली कमी के कारण उत्पादक उन वस्तुओं का उत्पादन भी कम कर देता है। इस प्रकार प्रत्येक उत्पादक उद्योग का चुनाव करते समय अथवा पूँजी का निवेश करते समय सदैव कीमत-यन्त्र से ही मार्गदर्शन प्राप्त करता है।

7.4.3 उपभोक्ता की सार्वभौमिकता की सीमाएं (Limitations of Consumer's Sovereignty)

वास्तविकता तो यह है कि पूँजीवाद के अंतर्गत उपभोक्ता को जिस प्रभुसत्ता की दुहाई दी जाती है वह एक मिथ्या सत्य है। आज के युग में, पहली बात तो यह है कि विशुद्ध पूँजीवाद (pure capitalism) अस्तित्व में ही नहीं है और दूसरा आर्थिक संगठन का स्वरूप नियन्त्रित अर्थव्यवस्थाओं (controlled economies) ने ले लिया है। जिसके कारण पूर्ण प्रतियोगिताओं के अभाव तथा सरकारी हस्तक्षेप के बढ़ते अत्याचार के कारण उपभोक्ता को निरंकुश शासक की उपाधि देना सही नहीं है।

इसके अलावा पूँजीवादी प्रणाली की कुछ अन्य ऐसी सीमाएँ भी हैं जो उपभोक्ता की प्रभुता को सीमित कर देती हैं। ये प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं-

1. **देश की उत्पादन क्षमता (Country's production capacity) -** पहली बात तो यह है कि उपभोक्ता की सार्वभौमिकता देश की उत्पादन क्षमता या उपलब्ध उत्पादक शक्तियों द्वारा सीमित बनी रहती है। यदि किसी देश में प्राकृतिक साधनों व तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण किसी वस्तु-विशेष का उत्पादन किया ही नहीं जा सकता है तो ऐसी स्थिति में उपभोक्ता की प्रभुता का क्षेत्र ना चाहते हुए भी अनिवार्य रूप से सीमित हो जाता है। उदाहरण के तौर पर- एक अल्पविकसित देश मोटरकारों की माँग होते हुए भी अपनी सीमित पूँजी व तकनीक का प्रयोग केवल विकास कार्यों के लिए ही करना चाहेगा नकि मोटरकारों के निर्माण के लिए। यह माना जा सकता है कि इस दृष्टि से अल्पविकसित देशों की तुलना में विकसित देशों में उपभोक्ताओं को चुनाव की अधिक स्वतन्त्रता हुआ करती है।
2. **तकनीकी ज्ञान का स्तर (Level of technical knowledge) -** उपभोक्ता की प्रभुसत्ता को सीमित करने वाला दूसरा तत्व उस देश में उपलब्ध तकनीकी ज्ञान का स्तर है। देश के उपभोक्ताओं को अपना चुनाव केवल उन्हीं वस्तुओं तक सीमित रखना पड़ता है जिनका उत्पादन देश में उपलब्ध तकनीक द्वारा करना सम्भव है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि उपभोक्ताओं को किसी भी ऐसी वस्तु की माँग नहीं करनी चाहिए जिसका उत्पादन वर्तमान तकनीक से नहीं किया जा सकता हो। इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी देश में तकनीकी ज्ञान का स्तर उपभोक्ता के चयन के अधिकार को काफी हद तक सीमित बनाए रखता है ।
3. **उपभोक्ता की अल्प क्रय-शक्ति या सीमित आय (Low purchasing power or limited income of consumer) -** उपभोक्ता की सार्वभौमिकता को निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक उसकी क्रय-शक्ति या मौद्रिक आय को माना जाता है। आय के सीमित होने पर उपभोक्ता की प्रभुता भी सीमित बनी रहती है क्योंकि जिस वस्तु को खरीदने की वह क्षमता नहीं रखता, उसके लिए उपभोक्ता के अधिमान या चयन करने का प्रश्न ही नहीं उठता। सच तो यह है कि एक उपभोक्ता अपने क्षेत्र में तभी तक सम्राट बना रह सकता है जब तक कि उसके हाथ में पर्याप्त मात्रा में क्रय-शक्ति (आय) बनी रहती हैं।

इस सम्बन्ध में **श्रीमति बारबरा वूटन** (Mrs. Barbara Wootten) का कहना है कि ***"विशेष रूप से धन के असमान वितरण वाले अनियोजित पूँजीवाद में क्या उपभोक्ता एक सम्राट हो***

सकता है? कदापि नहीं। आय के अभाव में, जब वह किसी भी वस्तु को खरीदने की सामर्थ्य नहीं रखता, उसे सम्राट कहकर पुकारना उसकी निर्धनता का मजाक उड़ाने के समान होगा।" वास्तविकता तो यह है कि उपभोग की स्वतंत्रता केवल मुट्ठी भर अमीर लोगों की विरासत है और गरीबों का इससे कोई लेना-देना नहीं है।

4. **सरकारी नियन्त्रण या राजकीय प्रतिबन्ध (Government control or state restrictions)-** सरकार द्वारा उपभोग पर लगाए जाने वाले प्रतिबन्धों के कारण भी उपभोक्ता की सार्वभौमिकता सीमित हो जाती है। यद्यपि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप बहुत कम होता है परन्तु फिर भी कुछ मामलों में सरकार सार्वजनिक उपभोग को नियन्त्रित करके उपभोक्ताओं के चयन-अधिकार को सीमित कर देती है। उदाहरणार्थ नशीली वस्तुओं, गोला बारूद या खतरनाक हथियारों के उत्पादन व खुली बिक्री पर सरकार द्वारा प्राय: प्रतिबन्ध लगाया जाता है जिससे उपभोक्ता का यह अधिकार निश्चित रूप से सीमित हो जाता है। विशेष रूप से 'राशनिंग पद्धति' के अन्तर्गत निर्धारित कोटे से अधिक किसी भी व्यक्ति को खरीदने की अनुमति नहीं दी जाती। ऐसी स्थिति में सम्राट कहे जाने वाले उपभोक्ता को भी बाध्य होकर राशन की लाइन में खड़ा होना पड़ता है जिससे उसकी सार्वभौमिकता दम तोड़ देती है ।
5. **एकाधिकार की उपस्थिति (Presence of Monopoly) -** उपभोक्ता की प्रभुता के सीमित होने का एक अन्य कारण व्यावसायिक एकाधिकार का पाया जाना है। यद्यपि पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में उपभोक्ता अपनी स्वतन्त्रता बनाए रख सकता है परन्तु एकाधिकार की स्थित में वह इस अधिकार से वंचित कर दिया जाता है। विशेष रूप से अनियोजित पूँजीवाद में जहां एकाधिकार केवल पनपते ही नहीं, वरन पाले जाते हैं, उपभोक्ता की सार्वभौमिकता दम तोड़ते हुए देखी गयी है। एकाधिकारिक दशाओं में उपभोक्ता एकाधिकारी उत्पादकों का दास होता है। ये एकाधिकारी अपनी इच्छानुसार बाजार पर शासन करते हैं और उनके द्वारा केवल उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है जिनमें लाभ की सम्भावना अधिकतम होती है। अत: ऐसी दशा में उपभोक्ता सम्राट न होकर, सम्राट का 'अंग रक्षक' अवश्य बन जाता है।
6. **फैशन तथा रीति-रिवाज (fashion and customs) -** किसी देश में किसी समय-विशेष पर प्रचलित रीति-रिवाज तथा फैशन भी उपभोक्ता की प्रभुसत्ता को सीमित कर देते हैं। किसी वस्तु के फैशन में आ जाने पर, उपभोक्ता के ना चाहते हुए भी उसे उस वस्तु का प्रयोग करने के लिए बाध्य होना पड़ता है अन्यथा उसे पिछड़ा हुआ (backward) कहकर उसकी निन्दा की जाती है। उपभोक्ता की इस सामाजिक कमजोरी का फायदा, उत्पादक अपनी वस्तुओं के डिजाइन, रंग, रूप व आकार बदलकर, उठाने से कभी बाज नहीं आता ।
7. **विज्ञापन एवं प्रचार (Advertisement and Publicity) – प्रो. लुईस (Lewis)** का कहना है कि ***"पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यापार के आधुनिक तौर-तरीकों व विलक्षणताओं के अन्तर्गत उपभोक्ता की परम्परागत प्रभुसत्ता मात्र एक कहानी बन कर रह गयी है।"***इसका मुख्य कारण यह है कि आज के तकनीकी युग में 'प्रत्यक्ष उत्पादन' (Direct Production) का स्थान 'परोक्ष उत्पादन' (Indirect Production) ने ले लिया है। आधुनिक पूँजीवादी समाज में उपभोक्ता की माँग पहले नहीं होती बल्कि पहले वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है और तत्पश्चात् आकर्षक विज्ञापनों द्वारा वस्तु की माँग उत्पन्न कर दी जाती है।

प्रो. लुईस (Lewis) के अनुसार ***"प्रचार व विज्ञापन के वैज्ञानिक तरीकों, पैकिंग की नयी विधियों, डिजाइनों की भरमार और वस्तु-विभेद की रीति जैसे हथकण्डों ने उपभोक्ता को उत्पादक का दास बना दिया है। यदि उपभोक्ता आधुनिक व्यवसायी की विक्रय-विलक्षणता (Selling antics) से प्रभावित न हो, तो निश्चित है कि उपभोक्ता के व्यय करने का ढ़ांचा उससे सर्वथा अलग होता।"***

8. **प्रमापीकृत उत्पादन (Standardized production) -** पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं का उत्पादन मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर और प्रमापीकृत ढंग से किया जाता है जिससे वस्तुएँ सस्ती हो जाती है। फलस्वरूप उपभोक्ता उन सस्ती व प्रमापीकृत वस्तुओं को खरीदने के लिए बाध्य हो जाता है और इस प्रकार उसकी चुनाव की स्वतन्त्रता काफी हद तक सीमित हो जाती है। सच तो यह है कि उत्पादन को प्रमापीकृत प्रणाली में, उपभोक्ता मदारी के मजमे की भांति एकत्रित किये जाते हैं और एक समूह के रूप में समझे जाते हैं। यह समूह सम्राट की भाँति न होकर, भेड़ों के एक झुण्ड के रूप में होता है जिसका काम केवल अनुकरण करना है ।
9. **उपभोक्ताओं की अज्ञानता (Ignorance of consumer) -** प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का यह कहना था कि उपभोक्ता को बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है लेकिन वास्तविकता तो यह है कि उपभोक्ता को बाजार सम्बन्धी जानकारी बहुत कम होती है जिसके फलस्वरूप उसके लिए विवेकपूर्ण निर्णय लेना सम्भव नहीं हो पाता। इस प्रकार वस्तुओं और उनकी मूल्य-सम्बन्धी अनभिज्ञता, उसकी सार्वभौमिकता को सीमित कर देती है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि उपभोक्ता की सार्वभौमिकता एक कोरी कल्पना है जो वास्तविक आर्थिक जगत में कभी देखने में नहीं आती। **श्रीमति बारबरा वूटन** (Mrs. Barbara Wootten) के मतानुसार ***"उपभोक्ता की सार्वभौमिकता, अपने सही अर्थों में, आज तक कभी भी प्राप्त नहीं की जा सकी। यह तो केवल 'पाठ्य पुस्तकों" का एक सैद्धांतिक विषय है जिसका व्यवहार से कोई सम्बन्ध नहीं इसलिए यह सोचना कि एक सामान्य उपभोक्ता अपने इस अधिकार को प्राप्त कर रहा है या नहीं? इस बात पर आसू बहाने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती।"*** परन्तु इसके बावजूद इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अब उपभोक्ता एक निरंकुश शासक न होकर केवल वैधानिक सम्राट बनकर रह गया है जिसकी आज्ञा से राज्य का संचालन तो नहीं होता परन्तु फिर भी उसकी इच्छा का कुछ हद तक आदर अवश्य किया जाता है।

7.5 जीवन-स्तर (Standard of Living)

7.5.1 जीवन-स्तर का अर्थ एवं व्याख्या (Meaning and Explanation of Standard of Living)

मनुष्य की आवश्यताएँ अनंत होती हैं। अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए वह अनेक प्रकार की वस्तुओं का उपभोग करता है। वस्तुओं का उपभोग करते हुए धीरे-धीरे वह उन वस्तुओं के उपभोग का आदी हो जाता है। किसी समय इन वस्तुओं के उपलब्ध ना होने पर उसे बहुत कष्ट होता है। मनुष्य के जीवन-स्तर से आशय उसके उन्हीं वस्तुओं के उपभोग से है जिनकी उसे आदत पड़ गई है। संक्षेप में, ***"रहन-सहन के स्तर का आशय उन आवश्यकताओं से है जिनके उपभोग करने का कोई व्यक्ति आदी हो जाता है।"*** स्पष्ट है कि रहन-सहन का स्तर आदतों पर निर्भर होता है और उसे आसानी से नहीं बदला जा सकता।

जीवन-स्तर एक सापेक्ष तथा तुलनात्मक शब्द है और इस शब्द का प्रयोग दो वर्गों, दो अवधियों, दो व्यक्तियों तथा दो देशों के रहन-सहन के स्तर के तुलनात्मक अध्ययन के लिए ही किया जाता है। उदाहरण के लिए हम अमेरिका व भारत के निवासियों के जीवन-स्तर की तुलना करते हुए कहेंगे कि अमेरिका के निवासियों का जीवन-स्तर भारतवासियों के जीवन स्तर से ऊँचा है।

जीवन स्तर की परिभाषा- संक्षेप में हम जीवन-स्तर की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं- ***"जीवन-स्तर व्यक्ति-विशेष की वे आवश्यकतायें हैं जो उसकी आदत बन गई हैं।"***

7.5.2 जीवन-स्तर के रूप (Forms of Standard of Living)

1. **दरिद्र जीवन-स्तर (Poor standard of living) -** उन व्यक्तियों का जीवन-स्तर दरिद्र जीवन-स्तर कहलाता है जिन्हें पेट भर भोजन नहीं मिलता, जिनके पास रहने के लिए कोई निश्चित स्थान नहीं होता तथा जिनके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं होते।

2. **न्यूनतम जीवन-स्तर (Minimum standard of living) -** ऐसे व्यक्तियों का जीवन-स्तर न्यूनतम जीवन स्तर कहलाता है जो निरन्तर परिश्रम करने के बावजूद बड़ी मुश्किल से आवश्यक (जीवन रक्षक) आवश्यकताओं की ही सन्तुष्टि कर पाते हैं।
3. **मध्यम जीवन-स्तर (Moderate standard of living) -** ऐसे व्यक्तियों का जीवन-स्तर मध्यम जीवन-स्तर कहलाता है जो आवश्यकताओं के साथ-साथ कुछ-कुछ आरामदायक आवश्यकताओं की भी सन्तुष्टि करने में सफल हो जाते हैं।
4. **विलासी (उच्च) जीवन-स्तर (Luxurious (high) standard of living)** - इन लोगों को आधुनिक जीवन की सभी सुख-सुविधायें उपलब्ध रहती हैं।

7.5.3 जीवन-स्तर को निर्धारित करने वाले तत्व (Factors Affecting Standard of Living)

रहन-सहन का स्तर मुख्यतः दो बातों पर निर्भर करता है- (अ) व्यक्तिगत तत्व, (ब) परिस्थितियों से सम्बन्धित तत्व।

(अ) व्यक्तिगत तत्व (Individual elements)

किसी व्यक्ति के जीवन-स्तर को निर्धारित करने वाले प्रमुख व्यक्तिगत तत्व निम्नलिखित है-

1. **मनुष्य की आय (Income of Consumer) -** जिस मनुष्य की आय अधिक होगी, उस व्यक्ति के रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा होगा क्योंकि वह अधिकाधिक वस्तुओं का उपभोग कर सकेगा। इसके विपरीत, कम आय प्राप्त करने वाले व्यक्ति का जीवन-स्तर अपेक्षाकृत नीचा होगा।
2. **व्यय करने का ढंग (Method of expenditure) -** किसी व्यक्ति का जीवन-स्तर आय के साथ-साथ उसके व्यय करने के ढंग पर भी निर्भर करता है। दो व्यक्तियों की आय समान होने पर उस व्यक्ति का जीवन-स्तर ऊँचा होगा जो अधिक चतुराई से, सावधानी एवं विवेक से कार्य करता है।
3. **मनुष्य का स्वास्थ्य (Health of a person) -** एक स्वस्थ व्यक्ति का रहन-सहन का स्तर अस्वस्थ व्यक्ति की अपेक्षा ऊँचा होगा क्योंकि वह उतनी आय से अधिक अच्छी वस्तुओं का उपभोग कर सकता है।
4. **शिक्षा (Education) -** शिक्षित व्यक्ति अपनी आय को एक अशिक्षित व्यक्ति की तुलना में अधिक विवेक तथा बुद्धिमानी से व्यय करता है। अतः उसका जीवन-स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा होगा ।
5. **महत्वाकांक्षी (Ambitious) -** महत्वाकांक्षी व्यक्ति का जीवन-स्तर अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक ऊँचा होता है क्योंकि वह अपने आपको और अपने परिवार को अधिक सुखी बनाने के लिए अधिकाधिक धन कमाने का प्रयत्न करता है।

(ब) परिस्थितियों से सम्बन्धित तत्व (Circumtantial elements)

परिस्थितियों से सम्बन्धित रहन-सहन के स्तर को प्रभावित करने वाले तत्व इस प्रकार हैं-

1. **धन का वितरण (Distribution of Wealth) -** यदि किसी देश में आय और धन का वितरण असमान है तो वहाँ के निवासियों का रहन-सहन का स्तर नीचा होगा, क्योंकि देश की अधिकांश जनसंख्या अपनी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाएगी। इसके विपरीत दशा में लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा होगा।
2. **धार्मिक व सामाजिक प्रथाएं (Religious and Social practices) -** देश में विद्यमान धार्मिक व सामाजिक प्रथायें भी जीवन-स्तर को प्रभावित करती हैं। जिस देश के मनुष्यों को अपनी आय का

एक बहुत बड़ा भाग सामाजिक परम्पराओं को निभाने में व्यय करना पड़ता है, उस देश का जीवन-स्तर अपेक्षाकृत नीचा होता है, क्योंकि उनकी अधिकांश आवश्यकतायें सन्तुष्ट नहीं हो पातीं।

3. **देश में शान्ति व सुरक्षा (Peace and security in the country) -** यदि देश में अशान्ति, अव्यवस्था व असुरक्षा है तो उत्पादन का स्तर गिर जाएगा जिससे लोगों को उपभोग के लिए अधिक वस्तुएं उपलब्ध नहीं हो सकेंगी और उनका जीवन-स्तर गिर जाएगा।
4. **सामाजिक सुरक्षा (Social security) -** जिस देश में सामाजिक सुरक्षा सुविधाएँ उपलब्ध हैं, नागरिकों को पेंशन व जीवन बीमा सुविधायें प्राप्त हैं तो उस देश में लोग अपनी आय का एक बड़ा भाग बचाने के बजाय वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति पर ही व्यय करना पसन्द करेंगे और उनका जीवन-स्तर ऊँचा हो जाएगा।
5. **देश के प्राकृतिक साधन (Natural resources of the country) -** जिस देश में प्राकृतिक साधन (खनिज पदार्थ, जंगल, नदियाँ, पहाड़) पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं, वहाँ धनोत्पादन की माँग उतनी ही अधिक होती है जिसके कारण उस देश के निवासियों का जीवन- स्तर ऊँचा होता है।
6. **उत्पत्ति के साधनों का अधिकतम उपयोग (Maximum use of means of production) -** देश के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए केवल पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक साधनों का उपलब्ध होना ही काफी नहीं है अपितु यह भी आवश्यक है कि उनका उचित ढंग से उपयोग किया जाए।
7. **भौगोलिक तत्व (Geographical elements) -** देश की जलवायु, मिट्टी तथा प्राकृतिक सम्पदा का जीवन-स्तर पर काफी प्रभाव पड़ता है। उन देशों में जहाँ जलवायु गर्म है, वर्षा अधिक होती है या मिट्टी कम उपजाऊ होती है, लोगों का जीवन-स्तर अपेक्षाकृत नीचा होता है। इसके विपरीत, उन देशों में जहाँ जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक है तथा जहाँ मिट्टी अधिक उपजाऊ है, लोग अधिक कार्य करके अधिक उत्पादन कर सकते हैं। अतः उनका रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा होगा।

7.6 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. उपभोक्ता की उसकी आय के अनुसार कोई भी वस्तु खरीदने की शक्ति ही उसकी अल्प क्रय-शक्ति कहलाती हैं।

(सत्य / असत्य)

2. उपभोक्ता की उसकी आय के अनुसार कोई भी वस्तु खरीदने की शक्ति ही उसकी विक्रय पद्धति कहलाती हैं।

(सत्य / असत्य)

3. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का यह कहना था कि उपभोक्ता को बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है।

(सत्य / असत्य)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. उपभोक्ता की पुरे बाज़ार में उत्पादन होने वाली वस्तु पर ..... (नियंत्रण/ प्रावैगिक) रखने की शक्ति को ही उपभोक्ता की सार्वभौमिकता कहते हैं।
2. लोगो के रहन-सहन के ..... (तरीको/ विचारों) को जीवन स्तर कहा जाता हैं।

7.7 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ गए होंगे की मनुष्य को अपनी असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए वस्तुओं का उपभोग करना पड़ता है। उपभोग का सामान्य अर्थ मनुष्य की आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रत्यक्ष एवं अंतिम प्रयोग से है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति को जिन वस्तुओं की आदत पड़ जाती है वह व्यक्ति का जीवन स्तर कहलाता

है। जीवन स्तर के रूप चार प्रकार के है- दरिद्र, न्यूनतम, मध्यम तथा विलासी जीवन स्तर। जीवन स्तर मुख्यत: दो बातों पर निर्भर करता है- व्यक्तिगत तत्व एवं परिस्थितियों से सम्बन्धित तत्व। व्यक्तिगत तत्व के अंतर्गत मनुष्य की आय एवं व्यय करने का ढंग, उसका स्वास्थ्य, शिक्षा तथा महत्त्वकांक्षाएँ आती है जबकि परिस्थितियों से सम्बंधित तत्व के अंतर्गत धन का वितरण, धार्मिक एवं सामाजिक प्रथाएँ, देश में शांति व सुरक्षा की स्थिति, सामाजिक सुरक्षा, देश के प्राकृतिक संसाधन, भौगोलिक तत्व एवं उत्पत्ति के साधनों का अधिकतम उपयोग आता है। एक उपभोक्ता अपने विवेक के आधार पर वस्तुओं का चुनाव करने के स्वतंत्र होता है। चुनावों की स्वतंत्रता के आधार पर उत्पादन क्रियाओं को संचालित करने की इस शक्ति को ही उपभोक्ता की सार्वभौमिकता कहते है।

7.8 शब्दावली (Glossary)

- **जीवन-स्तर (Standard of Living) -** लोगो के रहन-सहन के तरीको को जीवन स्तर कहा जाता हैं।
- **एकाधिकार (Monopoly)** - बाज़ार का ऐसा प्रकार जहाँ केवल एक ही उत्पादक हो उसे एकाधिकार कहते हैं।
- **उपभोक्ता की सार्वभौमिकता (Consumer Sovereignty) -** उपभोक्ता की पुरे बाज़ार में उत्पादन होने वाली वस्तु पर नियंत्रण रखने की शक्ति को ही उपभोक्ता की सार्वभौमिकता कहते हैं। उपभोक्ता ही राजा कहलाता हैं क्योंकी वह जिस भी वस्तु की माँग करता हैं बाज़ार में वो ही वस्तु टिक पाती हैं।
- **क्रयशक्ति (purchasing power) -** उपभोक्ता की उसकी आय के अनुसार कोई भी वस्तु खरीदने की शक्ति ही उसकी क्रयशक्ति कहलाती हैं।

7.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1.नियंत्रण 2. तरीकों

7.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण***, शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

7.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.

- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics***, Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

7.12 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. उपभोग से आप क्या समझते हैं? अर्थशास्त्र में उपभोग के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. उपभोक्ता को सार्वभौमिकता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. जीवन स्तर से आप क्या समझते हैं? उन तत्वों की विवेचना कीजिए जो इसको प्रभावित करते हैं।

इकाई- 8 अर्थशास्त्र की संकल्पना: आवश्यकता एवं बाज़ार
(Concepts of Economics: Wants and Market)

8.1 प्रस्तावना (Introduction)
8.2 उद्देश्य (Objectives)
8.3 आवश्यकता (Wants)
8.3.1 आवश्यकता का अर्थ (Meaning of Wants)
8.3.2 आवश्यकता की विशेषताएँ (Characteristics of Wants)
8.3.3 आवश्यकताओं का वर्गीकरण (Classification of Wants)
8.3.4 आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors affecting classification of Wants)
8.4 बाज़ार (Market)
8.4.1 बाजार का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning and Definitions of Market)
8.4.2 बाजार की मुख्य विशेषताएं (Main Characteristics of Market)
8.4. 3 बाजार का वर्गीकरण (Classification of Market)
8.4. 4 बाजार के विस्तार को प्रभावित करने वाले तत्त्व (Factors Affecting Market Expansion)
8.5 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)
8.6 सारांश (Summary)
8.7 शब्दावली (Glossary)
8.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)
8.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)
8.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)
8.11 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

अर्थशास्त्र में दो ऐसी अवधारणा हैं जिनके बारे में हम हर दिन चर्चा करते हैं इसलिए इन दोनों अवधारणा को गहराई से समझना आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस इकाई के अंतर्गत आप अर्थशास्त्र की इन्ही दो मुख्य अवधारणाओं को विस्तार से पढेंगे - पहली आवश्यकता और दूसरी बाज़ार।

8.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- ✓ आवश्यकता का अर्थ क्या होता हैं यह जान सकेंगे।
- ✓ आवश्यकता की विशेषताओं के बारे में जानेंगे एवं इसके प्रकार से अवगत होंगे।
- ✓ आवश्यकता को प्रभावित करने वाले तत्वों को समझेंगे।
- ✓ बाज़ार की परिभाषा एवं इसके अर्थ को समझेंगे।
- ✓ बाज़ार की विशेषताओं के बारे में जानेंगे एवं इसके प्रकार से अवगत होंगे।
- ✓ बाज़ार के विस्तार को प्रभावित करने वाले तत्वों को भी समझेंगे।

8.3 आवश्यकता (Meaning of Wants)

8.3.1 आवश्यकता का अर्थ (Meaning of Wants)

साधारण बोलचाल की भाषा में इच्छा तथा आवश्यकता को एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है परन्तु अर्थशास्त्र में इच्छा तथा आवश्यकता में बहुत अन्तर है। किसी वस्तु के प्रति इच्छा होने को लालसा कहते हैं। वास्तव में वही इच्छा आवश्यकता कहला सकती है जिसमें निम्नलिखित तीन बातें पाई जाती हैं- किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा, पर्याप्त धन, तथा धन व्यय करने की तत्परता। यदि किसी इच्छा में इनमें से किसी एक बात का भी अभाव है तो वह इच्छा आवश्यकता नहीं कहला सकती। जैसे-एक कंजूस फ्रीज खरीदना चाहता है। फ्रीज खरीदने को उसके पर्याप्त धन है परन्तु धन को व्यय करने की भावना उसके अन्दर नहीं है। अतः उसकी यह इच्छा आवश्यकता नहीं कहला सकती।

प्रो. टॉमस के शब्दों में, ***"आवश्यकता उस प्रबल इच्छा को कहते है जिसको संतुष्ट करने के लिए मनुष्य के पास पर्याप्त 'साधन'हों तथा वह उन साधनों को व्यय करने को तत्पर हो।"***

प्रो. पैन्सन के शब्दों में, ***"आवश्यकता मनुष्य की प्रभावपूर्ण इच्छा है जिसको पूरा करने के लिए उस व्यक्ति के पास पर्याप्त धन हो तथा साथ ही साथ उस धन को वह व्यय करने के लिए तत्पर हो।"***

संक्षेप में, ***"वह मानवीय इच्छा जिसे सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य के पास पर्याप्त साधन हो और साधनों को व्यय करने की तत्परता हो, आवश्यकता कहलाती है।"***

अत: स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र में 'प्रभावपूर्ण इच्छा' को ही आवश्यकता कहा जाता है। ऐसी किसी भी इच्छा को प्रभावी नहीं कहा जा सकता या दूसरे शब्दों में यह आवश्यकता नहीं बन सकती क्योंकि यह किसी भी आर्थिक गतिविधि को जन्म नहीं देती।

8.3.2 आवश्यकता की विशेषताएँ (Characteristics of Wants)

1. **आवश्यकताएँ असीमित होती है। (Wants are unlimited) -** मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित व अनन्त होती हैं। एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी इस प्रकार आवश्यकताएँ उत्पन्न होती रहती है। आवश्यकताओं के इस लक्षण पर 'प्रगति का नियम' आधारित है ।
2. **आवश्यकता विशेष की पूर्ति की जा सकती है। (Special needs can be fulfilled) -** यद्यपि मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित होती है किन्तु किसी एक समय में एक आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है। आवश्यकताओं के इस लक्षण पर 'सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम' आधारित है।
3. **आवश्यकताएँ प्रतियोगी होती है। (Wants are Competitive) -** मनुष्य के पास साधन सीमित हैं। अत: विभिन्न आवश्यकताएँ सन्तुष्टि के लिए आपस में प्रतियोगिता करती हैं। मनुष्य उन

आवश्यकताओं की उनकी तीव्रता के अनुसार सन्तुष्टि करता है। आवश्यकताओं की इस विशेषता पर 'प्रतिस्थापन का नियम' आधारित है ।

4. **कुछ आवश्यकताएँ पूरक होती है। (Some Wants are Complementary)** - कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य आवश्यकताओं के साथ में की जाती है। उदाहरण के लिए- पैन व स्याही, मोटर व पेट्रोल आदि का प्रयोग साथ-साथ किया जाता है। आवश्यकताओं के इस लक्षण पर 'संयुक्त माँग का सिद्धान्त' आधारित है।
5. **भविष्य की अपेक्षा वर्तमान की आवश्यकताएँ अधिक तीव्र होती है। (The Wants of the present are more acute than those of the future)** - भविष्य अनिश्चित होता है। अत: वह भविष्य की आवश्यकताओं की अपेक्षा वर्तमान की आवश्यकताओं को पहले सन्तुष्ट करता है। इसी लक्षण पर 'ब्याज का समय पसन्दगी सिद्धान्त' आधारित है।
6 **कुछ आवश्यकताएँ वैकल्पिक होती है। (Some Wants are alternative)** - कुछ आवश्यकताओं को अनेक प्रकार से सन्तुष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए- खाना पकाने की आवश्यकता को लकड़ी द्वारा, कोयला द्वारा, बिजली द्वारा पूरा किया जाता है। आवश्यकताओं के इसी लक्षण पर 'मिश्रित पूर्ति या वैकल्पिक माँग' का विचार आधारित है।
7. **कुछ आवश्यकताएँ आदत में परिणत हो जाती है। (Some Wants turn into habits)** - एक वस्तु का निरन्तर प्रयोग करते रहने से मनुष्य उस वस्तु का प्रयोग करने का आदी हो जाता है। जैसे- आय, शराब पीना। आवश्यकताओं के इसी लक्षण पर 'मजदूरी का जीवन-स्तर सिद्धान्त' आधारित है ।
8. **आवश्यकताओं की तीव्रता में भिन्नता होती है। (Wants vary in intensity)** - मनुष्य की सभी आवश्यकताएँ एक समान तीव्र नहीं होती है। अत: वह अपनी आवश्यकताओं को तीव्रता के अनुसार सन्तुष्ट करता है। आवश्यकताओं के इस लक्षण पर ही आवश्यकताओं का वर्गीकरण किया गया है।
9. **कुछ आवश्यकताएँ बार-बार अनुभव होती हैं। (Some Wants are experienced repeatedly)** - कुछ आवश्यकताएँ पूर्ति के बाद पुन: उत्पन्न हो जाती हैं। उदाहरण के लिए दोपहर को भोजन के बाद शाम को पुन: भूख लग आती है।
10. **आवश्यकताएँ सामाजिक रीति-रिवाजों व फैशन से भी प्रभावित होती है। (Wants are also influenced by social customs and fashion)** - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिस समाज में वह रहता है, उसमे प्रचलित रीति-रिवाज फैशन का भी उस पर प्रभाव पड़ता है।
11. **आवश्यकताएँ ज्ञान में वृद्धि व वैज्ञानिक उन्नति से भी प्रभावित होती है। (Wants are also influenced by increase in knowledge and scientific advancement)** - शिक्षा तथा ज्ञान में वृद्धि से मनुष्य की आवश्यकताओं में भी वृद्धि हो जाती है। इसी प्रकार वैज्ञानिक उन्नति से भी आवश्यकताओं में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए- रेडियो, टेलीविजन, कार की आवश्यकताओं का उदय वैज्ञानिक प्रगति के कारण ही हुआ है।
12. **आवश्यकताएँ आविष्कारों को प्रोत्साहित करती है। (Wants spur inventions) -** वास्तव में आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। विविध आवश्यकताओं के कारण ही विविध प्रकार के आविष्कारों को प्रोत्साहन मिला है।

8.3.3 आवश्यकताओं का वर्गीकरण (Classification of Wants)

आवश्यकताओं को उनकी तीव्रता के आधार पर तीन वगों में विभाजित किया जाता है-

1 आवश्यक आवश्यकताएँ (Necessary Wants)

आवश्यक आवश्यकताएँ वे आवश्यकताएँ हैं जिनका संतुष्ट होना जीवित रहने, कार्यकुशलता बनाए रखने तथा सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए आवश्यक है। यदि ये आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं तो असीम कष्ट होता है। तीव्रता के दृष्टिकोण से इनके चार प्रकार हैं-

1. **जीवनरक्षक अनिवार्यता (Life saving essentials)** - ये वह आवश्यकताएँ है जिनका उपभोग जीवित रहने के लिए किया जाता है। जैसे- रोटी, कपड़ा और मकान। इनके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता।
2. **निपुणतारक्षक अथवा कार्यक्षमतारक्षक अनिवार्यता (Skill preserving or efficiency preserving essentials) -** इस प्रकार की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हमारी कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। निपुणतारक्षक वस्तुओं के ना मिलने पर मनुष्य की शारीरिक व मानसिक शक्तियों का विकास नहीं हो पाता। जैसे- घी, दूध, फल, स्वच्छ तथा हवादार मकान तथा अच्छे वस्त्र।
3. **प्रतिष्ठारक्षक अनिवार्यता (Reputational essentials) -** ऐसी वस्तुएँ जिनका उपयोग सामाजिक प्रथाओं तथा रीति-रिवाजों के कारण या समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के कारण किया जाता है उन्हें प्रतिष्ठारक्षक आवश्यकताएँ कहा जाता है। उदाहरण के लिए शादी के समय भोजन।
4. **कृत्रिम आवश्यकताएँ (Artificial wants) -** इस प्रकार की आवश्यकताओं की मनुष्य को बार-बार पूर्ति करने की आदत पड़ जाती है और फिर इनकी पूर्ति ना होने पर असीम कष्ट होता है जैसे- चाय, शराब, सिगरेट।

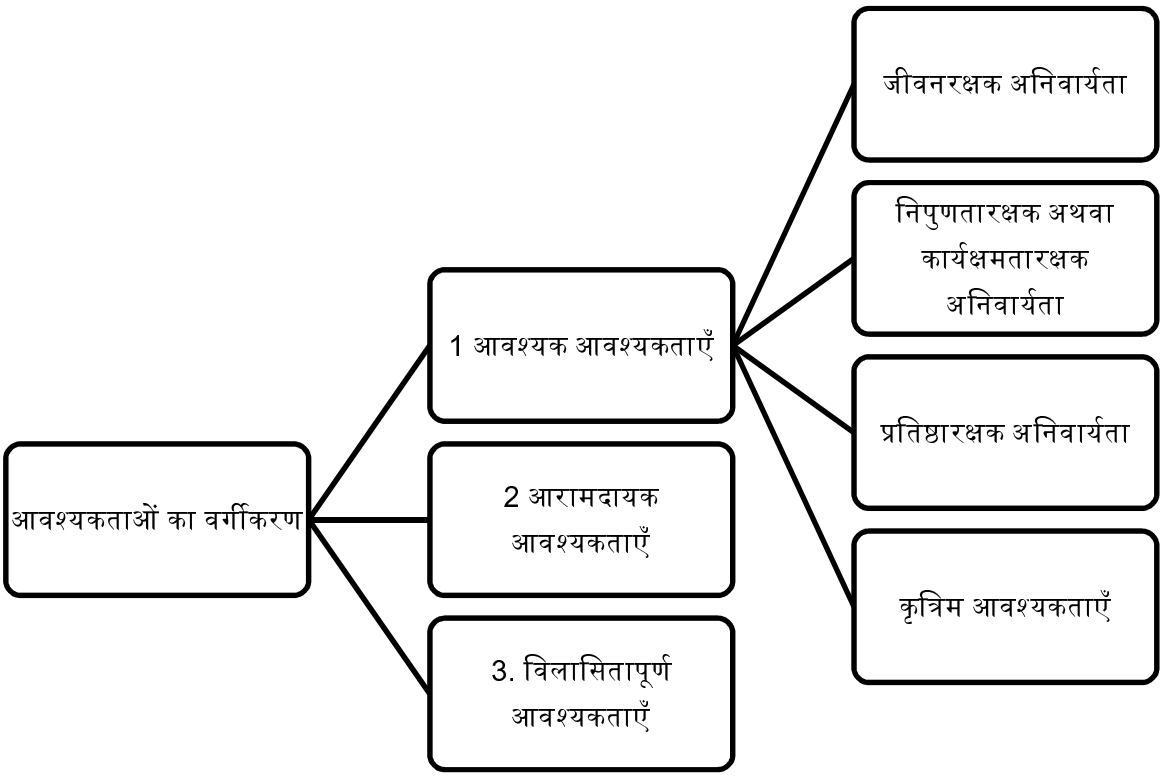

2 आरामदायक आवश्यकताएँ (Comfort wants)

इनके अंतर्गत वे वस्तुएँ तथा सेवाएँ आती हैं जिनका मनुष्य अपने आपको सुखी बनाने के लिए अनिवार्यताओं के अतिरिक्त उपभोग करता है। उदाहरण के लिए स्वादिष्ट भोजन, सुन्दर वस्त्र, सुन्दर मकान, स्वास्थ्यप्रद जलवायु। इन वस्तुओं के उपभोग से उपभोक्ता की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है और पर्याप्त आनन्द प्राप्त होता है। यदि इनकी सन्तुष्टि न हो तो अधिक कष्ट नहीं होता हैं।

3. विलासितापूर्ण आवश्यकताएँ (Luxury wants)

जिन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि से आनन्द और सुख में तो वृद्धि होती है परन्तु कार्यक्षमता में कोई वृद्धि नहीं होती ऐसी वस्तुओं को विलासिता की वस्तु कहते हैं। बड़े-बड़े महलों में रहना, अनेक मोटरकार रखना, बहुमूल्य हीरों का प्रयोग आदि विलासितापूर्ण आवश्यकताओं के उदाहरण हैं। ऐसे पदार्थों का उपयोग मनुष्य केवल शोक दिखाने के लिए करता है।

विलासपूर्ण वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं-

1. **हानिरहित विलास वस्तु (Harmless Luxury goods) -** इस श्रेणी में बढ़िया व तड़क-भड़क के वस्त्र, बड़े व सुन्दर महल, आकर्षक आभूषण आते हैं।
2. **हानिकारक विलास वस्तु (Harmful Luxury goods) -** इस श्रेणी में शराब, भोग तथा अन्य मादक वस्तुएँ आती हैं।

8.3.4 आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors affecting classification of Wants)

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन तत्त्वों को निम्न तीन भागों में बांटा जा सकता है-

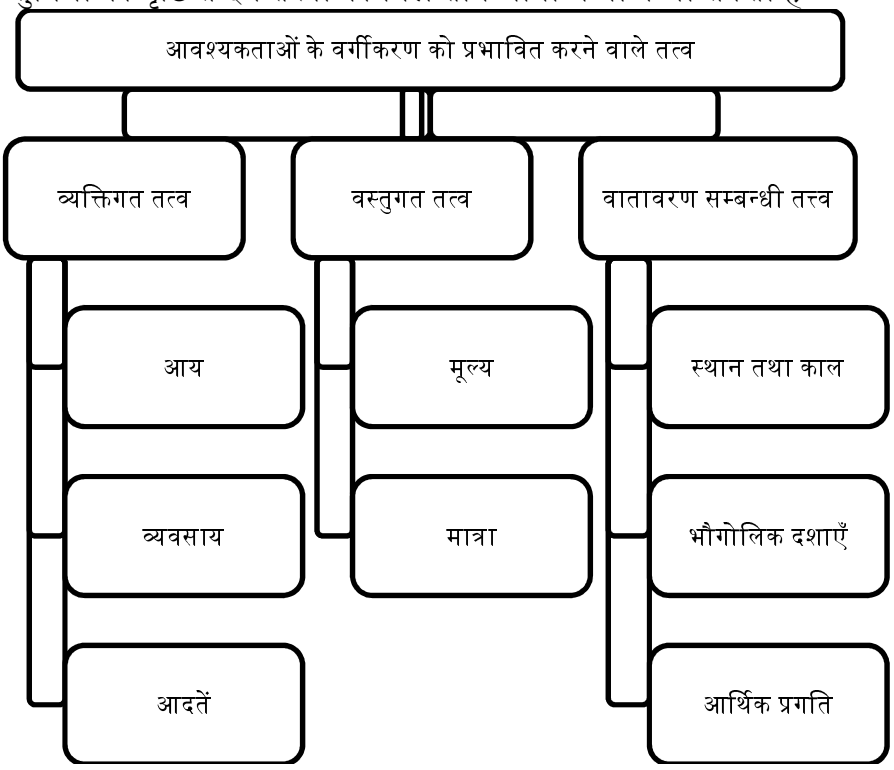

(क) व्यक्तिगत तत्व (Individual Factors)

व्यक्ति से सम्बन्धित निम्न तत्व आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करते हैं-

1. **व्यक्ति की आय (Income of a person) -** व्यक्ति विशेष की आय के अनुसार आवश्यकता का स्वरूप बदलता रहता है। उदाहरणार्थ एक धनी व्यक्ति के लिए कार आवश्यक वस्तु हो सकती है जबकि निर्धन के लिए विलासिता मानी जाएगी।
2. **व्यक्ति का व्यवसाय (Occupation of a person) -** व्यक्ति के व्यवसाय का भी आवश्यकताओं के वर्गीकरण पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ एक डाक्टर के लिए टेलीफोन या कार अनिवार्य है, प्रोफेसर के लिए आरामदायक वस्तु है और क्लर्क के लिए विलासिता मानी जाएगी।

3. **व्यक्ति की आदतें (Habit of a person) -** चाय की आदत रखने वाले व्यक्ति के लिए चाय एक अनिवार्यता है और चाय का प्रयोग न करने वालों के लिए यह आरामदायक या प्रायः विलासिता मानी जाएगी।

(ख) वस्तुगत तत्व (Objective Factors)

वस्तु से सम्बन्धित निम्न तत्त्व आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करते हैं-

1. **वस्तु-विशेष का मूल्य (Price of a Item) -** अत्यधिक ऊँचे मूल्य वाली वस्तुएँ विलासिताएँ समझी जाती हैं जबकि अधिक मूल्य वाली वस्तुएँ आरामदायक और सस्ती वस्तुएँ अनिवार्यताओं की श्रेणी में रखी जाती हैं।
2. **वस्तु की मात्रा (Quantity of a Item) -** एक डाक्टर के पास एक कार का होना यदि अनिवार्यता है तो एक से अधिक कारों का होना विलासिता माना जाएगा परन्तु एक बड़े उद्योगपति के पास कई कारों का होना भी, उसके लिए एक अनिवार्यता है ।

(ग) वातावरण सम्बन्धी तत्त्व (Environmental Factors)

उपरोक्त के अलावा समय, स्थान, भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक दशाएँ भी आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करती हैं-

1. **स्थान तथा काल (Place and Time) -** बम्बई जैसे महानगर में कार या टेलीफोन एक अनिवार्यता है जबकि एक छोटे शहर में आरामदायक तथा गाँव के लिए यह एक विलासिता है। इसी प्रकार कुछ वर्ष पूर्व तक रेडियो एक विलासिता की वस्तु समझी जाती थी परन्तु आज यह अनिवार्य आवश्यकता का रूप ले चुकी है।
2. **भौगोलिक दशाएँ (Geographical Conditions) -** एक ठण्डे प्रदेश में हीटर एक अनिवार्यता है परन्तु गर्म देश के लिए आरामदायक वस्तु मानी जाएगी।
3. **आर्थिक प्रगति (Economic Progress) -** किसी देश की आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ भी आवश्यकताओं के वर्गीकरण का स्वरूप बदलता रहता है। कनाडा जैसे समृद्ध राष्ट्र में टेलीवीजन, रेफ्रिजरेटर आदि वस्तुएँ अनिवार्यताओं के अन्तर्गत आती हैं जबकि भारत में यह वस्तुएँ आज भी विलासिताओं में सम्मिलित की जाती हैं।

8.4 बाज़ार (Market)

8.4.1 बाजार का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning and Definitions of Market)

साधारण बोलचाल में बाजार से अभिप्राय उस स्थान विशेष से होता है जहाँ पर क्रेता तथा विक्रेता किसी वस्तु का क्रय-विक्रय भौतिक रूप से उपस्थित होकर करते हैं परन्तु अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का आशय इससे भिन्न है।

कुर्नोट (Cournot) के अनुसार ***"अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी ऐसे स्थान विशेष से नहीं होता जहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है वरन् 'बाजार' शब्द से उस समस्त क्षेत्र का बोध होता है जिसमें बेचने वालों और खरीदने वालों में इस प्रकार का प्रतियोगितापूर्ण व स्वतन्त्र सम्बन्ध हो कि उस सारे क्षेत्र में किसी वस्तु के मूल्य की प्रवृत्ति सुगमता तथा शीघ्रता से एक होने की पाई जाए। (Economists understand by the term market, not any particular market place, in which things are bought and sold but the 'whole' or any 'region' in which buyers and sellers are in such free inter-course with one another that the price of the same goods tends to equality, easily and quickly.)"***

स्टोनियर तथा हेग (Stonier & Hague) के अनुसार ***"अर्थशास्त्री बाजार का अर्थ एक ऐसे संगठन से लेते हैं, जिसमें किसी वस्तु के क्रेता तथा विक्रेता एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में रहते हैं। (By a market economists mean any organisation whereby buyers and sellers of a good are kept in close touch with each other.)"***

केयर्नक्रास (Cairn Cross) के अनुसार, ***"बाजार का अर्थ क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच किसी साधन या वस्तु के लेन-देन का जाल सूत्र है। (The market in economics is simply the net work of dealings in any factor or product between buyers and sellers.)"***

प्रो. जे. के. मेहता (J. K. Mehta) के अनुसार ***"बाजार एक स्थिति को बताता है, जिसमें एक वस्तु की माँग ऐसे स्थान पर होती है जहाँ उसे विक्रय के लिए प्रस्तुत किया जाए। (The word market signifies a state in which a commodity has a demand at a place where it is offered for sale.)"***

सिजविक (Sidgwick) के अनुसार ***"बाजार व्यापारियों के समूह या समुदाय को कहते हैं जिनके बीच इस प्रकार के पारस्परिक वाणिज्यिक सम्बन्ध हों कि प्रत्येक व्यक्ति को सुगमता से इस बात का पूर्ण ज्ञान हो जाए कि दूसरे व्यक्ति समय-समय पर कुछ वस्तुओं व सेवाओं का विनिमय किन मूल्यों पर करते हैं। (A market is a body of persons in such commercial relation that each can easily acquaint himself with the rates at which certain kinds of exchange of goods or services are from time o time made by the others.)"***

8.4.2 बाजार की मुख्य विशेषताएं (Main Characteristics of Market)

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर बाजार की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1. **एक क्षेत्र (An Area) -** बाजार वह सम्पूर्ण क्षेत्र होता है जहाँ वस्तु के क्रेता व विक्रेता फैले होते हैं। इसके विपरीत क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच प्रत्यक्ष भौतिक सम्पर्क आवश्यक नहीं होता। किसी वस्तु का बाजार एक क्षेत्र, देश अथवा सम्पूर्ण संसार हो सकता है।
2. **क्रेताओं व विक्रताओं की उपस्थिति (Presence of Buyers and Sellers) -** किसी भी क्षेत्र को बाज़ार तभी कहा जा सकता है जब उस क्षेत्र में क्रेता और विक्रेता दोनों मौजूद हों। दोनों में से किसी एक की भी अनुपस्थिति में बाजार की कल्पना नहीं की जा सकती।
3. **एक वस्तु (One Commodity) -** अर्थशास्त्र में प्रत्येक वस्तु के लिए अलग बाजार होता है। जैसे कपड़े का बाजार, गेहूँ का बाजार। अतः जितनी वस्तुएं होती हैं अथवा वस्तु की जितनी किस्में होती हैं, उतने ही बाजार माने जाते है।
4. **स्वतन्त्र एवं पूर्ण प्रतियोगिता (Free and Perfect Competition) -** क्रेताओं और विक्रेताओं में परस्पर सौदा करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है।
5. **वस्तु का एक मूल्य (One Price of one Commodity) -** चूंकि बाजारों में क्रेता और विक्रेताओं में पूर्ण प्रतिस्पर्धा पायी जाती है। अतः समस्त क्षेत्र में एक वस्तु का एक ही मूल्य होता है।

8.4. 3 बाजार का वर्गीकरण (Classification of Market)

बाजार का वर्गीकरण पाँच दृष्टिकोणों के आधार पर किया जाता है- (अ) क्षेत्र (ब) समय (स) बिक्री (द) प्रतियोगिता तथा (य) वैधानिकता या कानून।

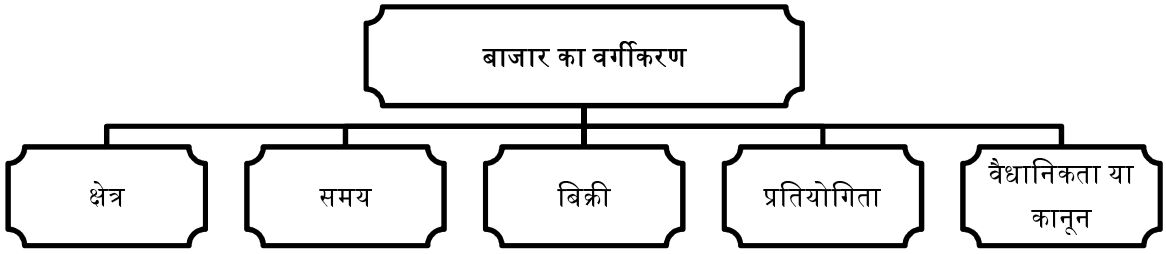

A. क्षेत्र को दृष्टि से (From Area Perspective)

क्षेत्र की दृष्टि से बाजार का वर्गीकरण चार प्रकार का से हो सकता हैं-

1. **स्थानीय बाजार (Local Market) -** जब किसी वस्तु का क्रय तथा विक्रय किसी एक क्षेत्र या स्थान विशेष तक ही सीमित बना रहता है और उस क्षेत्र से बाहर वह वस्तु नहीं भेजी जाती तब उसे वस्तु का स्थानीय बाजार कहते हैं। शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुएँ (जैसे दूध, दही, सब्जी आदि) तथा भारी वस्तुएँ जैसे ईंट, रेत, पीली मिट्टी का बाजार प्राय: स्थानीय हुआ करता है। आज के युग में यातायात के साधनों तथा वैज्ञानिक आविष्कारों के विकास के फलस्वरूप सभी वस्तुओं के बाजार विस्तृत होते जा रहे हैं। जिन वस्तुओं का बाजार पहले स्थानीय हुआ करता था वह अब राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार का रूप ले चुका है।
2. **प्रादेशिक बाजार (Provincial Market) -** जब किसी वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता पूरे प्रान्त में फैले होते हैं तो उसे वस्तु का प्रादेशिक बाजार कहते हैं। जैसे राजस्थानी पगड़ी या लाख की चूड़ियाँ केवल राजस्थान में ही चलती हैं।
3. **राष्ट्रीय बाजार (National Market) -** जब किसी वस्तु का क्रय-विक्रय सम्पूर्ण देश में होता है तब उसे वस्तु का राष्ट्रीय बाजार कहते हैं। जैसे टैरीकाट का कपड़ा, गेहूं, चावल, साबुन, डालडा घी, स्कूटर या कार आदि का बाजार राष्ट्रीय होता है।
4. **अन्तर्राष्ट्रीय बाजार (International Market) -** यदि किसी वस्तु को खरीदने व बेचने वाले सारे संसार में पाए जाते हैं अथवा जिस वस्तु की माँग विश्वव्यापी होती है उसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार कहते हैं। सोना, चांदी, ऊनी कपड़ा तथा गेहूँ आदि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की वस्तुएँ हैं।

B. समय की दृष्टि से (From Times Perspective)

समय की दृष्टि से बाजार का वर्गीकरण निम्न चार प्रकार का होता है-

1. **अति अल्पकालीन या दैनिक बाजार (Very Short Period Market) -** दैनिक बाजार उन वस्तुओं का होता है जिनकी पूर्ति माँग के अनुसार घटायी-बढ़ायी नहीं जा सकती अर्थात् जिनकी पूर्ति समय-विशेष में उनके स्टॉक तक ही सीमित रहती है। दूसरे शब्दों में, जब किसी वस्तु की माँग में वृद्धि या कमी होने पर उसकी पूर्ति में वृद्धि या कमी नहीं की जा सकती हो तो उसे दैनिक बाजार कहते हैं। दैनिक बाजार में समय इतना कम होता है कि वस्तु की पूर्ति उसकी माँग के अनुसार घटाई-बढ़ाई नहीं जा सकती। जैसे हरी सब्जी, मछली, दूध आदि दैनिक बाजार की वस्तुएँ हैं। ऐसी वस्तुओं के मूल्य निर्धारण पर पूर्ति की अपेक्षा माँग का अधिक प्रभाव पड़ता है। काल की दृष्टि से यह बाजार प्रायः एक दिन या बहुत थोड़े समय के लिए होता है।
2. **अल्पकालीन बाजार (Short Period Market) -** जब किसी वस्तु की माँग के बढ़ने पर उत्पादक को इतना समय मिल जाए कि उस वस्तु की पूर्ति को कुछ हद तक बढ़ाया जा सकता हो तो उसे अल्पकालीन बाजार कहते हैं। इस प्रकार के बाजार में पूर्ति को बढ़ाया तो जा सकता है परन्तु माँग के अनुसार पूर्ति नहीं बढ़ पाती क्योंकि पूर्ति को बढ़ाने के लिए समय पर्याप्त नहीं होता है। इस प्रकार के

बाजार में वस्तु के मूल्य निर्धारण पर पूर्ति की अपेक्षा माँग का ही अधिक प्रभाव पड़ता है परन्तु उतना अधिक नहीं जितना कि अति- अल्पकालीन बाजार में माँग का प्रभाव होता है। काल की दृष्टि से यह बाजार प्रायः कुछ महीनों अथवा एक साल के लिए माना जाता है।

3. **दीर्घकालीन बाजार (Long Period Market) -** यह बाजार की वह स्थिति है जिसमें वस्तु की पूर्ति को उसकी माँग के अनुसार घटाया या बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार के बाजार में उत्पादक को पूर्ति को बढ़ाने या घटाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है जिस कारण माँग और पूर्ति में आसानी से पूर्ण संतुलन स्थापित किया जा सकता है। यही कारण है कि दीर्घकालीन बाजार में वस्तु के मूल्य निर्धारण पर माँग की अपेक्षा पूर्ति का अधिक प्रभाव पड़ता है। इस बाजार में वस्तु का मूल्य सदैव उत्पादन लागत के बराबर होता है। काल की दृष्टि से यह बाजार कई वर्षों के लिए होता है।
4. **अतिदीर्घकालीन बाजार (Very Long Period Market) -** इस बाजार के अन्तर्गत उत्पादन की नयी तकनीकों के प्रयोग तथा नय उद्योगों की स्थापना करके वस्तु की पूर्ति को स्थायी रूप से माँग के बराबर करने की पूर्ण सम्भावना होती है। इस बाज़ार में समयावधि इतनी लंबी है कि उत्पादन के साधनों में आमूल-चूल परिवर्तन करना संभव है और माँग तथा पूर्ति दोनों में विस्तृत परिवर्तन होते रहते हैं और उनके समायोजन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। कुछ लोग इस प्रकार के बाजार को एक काल्पनिक बाजार स्थिति भी मानते हैं।

C. बिक्री की दृष्टि से (From Sales Perspective)

बिक्री की दृष्टि से बाजार चार भागों में विभाजित होता है-

1. **मिश्रित बाजार (Mixed Market) -** वह बाजार जिसमें सभी प्रकार की वस्तुएँ बेची या खरीदी जाती है मिश्रित बाजार कहलाता है। जैसे मेरठ का सदर बाजार, दिल्ली का कनाट प्लेस व चांदनी चौक, मिश्रित बाजार के उदाहरण कहे जा सकते हैं।
2. **विशिष्ट बाज़ार (Specific Market) -** जिस बाजार में केवल एक ही वस्तु का क्रय-विक्रय होता है उसे विशिष्ट बाजार का नाम दिया जाता है। जैसे सर्राफा, दाल मण्डी या अनाज मण्डी आदि। विशिष्ट बाजार प्रायः बड़े शहरों में ही पाए जाते हैं जबकि छोटे शहरों में मिश्रित बाजार ही देखने में आते हैं।
3. **नमूने द्वारा बिक्री का बाजार (Sample Market) -** जब किसी सामान को बेचने के लिए केवल वस्तु का एक नमूना दिखाया जाता है और खरीदार नमूना देखने के बाद ही सौदा तय करता है तो इसे 'नमूने द्वारा बिक्री का बाजार' कहा जाता है। अधिकांश वस्तुओं का थोक बाजारों में नमूने के आधार पर ही क्रय-विक्रय किया जाता है।
4. **ब्रांड या ट्रेडमार्क द्वारा बिक्री का बाज़ार (Market of sales by brand or trademark) -** कुछ वस्तुएं अपने रंग, रूप, आकार, किस्म या गुण के आधार पर प्रसिद्ध हो जाती हैं। जैसे गेहूं k-68 व पूसा संख्या 12, लक्स साबुन, उषा मशीन, ए-वन साइकिल इत्यादि। ऐसी वस्तुओं को खरीदना-बेचना आसान हो जाता है और उनके नमूने देखने या दिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। ग्रेड-बाजार और नमूना-बाजार में केवल यही अन्तर है कि पहले प्रकार के बाजार में नम्बर या ग्रेड के आधार पर क्रय-विक्रय होता है जबकि नमूने वाले बाजार में नमूने का दिखाना आवश्यक होता है।

D. वैधानिकता की दृष्टि से (From Legal Perspective)

वैधानिकता की दृष्टि से बाजार के वर्गीकरण के दो भेद हैं-

1. **वैध या उचित बाजार (Fair Market) -** वह बाज़ार जिसमें उपभोक्ताओं को सरकार द्वारा निर्धारित कीमतों पर सामान मिलता है, वैध या उचित बाज़ार कहलाता है। अक्सर देखा जाता है कि किसी विशेष वस्तु की आपूर्ति में कमी के कारण सरकार 'राशन' प्रणाली लागू करती है या 'सस्ते दाम की दुकानें' खोलती है या सामान का मूल्य खुद तय करती है ताकि उपभोक्ताओं को सही मूल्यों पर वस्तुएं

उपलब्ध होती रहें। व्यापारियों द्वारा लोगों का शोषण किए जाने के कारण ही प्राय: सरकार उचित बाजारों की व्यवस्था करती है।

2. **चोर बाजार (Black Market) -** इसे काला बाजार भी कहते हैं। जब विक्रेता अथवा व्यापारी सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर वस्तुओं को चोरी-छुपे बेचता है तो उसे चोर बाजार कहते हैं। चोर बाजार प्राय: उन्हीं वस्तुओं का होता है जिनकी माँग तो अधिक होती है परन्तु उनकी पूर्ति कम बनी रहती है।

8.4. 4बाजार के विस्तार को प्रभावित करने वाले तत्त्व (Factors Affecting Market Expansion)

प्राचीन समय में बाजारों का आकार बहुत छोटा हुआ करता था जबकि आजकल बाजारों का क्षेत्र व सीमाए दिन-प्रति बढ़ती जा रही हैं। बाजार का विस्तार मुख्य रूप से दो बातों पर निर्भर करता है- पहला वस्तु-विशेष के गुण तथा दूसरा देश की आन्तरिक दशायें।

(क) वस्तु-विशेष के गुण (Properties of a particular object)

किसी वस्तु-विशेष के बाजार का क्षेत्र बहुत कुछ सीमा तक उसके अपने स्वरूप अथवा गुणों पर निर्भर करता है। जिन वस्तुओं में निम्नलिखित गुण पाए जाते हैं उनका बाजार अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत होता है और जिन वस्तुओं में यह गुण नहीं पाए जाते उनका बाजार संकुचित बना रहता है। वस्तु के ये गुण इस प्रकार हैं-

1. **सर्वव्यापी माँग (Universal Demand)-** जिन वस्तुओं की माँग जितनी अधिक व्यापक एवं लगातार होती है उन वस्तुओं का बाजार उतना ही अधिक विस्तृत होता है। उदाहरण के तौर पर सोना, चांदी, गेहूं, चावल, कपड़ा आदि की माँग विश्व भर में की जाती है फलस्वरूप उनका बाजार भी अन्तर्राष्ट्रीय होता है। इसके विपरीत धोती-कुर्ता आदि की माँग सीमित होने के कारण इनका बाजार राष्ट्रीय होता है
2. **वहनीयता (Sustainability) -** जो वस्तुएं कम व्यय पर सरलतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाई और ले जाई जा सकती हैं उनका बाजार अधिक विस्तृत होता है परन्तु जिन वस्तुओं का भारी होने के कारण हस्तान्तरण करना सम्भव नहीं होता है अथवा जिनकी ढुलाई महँगी पड़ती है उनका बाजार प्राय: सीमित बना रहता है। उदाहरणार्थ सोने का बाजार अन्तर्राष्ट्रीय होता है तो लोहे का राष्ट्रीय और ईंट का बाजार स्थानीय हुआ करता है। अत: बाजार के लिए आवश्यक है कि वस्तु का भार व आकार उसके मूल्य के अनुपात में कम हो।
3. **वस्तु का टिकाऊपन (Durability of Good) -** टिकाऊ वस्तुओं का बाजार शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता है क्योंकि वस्तु जितनी अधिक टिकाऊ होती है उसको उतनी ही दूरी तक भेजा जा सकता है। यही कारण है कि हरी सब्जी माँस व फल आदि का बाजार तो सीमित बना रहता है जबकि जूट, कपास, सोना, चांदी व गेहूं का बाजार प्राय: काफी विस्तृत होता है।
4. **पूर्ति की मात्रा (Quantity of Supply) -** वस्तु-विशेष के बाजार का विस्तार उसकी पूर्ति की मात्रा पर भी निर्भर करता है। यदि वस्तु के उत्पादन का पैमाना छोटा है अर्थात वस्तु का उत्पादन चाहने पर भी अधिक नहीं हो पाता तो ऐसी दशा में बाजार का विस्तार कम रहेगा। जैसे हरी सब्जी व फल आदि। इसके विपरीत जिन वस्तुओं की पूर्ति उनकी माँग के अनुसार बढ़ायी घटायी जा सकती है अथवा जिनके उत्पादन का पैमाना बड़ा होता है। उन वस्तुओं का बाजार विस्तृत हुआ करता है जैसे कपड़ा, चावल, गेहूं इत्यादि।

5. **नमूने में बाँटने की सुविधा (Facility of Sampling) -** जिन वस्तुओं के ग्रेड बनाए जा सकते हैं अथवा जिनको नमूने के तौर पर ग्राहकों को दिखलाया जा सकता है। उनका बाजार प्राय: विस्तृत हुआ करता है। जैसे कपड़ा, चाय, चीनी, गेहूं इत्यादि। इसके विपरीत जो वस्तुएं बड़े आकार की होती है अथवा जो विभाज्य नहीं होतीं उनका बाजार अपेक्षाकृत सीमित रहता है क्योंकि ग्राहक उनको बिना देखे खरीदना नहीं चाहता और ऐसी वस्तुओं को प्रत्येक स्थान पर ले जाया नहीं जा सकता उदाहरणार्थ गाय, भैंस, कार, कोल्हू इत्यादि।

(ख) देश की आन्तरिक परिस्थितियाँ (Internal Conditions of the country)

वस्तुगत गुणों के अतिरिक्त बाजार का विस्तार देश में पाए जाने वाली आन्तरिक दशाओं पर भी निर्भर करता है। किसी वस्तु के बाजार को विस्तृत करने वाली ऐसी दशायें निम्नलिखित कही जा सकती हैं-

1. **यातायात व संचार के साधन (Means of Transport and Communication) -** यदि देश में यातायात के साधन जैसे रेल, सड़क आदि पूर्णत विकसित हैं तो वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना सुविधाजनक होता है जिससे वस्तुओं का बाजार विस्तृत हो जाता है। इसी प्रकार संचार के साधनों जैसे तार, टेलीफोन आदि के विकसित होने पर माल के सौदे आसानी से घर बैठे बैठाये हो जाते है और फलस्वरूप बाजार का क्षेत्र विस्तृत होने लगता है।
2. **शान्ति व सुरक्षा (Peace and Security) -** बाजार के विस्तार के लिए देश में शान्ति व सुरक्षा का होना भी अत्यावश्यक है। शान्तिमय वातावरण में व्यापार फलता फूलता है क्योंकि लोग निडर व निसंकोच होकर परस्पर सौदे करते हैं। इसी प्रकार देश में शासन, कानून व व्यवस्था के सुदृढ़ होने पर व्यापारियों को धोखा-धड़ी, लूट पाट या बेईमानी होने का कोई डर नहीं रहता और व्यापार व व्यवसाय को बढ़ावा मिलता है जिससे बाजारों का निरन्तर विस्तार होने लगता है।
3. **बैंकिंग व्यवस्था (Banking System) -** जिस देश में बैंकिंग प्रणाली जितनी अधिक विकसित होती है उस देश का व्यापार और बाजारों का स्वरूप उतना ही अधिक विकसित हुआ करता है। आज के युग में तो बिना बैंकों की सहायता के व्यापार करना सम्भव ही नहीं रहा क्योंकि व्यापार साख के सहारे होता है और साख का निर्माण बैंक किया करते हैं।
4. **मुद्रा मूल्य की स्थिरता (Stability of value of Currency) -** यदि देश की मुद्रा का मूल्य स्थिर रहता है अर्थात् अनावश्यक तेजी व मन्दी नहीं आती तो इससे व्यापार को काफी बढ़ावा मिलता है। यही कारण है कि उन्नत व्यापारिक दशाओं के लिए आर्थिक स्थिरता का होना आवश्यक समझा जाता है।
5. **सरकारी नीति (Government Policy) -** देश के व्यापार अथवा बाजारों के विस्तार पर सरकार की नीति का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि सरकार ने स्वतन्त्र व्यापार की नीति अपना रखी है और सरकारी नियन्त्रण कम हैं तो वस्तुओं का बाजार अत्यधिक विस्तृत होगा। इसके विपरीत यदि सरकारी शिकंजा सख्त है, कोटा, लाइसेन्स आदि के हजारों झंजट मौजूद हैं, इन्सपैक्टरों का निरीक्षण कड़ा है तो व्यापार को प्रोत्साहन नहीं मिल पाएगा और फलस्वरूप बाजार सीमित बने रहेंगे।
6. **व्यापार के वैज्ञानिक ढंग (Scientific methods of Business) -** आज के युग में व्यापार करना भी एक कला है। नए तथा वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने से व्यापार को बढ़ावा मिलता है। विशेष रूप से प्रचार एवं विज्ञापन की सहायता से वस्तुओं की माँग को बढ़ाया जा सकता है। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, प्रदर्शनियाँ, मेले आदि वे साधन हैं जो उपभोक्ताओं के मन पर वस्तु-विशेष की अमिट छाप छोड़ देते हैं और उपभोक्ता उन वस्तुओं को उपभोग करने लगता है। अत: यदि व्यापार वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है तो बाजार का आकार निश्चित रूप से विस्तृत होगा अन्यथा नहीं।

8.5 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. अर्थशास्त्र में इच्छा तथा आवश्यकता समान है।

(सत्य / असत्य)

2. अर्थशास्त्र में 'प्रभावपूर्ण इच्छा' को ही आवश्यकता कहा जाता है।

(सत्य / असत्य)

3. आवश्यकताओं को उनकी तीव्रता के आधार पर पाँच वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(सत्य / असत्य)

4. साधारण बोलचाल में बाजार से अभिप्राय उस स्थान विशेष से होता है जहाँ पर क्रेता तथा विक्रेता किसी वस्तु का क्रय-विक्रय भौतिक रूप से उपस्थित होकर करते हैं।

(सत्य / असत्य)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा, पर्याप्त धन, तथा धन ..... (व्यय/बचत) करने की तत्परता को आवश्यकता कहा जाता है ।
2. बाजार का वर्गीकरण ..... (सात/ पाँच) दृष्टिकोणों के आधार पर किया जाता है।

8.6 सारांश (Summary)

उपरोक्त इकाई में अर्थशास्त्र की दो महत्वपूर्ण अवधारणाओं को संक्षेप में समझाया गया हैं। आवश्यकता एवं बाज़ार अर्थशास्त्र की ऐसी दो महत्वपूर्ण अवधारणा हैं जो हमारे दैनिक जीवन से सम्बंधित है। इकाई में आपने सीखा कि एक इच्छा को आवश्यकता तभी कहा जा सकता है जब उसमें निम्न तीन चीजें पाई जाती हैं - किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा, पर्याप्त धन, तथा धन व्यय करने की तत्परता। आपने आवश्यकता की विशेषताओं के बारे में भी संक्षेप में पढ़ा और जाना की आवश्यकताएँ असीमित होती है, आवश्यकता विशेष की पूर्ति की जा सकती है, आवश्यकताएँ प्रतियोगी होती है, कुछ आवश्यकताएँ पूरक होती है एवं आवश्यकताओं की तीव्रता में भिन्नता होती है। इसके साथ ही आपने आवश्यकताओं के वर्गीकरण को भी समझा जोकि तीन प्रकार के होते हैं जैसे - आवश्यक आवश्यकताएँ, आरामदायक आवश्यकताएँ और प्रकार विलासितापूर्ण आवश्यकताएँ, इसके साथ ही आपने उन तत्वों को भी जाना जो इन तीनों वर्गीकरण को प्रभावित करते हैं।

बाज़ार का अर्थ उस स्थान विशेष से होता है जहाँ पर क्रेता तथा विक्रेता किसी वस्तु का क्रय-विक्रय भौतिक रूप से उपस्थित होकर करते हैं। इस इकाई में आपने बाज़ार के वर्गीकरण के बारे में भी जाना और बाज़ार के मुख्य पाँच वर्गीकरणों को एक-एक करके समझा जो इस प्रकार हैं- क्षेत्र की दृष्टि से बाज़ार का वर्गीकरण, समय की दृष्टि से बाज़ार का वर्गीकरण, बिक्री की दृष्टि से बाज़ार का वर्गीकरण, प्रतियोगिता की दृष्टि से बाज़ार का वर्गीकरण तथा वैधानिकता या कानून की दृष्टि से बाज़ार का वर्गीकरण। इसके साथ ही आपने यह भी जाना की बाज़ार के विस्तार को कौन से तत्त्व प्रभावित करते हैं और जाना की बाजार का विस्तार मुख्य रूप से दो बातों पर निर्भर करता है - पहला वस्तु-विशेष के गुण तथा दूसरा देश की आन्तरिक दशायें।

8.7 शब्दावली (Glossary)

- **लालसा (Craving) -** किसी वस्तु के प्रति इच्छा होने को लालसा कहते हैं।
- **आवश्यकता (Wants) -** वही इच्छा आवश्यकता कहला सकती है जिसमें निम्नलिखित तीन बातें पाई जाती हैं- किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा, पर्याप्त धन, तथा धन व्यय करने की तत्परता।
- **आवश्यक आवश्यकताएँ (Necessary Wants)** - वे आवश्यकताएँ जिनका संतुष्ट होना जीवित रहने, कार्यकुशलता बनाए रखने तथा सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए आवश्यक है। यदि ये आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं तो असीम कष्ट होता है। तीव्रता

- **आरामदायक आवश्यकताएँ (Comfort wants) -** इनके अंतर्गत वे वस्तुएँ तथा सेवाएँ आती हैं जिनका मनुष्य अपने आपको सुखी बनाने के लिए अनिवार्यताओं के अतिरिक्त उपभोग करता है।
- **विलासितापूर्ण आवश्यकताएँ (Luxury wants)** - जिन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि से आनन्द और सुख में तो वृद्धि होती है परन्तु कार्यक्षमता में कोई वृद्धि नहीं होती ऐसी वस्तुओं को विलासिता की वस्तु कहते हैं।
- **प्रतिष्ठारक्षक अनिवार्यता (Reputational Essentials) -** ऐसी वस्तुएँ जिनका उपयोग सामाजिक प्रथाओं तथा रीति-रिवाजों के कारण या समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के कारण किया जाता है।
- **हानिरहित विलास वस्तु (Harmless Luxury Goods) -** इस श्रेणी में बढ़िया व तड़क-भड़क के वस्त्र, बड़े व सुन्दर महल, आकर्षक आभूषण आते हैं।
- **हानिकारक विलास वस्तु (Harmful Luxury Goods) -** इस श्रेणी में शराब, भोग तथा अन्य मादक वस्तुएँ आती हैं।
- **पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) -** एक ऐसी बाज़ार की स्तिथि जहाँ बड़ी संख्या में क्रेता और विक्रता हो और एक जहाँ एक समान वस्तु ही बेचीं जाती हो।
- **प्रादेशिक बाजार (Provincial Market) -** जब किसी वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता पूरे प्रान्त में फैले होते हैं तो उसे वस्तु का प्रादेशिक बाजार कहते हैं
- **ट्रेडमार्क (Trademark) -** किसी कंपनी या उत्पाद का प्रतिनिधित्व करने के लिए कानूनी रूप से पंजीकृत या स्थापित कोई भी प्रतीक, शब्द या शब्द।

8.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer for Practice Questions)

निम्न कथनों में सत्य / असत्य चुनिए -

1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. व्यय 2. पाँच

8.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference/Bibliography)

- आहूजा, एच.एल. (2008) ***उच्चतर आर्थिक विश्लेषण***, एस चान्द एण्ड कम्पनी लिमिटिड, नई दिल्ली।
- मिश्रा, एस.के. और पुरी, वी.के. (2009) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त***, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- झिंगन, एम.एल. (2007) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, वृन्दा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, नई दिल्ली।
- लाल, एस. एन. (1999) ***व्यष्टिभावी आर्थिक विश्लेषण***, शिव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद।
- सिन्हा, वी. सी. (1999) ***व्यष्टि अर्थशास्त्र***, अध्ययन पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

8.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री (Useful/Helpful Text)

- Dwivedi, D.N. (2008) ***Micro Economics***, 7th edition, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.

- Mishra, S.K. and Puri V.K. (2003) ***Modern Micro-Economics Theory***, Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Sethi, T. T. (2006) ***Principles of Economics***, Lakshmi Narayan Agrawal, Agra.
- Samuelson, P.A. and W.O. Nordhaus (1998) ***Economics***, 16th Edition, Tata McGraw Hill, New Delhi.
- Stonier and Hague (2011) ***A Text Book of Economics***, Oxford Publications, New Delhi.

8.11 निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. आवश्यकता का अर्थ, विशेषताएँ और वर्गीकरण को लिखिए। साथ ही आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करने वाले तत्वों की विवेचना कीजिए।
2. बाजार का अर्थ, विशेषताएँ और वर्गीकरण को लिखिए। साथ ही बाजार के वर्गीकरण को प्रभावित करने वाले तत्वों की व्याख्या कीजिए।